

नमो नमो निम्नलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

४३

उत्तरज्ञायणं-चउत्त्थं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Aagam Online Series-43

४३

गंथाणुकक्मो

क्रमांक	अज्ञायणं	सुत्तं	गाहा	अणुकक्मो	पिंडको
१	विनयसुयं	-	०१-४८	०१-४८	३
२	परीसहविभृती	१	४९-९४	४९-९५	६
३	चाउरंगिज्जं	-	०९५-११४	०९६-११५	९
४	असंख्यं	-	११५-१२७	११६-१२८	१०
५	अकाममरणिज्जं	-	१२८-१५९	१२९-१६०	११
६	खुइडागनियंठिज्जं	-	१६०-१७७	१६१-१७८	१३
७	उरब्बिज्जं	-	१७८-२०७	१७९-२०८	१४
८	काविलीयं	-	२०८-२२७	२०९-२२८	१६
९	नमिपवज्जा	-	२२८-२८९	२२९-२९०	१७
१०	दुमपत्तयं	-	२९०-३२६	२९१-३२७	२१
११	बहुस्सुयपुज्जं	-	३२७-३५८	३२८-३५९	२३
१२	हरिएसिज्जं	-	३५९-४०५	३६०-४०६	२५
१३	चित्तसंभूज्जं	-	४०६-४४०	४०७-४४१	२८
१४	उसुयारिज्जं	-	४४१-४९३	४४२-४९४	३०
१५	सभिकखुयं	-	४९४-५०९	४९५-५१०	३३
१६	बंभचेरसमाहिठाणं	२-१२	५१०-५२६	५११-५३८	३४
१७	पावसमणिज्जं	-	५२७-५४७	५३१-५५९	३७
१८	संजइज्जं	-	५४८-६००	५६०-६१३	३९
१९	मियापुत्तिज्जं	-	६०१-६९८	६१४-७१२	४२
२०	महानियंठिज्जं	-	६९९-७५८	७१३-७७२	४८
२१	समुद्धपालीयं	-	७५९-७८२	७७३-७९६	५२
२२	रहनेमिज्जं	-	७८३-८३१	७९७-८४६	५२
२३	केसिगोयमिज्जं	-	८३२-९२०	८४७-९३५	५६
२४	पवयणमाया	-	९२१-९४७	९३६-९६२	६१

२५	जणाइज्जं	-	१४८-१९१	०९६३-१००६	६३
२६	सामायारी	-	०९९२-१०४३	१००७-१०५८	६६
२७	खलुंकिज्जं	-	१०४४-१०६०	१०५९-१०७५	६९
२८	मोक्खमर्गगर्ड	-	१०६१-१०९६	१०७६-१११११	७०
२९	सम्मतप्रकक्षमे	१३-८८	१०९७-	१११२-११८८	७२
३०	तवमर्गगर्ड	-	१०९८-११३४	११८९-१२२७	७८
३१	चरणविही	-	११३५-११७५	१२२६-१२४६	८१
३२	पमायद्वाणं	-	११७६-१२६६	१२४७-१३५७	८२
३३	कम्मपयडी	-	१२६७-१२९१	१३५८-१३८२	८९
३४	लेसजङ्गायणं	-	१२९२-१३५२	१३८३-१४४३	९०
३५	अणगारमर्गगर्ड	-	१३५३-१३७३	१४४४-१४६४	९४
३६	जीवाजीवविभृत्ती	-	१३७४-१६४०	१४६५-१७३१	९५

४३

उत्तरज्ञायणं-चउत्तरं

मूलसुत्तं

० पदमं अज्ञायणं-विनयसुयं ०

- [१] संजोगा विष्पमुक्कस्स , अनगारस्स भिक्खुणो |
विनयं पाउकरिस्सामि , आनुपुत्रिं सुणेह मे ॥
- [२] आणानिदेसकरे, गुरुणमुववायकारए |
इंगियागारसंपन्ने, से विनीए त्ति वुच्चई ॥
- [३] आणानिदेसकरे, गुरुणमनुववायकारए |
पडिनीए असंबुद्धे , अविनीए त्ति वुच्चई ॥
- [४] जहा सुणी पूङ्क णी, निक्कसिज्जई सव्वसो |
एवं दुस्सीलपडि नीए, मुहरी निक्कसिज्जई ॥
- [५] कणकुङ्गं चइत्ताणं , विडं भुंजइ सूयरो |
एवं सीलं चइत्ताणं , दुस्सीले रमई मिए ॥
- [६] सुणियाऽभावं साणस्स , सुयरस्स नरस्स य |
विनए ठवेज्ज अप्पाणं इ छंतो हियमप्पणो ॥
- [७] तम्हा वि नयमेसिज्जा, सीलं पडिलभेज्जओ |
बुद्धपुत्त नियाग ढ्वी, न निक्कसिज्जई कणहुई ॥
- [८] निसंते सिया अ मुहरी, बुद्धाणं अं तिए सया |
अड्जुत्ताणि सिक्खिज्जा , निरड्बाणि उ वज्जए ॥
- [९] अनुसासिओ न कुप्पिज्जा , खंतिं सेविज्ज पं डिए |
खुड्डेहिं सह संसगिं , हासं कीडं च वज्जए ॥
- [१०] मा य चं डालियं कासी , बहुयं मा य आलवे |
कालेणं य अहिजित्ता , तओ झाइज्ज एगओ ॥
- [११] आहच्च चं डालियं कुड्डु , न निण्ह इज्ज कयाइ वि |
कडं कडे त्ति भासेज्जा , अकडं नो कडे त्ति य ॥
- [१२] मा गलियस्सेव कसं , वयणमिच्छे पुणो पुणो |
कसं व दड्डुमाइणे , पावगं परिवज्जए ॥
- [१३] अनासवा थूलवया कुसीला , मितंपि चं डं पकरें ति सीसा |
चित्ताणुया हु दक्खोववेया , पसायए ते हु दुरासयंपि ॥

- [१४] नापुट्ठो वागरे किंचि , पुट्ठो वा नालियं वए |
कोहं असच्चं कुवेज्जा , धारेज्जा पियमप्पियं ||
- [१५] अप्पा चेव दमेयव्वो , अप्पा हु खलु दुद्मो |

अज्ञायणं-१

- अप्पा दं तो सुही होइ , अस्सिं लोए प रथ य ||
- [१६] वरं मे अप्पा दं तो, संजमेण तवेण य |
माऽहं परेहि दम्मंतो , बंधणेहिं वहेहि य ||
- [१७] पडिनीयं च बुद्धाणं , वाया अदुव कम्मुणा |
आवी वा जड्वा रहस्से , नेव कुज्जा कयाइवि ||
- [१८] न पक्खओ न पुरओ , नेव किच्चाण पिट्ठओ |
न जुंजे ऊरुणा ऊरु , सयणे नो पडिस्सुणे ||
- [१९] नेव पल्हत्थियं कुज्जा , पक्खपिंडं च संजाए |
पाए पसारिए वाऽवि , न चिड्हे गुरुणं तिए ||
- [२०] आयरिएहिं वाहित्तो , तुसिणीओ न कयाइ वि |
पसायड्ही नियाग ड्ही, उवचिड्हे गुरुं सया ||
- [२१] आलवंते लवं ते वा , न निसीएज्ज कयाइ वि |
चड्हऊणं आ सनं धीरो , जओ जुतं पडिस्सुणे ||
- [२२] आसनगओ न पुच्छेज्जा , नेव सेज्जागओ कयाइ वी |
आगम्मुक्कडुओ सं तो, पुच्छज्जा पंजलीउडो ||
- [२३] एवं वि नयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं |
पुच्छमाणस्स सीसस्स , वागरिज्ज जहासुयं ||
- [२४] मुसं परिहरे भिक्खू , न य ओहारिणि वए |
भासादोसं परिहरे , मायं च वज्जाए सया ||
- [२५] न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं , न निरदुं न मम्मयं |
अप्पणट्ठा परट्ठा वा , उभयस्संतरेण वा ||
- [२६] समरेसु अगारेसुं , गिहसंधीसु य महापहे सु |
एगो एगत्थिए सद्धिं , नेव चिड्हे न संलवे ||
- [२७] जं मे बुद्धाणुसासं ति, सीएण फरुसेण वा |
मम लाभो त्ति पेहाए , पयओ य तं पडिस्सुणे ||
- [२८] अनुसासनमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं |
हियं तं म न्नए पण्णो , वेसं होइ असाहुणो ||
- [२९] हियं विगयभया बुद्धा , फरुसंपि अ नुसासणं |
वेसं तं होइ मूढाणं , खंतिसोहिकरं पयं ||
- [३०] आसने उवचि डेज्जा, अणुच्चे अकुए थिरे |
अप्पुट्ठाई निरु ट्ठाई, निसीएज्जप्पकुकुए ||

- [३१] कालेण निक्खमे भिक्खू , कालेण य पडिक्कमे |
कालं च विवजिता , काले कालं समायरे ||
- [३२] परिवाडीए न चि डेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे |

अञ्जयण-१

- पडिरुवेण एसित्ता , मियं कालेण भक्खए ||
- [३३] नाइदूरमणासन्ने, नन्नेसिं चक्खुफासओ |
एगो चि डेज्ज भत्त ड्हा, लंघित्ता तं नइक्कमे ||
- [३४] नाइउच्चे व नीए वा , नासन्ने नाइदूरओ |
फासुयं परकडं पिं डं, पडिगाहेज्ज संजए ||
- [३५] अप्पपाणोप्पबीयंमि, पडिच्छन्नंमि संवुडे |
समयं संजए भुंजे , जयं अपरिसाडियं ||
- [३६] सुकडित्ति सुपक्कित्ति , सुच्छिन्ने सुहडे मडे |
सुनिड्हिए सुल छित्ति, सावजं वज्जए मु नी ||
- [३७] रमए पं डए सासं , हयं भद्रं व वाहए |
बालं सं मझ सासंतो , गलियस्सं व वाहए ||
- [३८] खड्हुया मे चवेडा मे , अक्कोसा य वहा य मे |
कल्लाणमनुसासंतो, पावदिड्हित्ति मन्नई ||
- [३९] पुत्तो मे भाय नाइ त्ति , साहू कल्लाण मन्नई |
पावदिट्ठिं उ अप्पाणं , सासं दासे त्ति मन्नई ||
- [४०] न कोवए आयरियं , अप्पाणंपि न कोवए |
बुद्धोवधाई न सिया , न सिया तोत्तगवेसए ||
- [४१] आयरियं कुवियं नच्चा , पत्तिएण पसायए |
विज्ञवेज्ज पंजलीउडो , वएज्ज न पु णोत्तिय ||
- [४२] धम्मजियं च ववहारं , बुद्धेहायरियं सया |
तमायरंतो ववहारं , गरहं नाभिगच्छई ||
- [४३] मनोगयं वक्कगयं , जाणित्तायरियस्स उ |
तं परिगिज्ज वायाए , कम्मुणा उववायए ||
- [४४] वित्ते अचोइए निच्चं , खिप्पं हवझ सुचोइए |
जहोवइटुं सुकयं , किच्चाइं कुव्वई सया ||
- [४५] नच्चा नमझ मेहावी , लोए कित्ती से जायए |
हवई किच्चाणं सरणं , भूयाणं जगई जहा ||
- [४६] पुज्जा जस्स पसीयं ति, संबुद्धा पुव्वसंथुया |
पसन्ना लाभइस्संति , वित्तलं अद्वियं सुयं ||
- [४७] स पुज्जस्तथे सुवि नीयसंसए, मनोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया |
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे, महज्जुई पंच वयाइं पालिया ||

[४८] स देवगंधव्वम् नुस्सपुइए, चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
 सिद्धे वा हवइ सासए देवे आ अप्परए महि इठिए ॥ त्ति
 बेमि

◦ पढमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

अजङ्गयण-२

◦ बीयं अजङ्गयणं - परीसहविभृत्ती ◦

[४९] सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायां। इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं
 भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया। जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए
 परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा। क्यरे खलु ते बावीसं परिसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं
 पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूयभिक्खायरियाए परिव्वयं तो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?

इमे खलु ते बावीसं परिसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया , जे भिक्खू
 सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ; तं जहा-दिगिंछा-
 परीसहे, पिवासापरीसहे, सीयपरीसहे, उसिणपरीसहे, दंसमसगपरीसहे, अचेलपरीसहे, अरइपरीसहे, इत्थी-
 परीसहे, चरियापरीसहे, निसीहियापरीसहे, सेज्जापरीसहे, अक्कोसपरीसहे, वहपरीसहे, जायणापरीसहे,
 अलाभपरीसहे, रोगपरीसहे, तणफासपरीसहे, जल्लपरीसहे, सक्कारपुरक्कारपरीसहे, पण्णापरीसहे, अन्नाण-
 परीसहे, दंसणपरीसहे ॥

- [५०] परीसहाणं पविभृत्ती , कासवेणं पवेइया |
 तं भे उदाहरिस्सामि , आनुपुच्चिं सुणेह मे ॥
- [५१] दिगिंछापरिगए देहे , तवस्सी भिक्खू थामवं |
 न छिंदे न छिंदावए न पए न पयावए ॥
- [५२] कालीपच्चंगसंकासे, किसे धम निसंतए |
 मायन्नो अस नपानस्स, अटीनमनसो चरे ॥
- [५३] तओ पुट्ठो पिवासाए , दोगुंच्छी ल छसंजए |
 सीओदगं न सेविज्जा , वियडस्सेसणं चरे ॥
- [५४] छिन्नावाएसु पंथेसु , आउरे सुपिवासिए |
 परिसुक्कमुहेऽदीने, तं तितिक्खे परीसहं ॥
- [५५] चरंतं विरयं लूहं , सीयं फुसइ एगया |
 नाइवेलं मु नी गच्छे , सोच्चाणं जि नसासनं ॥
- [५६] न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई |
 अ हं तु अग्निं सेवामि , इइ भिक्खू न चिंतए ॥
- [५७] उसिणं परियावेण , परिदाहेण तज्जिए |
 घिंसु वा परियावेण , सायं नो परिदेवए ॥
- [५८] उण्हाहितत्ते मेहावी , सिणाणं नो वि पत्थए |
 गायं नो परिसिंचेज्जा , न वीएज्जा य अप्पयं ॥
- [५९] पुट्ठो य दंसमसएहिं , समरे व महामु नी |

- नागो संगामसीसे वा , सूरो अभि भवे परं ॥
- [६०] न संतसे न वारेज्जा , मनं पि न पओसए |
उवेहे न हणे पाणे , भुंजंते मंससोणियं ॥
- [६१] परिजुण्णेहि वत्थेहि , होकखामि त्ति अचेलए |

अज्ञायण-२

- अदुवा सचे लए हो क्खं, इइ भिक्खू न चिंतए ॥
- [६२] एगयाऽचेलए होइ , सचेले यावि एगया |
एयं धम्महियं नच्चा , नाणी नो परिदेवए ॥
- [६३] गामाणुगामं रीयं तं, अनगारं अकिंच नं |
अरई अ नुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥
- [६४] अरइं पिडुओ किच्चा , विरए आयरकिखए |
धम्मारामे निरारं भै, उवसंते मु नी चरे ॥
- [६५] संगो एस मणूसाणं , जाओ लोगं मि इत्थिओ |
जस्स एया परिन्नाय , सुकडं तस्स सामण्णं ॥
- [६६] एवमादाय मेहावी , पंकभूया उ इत्थिओ |
नो ताहिं वि निहन्नेज्जा, चरेजज्तगवेसए ॥
- [६७] एग एव चरे लाढे , अभिभूय परीसहे |
गामे वा नगरे वाऽवि , निगमे वा रायहाणिए ॥
- [६८] असमाणे चरे भिक्खू , नेव कुज्जा परिगंगहं |
असंसत्ते गिहत्थेहि , अनिएओ परिव्वए ॥
- [६९] सुसाणे सुन्नगारे वा , रुक्खमूले य एगओ |
अकुक्कुओ निसीएज्जा , न य वित्तासए परं ॥
- [७०] तत्थ से चिडुमाणस्स , उवसग्गेऽभिधारए |
संकामीओ न गच्छेज्जा , उडित्ता अन्नमास नं ॥
- [७१] उच्चावयाहिं सेज्जाहिं , तवस्सी भिक्खू थामवं |
नाइवेलं विहन्निज्जा , पावदिड्डी विहन्नई ॥
- [७२] पइरिक्कुवस्सयं लद्दुं , कल्लाणं अ दुव पावयं |
किमेगराइं करिस्सइ ?, एवं तत्थऽहियासए ॥
- [७३] अक्कोसेज्जा परो भिक्खुं , न तेसिं पडिसंजले |
सरिसो होइ बालाण , तम्हा भिक्खू न संजले ॥
- [७४] सोच्चाणं फसुसा भासा , दारुणा गामकं टगा |
तुसिणीओ उवेहेज्जा , न ताओ म नसीकरे ॥
- [७५] हओ न संजले भिक्खू , मनंपि न पओसए |
तितिक्खं परमं नच्चा , भिक्खू धम्मं समायरे ॥
- [७६] समणं संजयं दंतं , हणिज्जा कोऽ वि कत्थ वि |

- नत्थि जीवस्स नासुति , एवं पेहेजज संजए ॥
- [७७] दुक्करं खलु भो ! निच्चं , अनगारस्स भिक्खुणो ।
सच्चं से जाइयं होइ , नत्थि किंचि अजाइयं ॥
- [७८] गोयरगपविडुस्स, हृथे नो सुप्पसारए ।

अजङ्गायण-२

- सेओ अगारवासुति , इइ भिक्खु न चिंतए ॥
- [७९] परेसु धासमेसेज्जा , भोयणे परि निट्टिए ।
लद्वे पिण्डे अलद्वे वा , नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥
- [८०] अज्जेवाहं न लब्धामि , अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे , अलाभो तं न तज्जए ॥
- [८१] नच्चा उप्पइयं दुक्खं , वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीनो ठावए पन्नं, पुढो तत्थहियासए ॥
- [८२] तेगिच्छं नाभिनंदेज्जा , संचिक्खऽत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं , जं न कुज्जा न कारवे ॥
- [८३] अचेलगस्स लूहस्स , संजयस्स तविस्सणो ।
तणेसु सुयमाणस्स , हुज्जा गायविराहणा ॥
- [८४] आयवस्स निवाएणं , अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवंति , तंतुं तणतज्जिया ॥
- [८५] किलिन्नगाए मेहावी , पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेणं , सायं नो परिदेवए ॥
- [८६] वेएज्ज निजजरापेही , आरियं धम्म ऽनुत्तरं ।
जाव सरीभेउत्ति , जल्लं काएण धारए ॥
- [८७] अभिवायणं अ ब्भुद्वाणं, सामी कुज्जा निमंतणं ।
जे ताइं पडिसेवं ति, न तेसिं पीहए मु नी ॥
- [८८] अणुक्कसाई अप्पिच्छे , अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु ना नुगिज्जोज्जा, नानुतप्पेज्ज पन्नवं ॥
- [८९] से नू नं मए पुव्वं , कम्माऽनाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि , पुढो केणइ कण्हुई ॥
- [९०] अह पच्छा उइज्जं ति, कम्माऽनाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं , नच्चा कम्मविवागयं ॥
- [९१] निरहुगंभि विरओ , मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं नाभिजाणामि , धम्मं कल्ला ण पावगं ॥
- [९२] तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ ।
एवं पि विहरओ मे , छउमं न निय दृई ॥
- [९३] नत्थि नू नं परे लोए, इड्ढी वाऽवी तवस्सिणो ।

- अदुवा वंचिओ मिति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥
- [१४] अभू जिणा अत्थि जिणा , अदुवाऽवि भविस्सई ।
- मुसं ते एवमाहंसु , इइ भिक्खू न चिंतए ॥
- [१५] एर परीसहा सव्वे , कासवेण पवेइया ।

अज्ञायण-२

जे भिक्खू न विहम्मेज्जा , पुढो केणइ कणहुई ॥ त्ति बेमि
० बीअं अज्ञायणं समत्तं ०

० तइयं अज्ञायणं-चाउरंगिज्जं ०

- [१६] चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणिह जं तुणो ।
- माणुसत्तं सुई सद्वा , संजमंमि य वीरीयं ॥
- [१७] समावन्नाण संसारे , नाणागोत्तासु जाइसु ।
- कम्मा ना नाविहा कडु , पुढो विस्संभया पया ॥
- [१८] एगया देवलोएसु , नरएसु वि एगया ।
- ए गया आसुरं कायं , अहाकम्मेहिं गच्छई ॥
- [१९] एगया खत्तिओ हो इ, तओ चं डालबुक्कसो ।
- तओ कीडपयंगो य , तओ कुं थुपिपीलिया ॥
- [१००] एवमावह्योणीसु, पाणिणो कम्मकिव्विसा ।
- न निविज्जं ति संसारे , सव्वहेसु व खत्तिया ॥
- [१०१] कम्मसंगेहिं सं मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
- अमाणुसासु जोणीसु , विनिहम्मंति पाणिणो ॥
- [१०२] कम्माणं तु पहाणाए , आनुपुव्वी कयाइ उ ।
- जीवा सोहिम नुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥
- [१०३] मानुस्सं विगहं लद्धुं , सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
- जं सोच्चा पडिवज्जं ति, तवं खत्तिमहिंसयं ॥
- [१०४] आहच्य सवणं लद्धुं , सद्वा परमदुल्लहा ।
- सोच्चा नेआउयं मग्गं , बहवे परिभस्सई ॥
- [१०५] सुईं च लद्धुं सद्वं च , वीरियं पुण दुल्लहं ।
- बहवे रोयमाणावि , नो य णं पडिवज्जए ॥
- [१०६] मानुसत्तंमि आयाओ , जो धम्मं सोच्चा सद्वहे ।
- तवस्सी वीरीयं लद्धुं , संवुडे निद्वुणे रयं ॥
- [१०७] सोही उज्जुयभूयस्स , धम्मो सुद्धस्स चिद्वई ।
- निव्वाणं परमं जाइ , घयसित्तिव्व पावए ॥
- [१०८] विगिंच कम्मुणो हेतुं , जसं संचिणु खंतिए ।
- सरीरं पाढवं हिच्चा , उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

- [१०९] विसालिसेहिं सीलेहिं , जक्खा उत्तरउत्तरा |
महासुक्का व दिप्पंता , मन्नंता अपुणोच्च यं ||
- [११०] अप्पिया देवकामाणं , कामरुव वित्तिविणो |
उड्ढं कप्पेसु चि दुंति, पुव्वा वाससया बहू ||

अजङ्गायण-३

- [१११] तत्थ ठिच्चा जहाठाणं , जक्खा आउक्खए चुया |
उवेंति मा नुसं जोणि , से दसंगेऽभिजायई ||
- [११२] खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च , पसवो दासपोरुसं |
चत्तारि कामखं धाणि, तत्थ से उववज्जई ||
- [११३] मित्तवं नायवं होइ , उच्चागोए य वण्णवं |
अप्पायंके महापन्ने , अभिजाए जसोबले ||
- [११४] भोच्चा माणुस्सए भोए , अप्पडिरुवे अहाउयं |
पुच्चिं विसुद्धसद्धम्मे , केवलं बोहि बुज्जिया ||
- [११५] चउरंगं दुल्लहं नच्चा , संजमं पडिवज्जिया |
तवसा धुयकम्मंसे , सिद्धे हवइ सासए || त्ति बेमि
० तइयं अजङ्गायणं सम्मतं ०

० चउत्थं अजङ्गायणं असंखयं ०

- [११६] असंखयं जीवियं मा पमायए , जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं |
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते , किणु विहिंसा अजया गहिंति ||
- [११७] जे पावकम्मेहिं घनं म नूस्सा, समाययंती अमङ्गं गहाय |
पहाय ते पासपयद्विए नरे , वेरानुबद्धा नरयं उवेंति ||
- [११८] तेणे जहा संधिमुहे गहीए , सकम्मुणा किच्चइ पावकारी |
ए वं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्खो अत्थि ||
- [११९] संसारमावन्न परस्स अड्वा , साहारणं जं च करेइ कम्मं |
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले , न बंधवा बंधवयं उवेंति ||
- [१२०] वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते , इमंमि लोए अदुवा परत्था |
दीवप्पणद्वे व अ नंतमोहे, नेयाउयं दद्वुमदद्वुमेव ||
- [१२१] सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी , नो वीससे पं डिए आसुपन्ने |
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं , भारंडपखीव चरेऽपमत्तो ||
- [१२२] चरे पयाइं परिसंकमाणो , जं किंचि पासं इह म न्नमाणो |
लाभंतरे जीवियं बूहइता , पच्छा परिन्नायमलावधंसी ||
- [१२३] छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं , आसे जहा सिक्खियवम्मधारी |
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो , तम्हा मुनी खिप्पमुवेइ मोक्खं ||
- [१२४] स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा , एसोवमा सासयवाइयाणं |

विसीयई सिद्धिले आउयम्मि , कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥

[१२५] खिप्पं न सक्केइ विवेगमेतं , तम्हा समुद्राय पहाय कामे |

समिच्च लोयं समया महेसी , आयाणरक्खी व चरेऽप्पमत्तो ॥

[१२६] मुहुं मुहुं मोहगुणे जयं तं, अनेगरुवा समणं चरं तं |

अजङ्गायण-४

फासा फुसंति असमंजसं च , न तेसिं भिक्खू म नसा पउस्से ॥

[१२७] मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा , तहप्पगारेसु म नं न कुज्जा |
रकिखज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥

[१२८] जे संखया तुच्छपरप्पवाई , ते पिज्जदोसा नुगया परज्जा |
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो , कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ त्ति
बेमि

◦ चउत्थं अजङ्गायणं सम्मतं ◦

◦ पंचमं अजङ्गायणं-अकाममरणिज्जं ◦

[१२९] अन्नवंसि महोधंसि , एगे तिण्णे दुरुत्तरे |
तत्थ एगे महापन्ने , इमं पण्हमुदाहरे ॥

[१३०] संतिमे य दुवे ठाणा , अक्खाया मारणं तिया |
अ काममरणं चेव , सकाममरणं तहा ॥

[१३१] बालाणं अकामं तु , मरणं असइं भवे |
पंडियाणं सकामं तु , उक्कोसेण सइं भवे ॥

[१३२] तत्थिमं पढ्मं ठाणं , महावीरेण देसियं |
कामगिद्धे जहा बाले , भिसं कूराइं कुव्वई ॥

[१३३] जे गिद्धे कामभोगेसु , एगे कूडाय गच्छई |
न मे दि ड्वे परे लोए , चक्खुदिड्वा इमा रई ॥

[१३४] हत्थागया इमे कामा , कालिया जे अ नागया |
को जाणइ परे लोए , अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥

[१३५] जनेन सद्धिं होक्खामि , इइ बाले पगब्भई |
कामभोगानुराएणं, केसं संपडिवज्जरई ॥

[१३६] तओ से दं डं समारभई , तसेसु थावरेसु य |
अट्टाए य अण ड्वाए, भूयगामं विहिंसई ॥

[१३७] हिंसे बाले मुसावाई , माइल्ले पिसुणे सढे |
भुंजमाणे सुरं मंसं , सेयमेयं ति मन्नई ॥

[१३८] कायसा वयसा मत्ते , वित्ते गिद्धे य इत्थिसु |
दुहओ मलं संचिणइ , सिसुनागु व्व मट्टियं ॥

[१३९] तओ पुट्ठो आयंकेणं , गिलाणो परितप्पई |

	पभीओ परलोगस्स ,	कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
[१४०]	सुया मे नरए ठाणा ,	असीलाणं च जा गई
	बालाणं कूरकम्माणं ,	पगाढा जत्थ वेयणा ॥

[१४१]	तत्थोववाइयं ठाणं ,	जहा मेयम नुस्सुयं
	अहाकम्मेहिं गच्छं तो,	सो पच्छा परितप्पई ॥

अञ्जश्चयणं-५

[१४२]	जहा सागडिओ जाणं ,	समं हिच्चा महापहं
	विसमं मग्गमोइण्णो ,	अकखे भगं मि सोयई ॥
[१४३]	एवं धम्मं वित्तकम्मं ,	अहम्मं पडिवज्जिया
	बाले मच्चुमुहं पत्ते ,	अकखे भग्गे व सोयई ॥
[१४४]	तओ से मरणं तंभि,	बाले संतसई भया
	अ काम मरणं मरई ,	धुत्ते व कलिणा जिए ॥
[१४५]	एयं अकाममरणं ,	बालाणं तु पवेइयं
	एत्तो सकाममरणं ,	पंडियाणं सुणोह मे ॥
[१४६]	मरणं पि सपुण्णाणं ,	जहा मेयम नुस्सुयं
	विष्पसण्णमनाघायं,	संजयाण वुसीमओ ॥
[१४७]	न इमं सव्वेसु भिक्खूसु	न इमं सव्वेसु गारिसु
	नानासीला गारत्था ,	विसमसीला य भिक्खुणो ॥
[१४८]	संति एगेहिं भिक्खूहिं	गारत्था संजमुत्तरा
	गारत्थेहि य सव्वेहिं	साहवो संजमुत्तरा ॥
[१४९]	चीराजिणं नगिणिणं ,	जडी संघाडि मुंडिणं
	एयाइं वि न तायं	ति, दुस्सीलं परियागयं ॥
[१५०]	पिंडोलए व्व दुस्सीले	नरगाओ न मुच्चई
	भिक्खाए वा गिहत्थे वा	सुव्वए कम्मई दिवं ॥
[१५१]	अगारिसामाइयंगाइं,	सढी काएण फासए
	पोसहं दुहओ पक्खं	एगरायं न हावए ॥
[१५२]	एवं सिक्खासमावन्ने	गिहिवासे वि सुव्वए
	मुच्चई छविपव्वाओ ,	गच्छे जक्खसलोगयं ॥
[१५३]	अह जे संवुडे भिक्खू	दोणहं अन्नयरे सिया
	सव्व दुक्खपहीणे वा	देवे वाऽवि महिडिए ॥
[१५४]	उत्तराइं विमोहाइं	जुईमंताणुपुव्वसो
	समाइण्णाइं जक्खेहिं	आवासाइं जसंसिणो ॥
[१५५]	दीहाउया इ इटिमंता,	समिद्धा कामरुविणो
	अ हुणोववन्नसंकासा,	भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥
[१५६]	ताणि ठाणाणि गच्छं	ति, सिक्खित्ता संजमं तवं

	भिक्खाए वा गिहित्थे वा	,	जे सं ति परिनिवृत्ता ॥
[१५७]	तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं	,	संजयाण वुसीमओ
	न संतसंति मरणंते	,	सीलवंता बहुस्सुया ॥
[१५८]	तुलिया विसेसमादाय	,	दयाधम्मस्स खं तिए
	विप्पसीएज्ज मेहावी	,	तहाभूण अप्पणा ॥

अज्ञायण-५

[१५९]	तओ काले अभिष्पेए	,	सद्धी तालिसमं तिए
	विणएज्ज लोमहरिसं	,	भेयं देहस्स कंखए ॥
[१६०]	अह कालं मि संपत्ते	,	आघायाय समुस्सयं
	सकाममरणं मरई	,	तिण्हमन्नयरं मु नी ॥ त्तिबेमि
	० पंचमं अज्ञायणं समत्तं ०		

◦ छडं अज्ञायणं - खुड़ागनियंठिज्जं ◦

[१६१]	जावंतविज्जा पुरिसा,	सव्वे ते दुक्खसंभवा	
	लुप्पंति बहुसो मूढा	,	संसारंमि अ नंतए ॥
[१६२]	समिक्ख पं डिए तम्हा	,	पास जाईपहे बहू
	अप्पणा सच्चमेसेज्जा	,	मेतिं भूएसु कप्पए ॥
[१६३]	माया पिया णहुसा भाया	,	भज्जा पुत्ता य ओरसा
	नालं ते मम ताणाए	,	लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥
[१६४]	एयमटुं सपेहाए	,	पासे समियदंसणे
	चिंध गेहिं सिणेहं च	,	न कंखे पुव्वसंथुयं ॥
[१६५]	गवासं मणिकुं डलं,	पसवो दासपोरुसं	
	सव्वमेयं चइत्ताणं	,	कामरूपी भविस्ससि ॥
[१६६]	थावरं जंगमं चेव	,	धाणं धन्नं उवक्खरं
	पच्चमाणस्स कम्मेहिं	,	नालं दुक्खाओ मोअणे ॥
[१६७]	अज्ञात्थं सव्वओ सव्वं	,	दिस्स पाणे पिया उए
	न हणे पाणिणो पाणे	,	भयवेराओ उवरए ॥
[१६८]	आयाणं नरयं दिस्स	,	नायएज्ज तणामवि
	दोगुंछी अप्पणो पाए	,	दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥
[१६९]	इहमेगे उ मन्नं ति,	अप्पच्चक्खाय पावगं	
	आयरियं विदित्ताणं	,	सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥
[१७०]	भणंता अकरं ता य बं	धमोक्खपइणिणो	
	वायाविरियमेत्तेण,	समासासेति अप्पयं ॥	
[१७१]	न चित्ता तायए भासा	,	कुओ विज्जा नुसासनं?
	विसन्ना पावकम्मेहिं	,	बाला पंडियमाणिणो ॥

- [१७२] जे केई सरीरे सत्ता , , वणे रुवे य सव्वसो |
मनसा कायवककेण , , सव्वे ते दुक्खसं भवा ||
- [१७३] आवन्ना दीहमद्वाण , , संसारंमि अ नंतए |
तम्हा सव्वदिसं पस्स , , अप्पमत्तो परिव्वए ||
- [१७४] बहिया उ इढमादाय, नावकंखे कयाइ वि |

अज्ञायण-६

- पुव्वकम्मक्खयद्वाए, इमं देहं उदाहरे ||
विविच्च कम्मुणो हेतं , , कालकंखी परिव्वए |
मायं पिंडस्स पाणस्स , , कडं लद्धूण भक्खए ||
- [१७६] सन्निहिं च न कुव्वेज्जा , , लेवमायाए संजए |
पक्खी पत्तं समादाय , , निरवेक्खो परिव्वए ||
- [१७७] एसणासमिओ लज्ज , , गामे अ नियओ चरे |
अप्पमत्तो पमत्तेहिं , , पिंडवायं गवेसए ||
- [१७८] एवं से उदाहु अ नुत्तरनाणी, अनुत्तरदंसी अणुत्तरनाण |
दंसणधरे अरहा नायपुत्ते , , भगवं वेसालिए वियाहिए || त्ति बेमि
• छडं अज्ञायणं सम्मतं •

० सत्तमं अज्ञायणं-उरभिज्जं ०

- [१७९] जहाऽसं समुद्दिस्स , , कोइ पोसेज्ज एलयं |
ओयणं जवसं देज्जा , , पोसेज्जावि सयं गणे ||
- [१८०] तओ से पुडे परिवूढे , , जायमेए मुहोदरे |
पीणिए वित्त्ले देहे , , आएसं परिकंखए ||
- [१८१] जाव न एइ आएसे , , ताव जीवइ सेऽदुही |
अह पत्तं मि आएसे , , सीसं छेत्तूण भुज्जई ||
- [१८२] जहा से खलु उरब्बे , , आएसाए समीहिए |
एवं बाले अहं मिडे, ईहति नरयात्यं ||
- [१८३] हिंसे बाले मुसावाई , , अद्वाणंमि विलोवए |
अन्नदत्तहरे तेणे , , माइ कं नु हरे सढे |
- [१८४] इत्थीविसयगिद्वे य , , महारंभपरिग्गहे |
भुंजमाणे सुरं मंसं , , परिवूढे परंदमे ||
- [१८५] अयकक्करभोइ य , , तुंडिल्ले चियलोहिए |
आउयं नरए कंखे , , जहाएसं व एलए ||
- [१८६] आसनं सय नं जाणं , , वित्तं कामे य भुंजिया |
दुस्साहडं धणं हिच्चा , , बहु संचिणिया रयं ||
- [१८७] तओ कम्मगुरु जंतू , , पच्चुप्पन्नपरायणे |
अएव्व आगयाऽसे , , मरणंतंमि सोयई ||

- [१८८] तओ आउपरिक्खीणे , चुया देहा विहिंसगा |
आसुरीयं दिसं बाला , गच्छति अवसा तमं ||
- [१८९] जहा कागिणिए हेतं , सहस्सं हारए नरो |
अपत्थं अं बगं भोच्चा , राया रज्जं तु हारए ||
- [१९०] एवं मा नुस्सगा कामा , देवकामाण अं तिए |

अञ्जश्चायणं-७

- सहस्सगुणिया भुज्जो , आउं कामा य दिव्विया ||
- [१९१] अनेग वासा नउया, जा सा पन्नवओ ठिई |
जाणि जीयं ति दुम्मेहा , ऊणे वाससयाउए ||
- [१९२] जहा य तिन्निवणिया , मूलं घेत्तूण निगगया |
एगो इथं लहई लाभं , एगो मूलेण आगओ ||
- [१९३] एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तथ वाणिओ |
ववहारे उव मा एसा , एवं धम्मे वियाणह ||
- [१९४] मानुसत्तं भवे मूलं , लाभो देवगई भवे |
मूलच्छेएण जीवाण , नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ||
- [१९५] दुहओ गई बालस्स , आवई वहमूलिया |
देवत्तं मा नुस्तं च , जं जिए लोलुयासढे ||
- [१९६] तओ जिए सइं होइ , दुविहिं दोगगई गए |
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा , अद्वाए सुचिरादवि ||
- [१९७] एवं जियं सपेहाए , तुलिया बानं च पं डियं |
मूलियं ते पव संति, मानुसं जोणिमि ति जे ||
- [१९८] वेमायाहिं सिक्खाहिं , जे नरा गिहिसुव्वया |
उवेंति मा नुसं जोणि , कम्मसच्चा हु पाणिणो ||
- [१९९] जेसिं तु वित्ता सिक्खा , मूलियं ते अइच्छिया |
सीलवंता सविसेसा , अद्वीणा जं ति देवयं ||
- [२००] एवमद्वीणवं भिक्खू , अगारिं च वियाणिया |
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं , जिच्चमाणे न संविदे ||
- [२०१] जहा कुसग्गे उदगं , समुद्देण समं मिणे |
एवं मा नुसग्गा कामा , देवकामाण अंतिए ||
- [२०२] कुसग्गमेत्ता इमे कामा , सन्निरुद्धमि आउए |
कस्स हेतं पुराकाउं , जोगक्खेमं न संविदे ? ||
- [२०३] इह कामा नियहृस्स, अत्तडे अवरजङ्गई |
सोच्चा नेयाउयं मग्गं , जं भुज्जो परिभस्सई ||
- [२०४] इह कामा नि यहृस्स, अत्तडे नावरजङ्गई |
पूङ्गेहनिरोहेण, भवे देवि तिति मे सुयं ||

- [२०५] इड्ढी जुई जसो वण्णो , आउं सुहम नुत्तरे |
भुज्जो जत्थ म नुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई ||
- [२०६] बालस्स पस्स बालत्तं , अहम्मं पडिवज्जिया |
चिच्चा धम्मं अहं मिट्टे, नरएसु उववज्जई ||
- [२०७] धीरस्स पस्स धीरत्तं , सच्चधम्मानुवत्तिणो |

अज्ञायण-७

- चिच्चा अधम्मं धम्मि डे, देवेसु उववज्जई ||
- [२०८] तुलियाण बालभावं , अबालं चेव पंडिए |
चइऊण बालभावं , अबालं सेवई मु नि || त्तिबेमि
० सत्तमं अज्ञायणं सम्मतं ०

० अद्भुत अज्ञायण - काविलीय ०

- [२०९] अधुवे असासयं मि, संसारंमि दुक्खपउराए |
किं नाम होज्ज तं कम्मयं ? जेणाहं दुग्गाइं न गच्छेज्जा ||
- [२१०] विजहित्तु पुव्वसंजोयं , न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा |
असिणेह सिणेहकरेहिं, दोसपओसेहिं मुच्चए भिक्खू ||
- [२११] तो नाणदंसणसमग्गो , हियनिस्सेसाय सव्वजीवाणं |
तेसि विमोक्खणद्वाए , भासई मु निवरो विगयमोहो ||
- [२१२] सव्वं गंथं कलहं च , विप्पजहे तहाविहं भिक्खू |
सव्वेसु कामजाएसु , पासमाणो न लिप्पई ताई ||
- [२१३] भोगामिसदोसविसन्ने, हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे |
बाले य मं दए मूढे , बज्जई मच्छिया व खेलं मि ||
- [२१४] दुप्परिच्चया इमे कामा , नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं |
अह सं ति सुव्वया साहू , जे तरं ति अतरं वणिया वा ||
- [२१५] समणा मु एगे वयमाणा , पाणवहं मिया अयाणं ता |
मंदा निरयं गच्छं ति, बाला पावियाहिं दिड्डीहिं ||
- [२१६] न हु पाणवहं अणुजाणे , मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं |
एवं आयरिएहिं अक्खायं , जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ||
- [२१७] पाणे य नाइवाएज्जा , से समीइ त्ति वुच्चई ताई |
तओ से पावयं कम्मं , निजजाइ उदगं व थलाओ ||
- [२१८] जगनिस्सिएहिं भूएहिं , तसनामेहिं थावरेहिं च
नो तेसिमारभे दंडं , मनसा वयसा कायसा चेव ||
- [२१९] सुद्धेसणाओ नच्चाणं , तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं |
जायाए घासमेसेज्जा , रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ||
- [२२०] पंताणि चेव सेवेज्जा , सीयपिंडं पुराणकुम्मासं |

अदु बुक्कसं पुलां वा , जवणद्वाए निसेवए मंथुं ॥
[२२१] जे लक्खणं च सुविणं च , अंगविजं च जे पउंजंति ।
न हु ते समणा वुच्चंति , एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥
[२२२] इह जीवियं अ नियमेत्ता, पब्भद्वा समाहिजोएहिं ।
ते कामभोगरसगिद्धा , उववज्जंति आसुरे काए ॥

अज्ञायण-८

[२२३] तत्तो वि य उव्वित्ता , संसारं बहु अ नुपरियटंति ।
बहुकम्मलेवलित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसि ॥
[२२४] कसिणंपि जो इमं लोयं , पडिपुण्णं दलेज्ज इ कक्स्स ।
तेणावि से न संतुस्से , इइ दुप्पूरए इमे आया ॥
[२२५] जहा लाहो तहा लोहो , लाहा लोहो पव डढँई ।
दोमासकयं कजं , कोडीए वि न नि द्वियं ॥
[२२६] नो रक्खसीसु गिजङ्गेज्जा , गंडवच्छासु अनेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता , खेलंति जहा व दासेहिं ॥
[२२७] नारीसु नोवगिजङ्गेज्जा , इत्थी विप्पजहे अ नगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा , तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥
[२२८] इअ एस धम्मे अक्खाए , कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिंति जे उ काहिं ति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥ त्ति बैमि
◦ अहुमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ नवमं अज्ञायणं - नमिपव्वज्जा ◦

[२२९] चइक्कुण देवलोगाओ , उववन्नो माणुसं मि लोगं मि ।
उवसंत मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जा इं ॥
[२३०] जाइं सरित्तु भयवं , सयंसंबुद्धो अ नुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे , अभिनिक्खमई नमी राया ॥
[२३१] से देवलोगसरिसे , अंतेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया , बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥
[२३२] मिहिलं सपुरज नवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खं तो, एगंतमहिङ्गिओ भयवं ॥
[२३३] कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयं तंमि ।
तइया रायरिसि मि, नमिंमि अभि निक्खमंतंमि ॥
[२३४] अब्भुड्डियं रायरिसि , पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरुवेण , इमं वयणमब्बवी ॥
[२३५] किं नु भो ! अज्ज मिहिलाए , कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वंति दारुणा सद्धा , पासाएसु गिहेसु य ? ॥

- [२३६] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ॥
- [२३७] मिहिलाए चेइए वच्छे , सीयच्छाए म नोरमे |
पत्तपुफफलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥
- [२३८] वाएण हीरमाणं मि, चेइयंमि म नोरमे |

अज्ञायण-९

- दुहिया असरणा अत्ता , एए कं दंति भो ! खगा ॥
- [२४१] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ॥
- [२४०] एस अग्गी य वाऊ य , एयं डजङ्गाइ मं दिरं |
भयवं अं तेउरं तेणं , कीस णं नावपेकखह ॥
- [२४१] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमि रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ॥
- [२४२] सुहं वसामो जीवामो , जेसिं मो नत्थि किंचणं |
मिहिलाए डजङ्गमाणीए , न मे डजङ्गाइ किंचणं ॥
- [२४३] चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो |
पियं न विज्जई किंचि , अप्पियं पि न विज्जई ॥
- [२४४] बहुं खु मुणिणो भद्वं अनगारस्स भिक्खुणो |
सव्वओ विष्पमुक्कस्स एगंतमनुपस्सओ ॥
- [२४५] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ॥
- [२४६] पागारं कारइत्ताणं गोपुरद्वालगाणि य |
उस्सूलए सयग्धीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥
- [२४७] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ॥
- [२४८] सद्वं नगरं किच्चा तवसंवरमग्गलं |
खंति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥
- [२४९] धनुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया |
धिइं च केयणं किच्चाण सच्चेण पलिमं थए ॥
- [२५०] तवनारायजुत्तेण, भित्तूण कम्मकंचुयं |
मुनी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
- [२५१] एयमदुं निसामित्ता , हैऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविन्दो इणमब्बवी ॥
- [२५२] पासाए कारइत्ताणं वड्ढमाणगिहाणि य |
वालगगपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥

- [२५३] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२५४] संसयं खलु सो कुणई , जो मग्गे कुणई घरं |
जतथेव गं तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ||
- [२५५] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |

अञ्जश्यायण-९

- तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||
- [२५६] आमोसे लोमहारे य , गंठिभेए य तक्करे |
नगरस्स खेमं काऊण , तओ गच्छसि खत्तिया ||
- [२५७] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२५८] असइं तु म नुस्सेहि, मिच्छा दंडो प उंजई |
अकारिणोऽत्थ बज्जं ति, मुच्चई कारओ ज नो ||
- [२५९] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||
- [२६०] जे केई पत्थिवा तुज्जं , नानमंति नराहिवा ! |
वसे ते ठावइत्ताण , तओ गच्छसि खत्तिया ||
- [२६१] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२६२] जो सहस्सं सहस्साण , संगामे दुज्जए जिए |
एं जिणेज्ज अप्पाण , एस से परमो जओ ||
- [२६३] अप्पणामेव जुज्जाहि , किं ते जुज्जेण बज्जाओ ? |
अप्पणामेवमप्पाण, जइत्ता सुहमेह ति ||
- [२६४] पंचिंदियाणि कोहं , मानं मायं तहेव लोहं च |
दुज्जयं चेव अप्पाण , सवं अप्पे जिए जियं ||
- [२६५] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||
- [२६६] जइत्ता वित्ते जन्ने , भोइत्ता समणमाहणे |
दच्चा भोच्चा य ज च्चा य , तओ गच्छसि खत्तिया ||
- [२६७] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२६८] जो सहस्सं सहस्साण , मासे मासे गवं दए |
तस्स वि संजमो सेओ , अदिंतस्स वि किंचण ||
- [२६९] एयमदुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||

- [२७०] घोरासमं चइत्ताणं , अन्नं पत्थेसि आसमं |
इहेव पोसहरओ , भवाहि मणुयाहिवा ||
- [२७१] एयमटुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२७२] मासे मासे तु जो बालो , कुसगगेण तु भुंजए |

अञ्जश्चायण-९

- न सो सुयकखायथम्मस्स , कालं अग्धइ सोलसिं ||
- [२७३] एयमटुं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||
- [२७४] हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं , कंसं दूसं च वाह नं |
कोसं च वड्ढाइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ||
- [२७५] एयमटुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२७६] सुवण्णरूप्पस्स उ पत्वया भवे |
सिया हु केलासमा असंखया |
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि |
इच्छा हु आगाससमा अनंतया ||
- [२७७] पुढ्वी साली जवा चेव , हिरण्णं पसुभिस्सह |
पडिपुण्णं नालमेगस्स , इइ विज्जा तवं चरे ||
- [२७८] एयमटुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमिं रायरिसिं , देविंदो इणमब्बवी ||
- [२७९] अच्छेरगमब्बुदए, भोए चयसि पत्थिवा ! |
असंते कामे पत्थेसि , संकप्पेण विहं मसि ||
- [२८०] एयमटुं निसामित्ता , हेऊकारणचोइओ |
तओ नमी रायरिसी , देविंदं इणमब्बवी ||
- [२८१] सल्लं कामा विसं कामा , कामा आसीविसोवमा |
कामे भोए पत्थेमाणा , अकामा जं ति दोग्गई ||
- [२८२] अहे वयं ति कोहेण , माणेण अहमा गई |
माया गई पडिग्धाओ , लोभाओ दुहओ भयं ||
- [२८३] अवउज्जिञ्जुण माहणरूवं , विउव्विञ्जुण इं दत्तं |
वंदइ अभित्थुणं तो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ||
- [२८४] अहो ते निजिजओ कोहो , अहो मा नो पराजिओ |
अहो निरक्किया माया , अहो लोभो वसीकओ ||
- [२८५] अहो ते अज्जवं साहु , अहो ते साहु मद्वं |
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ||

- [२८६] इहं सि उत्तमो भं ते! पच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं , सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥
- [२८७] एवं अभित्थुणं तो, रायरिसि उत्तमाए सद्वाए ।
पयाहिणं क रेतो, पुणो पुणो वं दई सक्को ॥
- [२८८] तो वं दिक्षण पाए , चक्कंकुसलक्खणे मु निवरस्स ।

अज्ञायण-९

- आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुडलतिरीडी ॥
- [२८९] नमी नमेइ अप्पाणं , सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊणं गेहं च व इदेही, सामणे पज्जुवट्टिओ ॥
- [२९०] एवं करें ति संबुद्धा , पंडिया पवियक्खणा ।
विणियद्वंति भोगेसु , जहा से नमी रायरिसी ॥ त्ति बेमि
◦ नवमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ दसमं अज्ञायणं - दुमपत्तयं ◦

- [२९१] दुमपत्तए पंडुयए जहा , निवड़ राइगणाण अ च्छए ।
एवं मणुयाण जीवियं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९२] कुसग्गे जह ओसबिं दुए, थोवं चि डुइ लं बमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९३] इइ इत्तरियं मि आउए , जीवियए बहुपच्चवायए ।
विहुणाहि रयं पुरे कडं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९४] दुल्लहे खलु माणुसे भवे , चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९५] पुढविकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९६] आउकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९७] तेउकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९८] वाउकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [२९९] वणस्सइकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमनंतदुरंतयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३००] बेइंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसं नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०१] तेइंदिकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखिज्जसं नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

[३०२] चउरिंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखिज्जसं नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

[३०३] पंचिंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

सत्तद्वभवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

अज्ञायण-१०

- [३०४] देवे नेरइए अइगओ , उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्केक्कभवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०५] एवं भवसंसारे , संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०६] लद्धूणऽवि मा नुस्त्तणं, आरिअत्तं पु नरवि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलक्खुया , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०७] लद्धूणऽवि आरियत्तणं , अहीणपंचेदियया हु दुल्लहा ।
विगिलिंदियया हु दीसई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०८] अहीणपंचेदियत्तं पि से लहे , उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए ज ने, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३०९] लद्धूण वि उत्तमं सुइं , सद्धणा पु नरवि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए ज ने, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१०] धम्मं पि हु सद्धं तया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह कामगुणेहिं मुच्छया , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३११] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से सोयबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१२] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से चक्खुबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१३] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से घाणबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१४] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से जिब्भबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१५] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से फासबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१६] परिजूरइ ते सरीरयं , केसा पं डुरया हवं ति ते ।
से सव्वबले य हायई , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१७] अरई गं ड विस्मूया , आयंका विविहा फुसं ति ते ।
विहड़ विदंसइ ते सरीरयं , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- [३१८] वोच्छिंद सिणेहमप्पणो , कुमुयं सारइयं व पाणियं ।

से सव्वसिणेह वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३१९] चिच्छाण धनं च भारियं , पव्वइओ हि सि अ नगारियं ।
मा वं तं पुणो वि आविए , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२०] अवउज्ज्ञाय मित्तबं धवं, वित्तलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए , समयं गोयम ! मा पमायए ॥

अज्ञायणं-१०

[३२१] न हु जिणे अज्ज दिस्सई , बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२२] अवसोहिय कं टगापहं, ओइण्णोसि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२३] अबले जह भारवाहए , मा मग्गं विसमेऽवगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२४] तिण्णो हु सि अण्णवं महं , किं पुण चिद्वसि तीरमागओ ? ।
अभितुर पारं गमित्तए , समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२५] अकलेवरसेणि उस्सिया , सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि ।
खेमं च सिवं अ नुत्तरं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२६] बुद्धे परिनिव्वुडे चरे , गामगए नगरे स संजए ।
संतीमग्गं च वूहए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥
[३२७] बुद्धस्स निसम्म भासियं , सुकहियमद्वपओवसोहियं ।
रागं दोसं च छिं दिया, सिद्धिगइं गए गोयमे ॥ त्ति बेमि
◦ दसमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ इक्कारसमं अज्ञायणं - बहुस्सुयपुज्जं ◦

[३२८] संजोगा विष्पमुक्कस्स , अनगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि , आनुपुत्रिं सुणेह मे ॥
[३२९] जे यावि होइ निव्विज्जे , थद्धे लुद्धे अ निगगहे ।
अभिक्खणं उ ल्लव्वई, अविनीए अबहुस्सुए ॥
[३३०] अह पंचहिं ठाणेहिं , जेहिं सिक्खा न लब्धई ।
थंभा कोहा पमाएणं , रोगेणालस्सएण य ॥
[३३१] अह अ डहिं ठाणेहिं , सिक्खासीलि त्ति वुच्चर्वई ।
अहस्सिरे सया दं ते, न य मम्ममुदाहरे ॥
[३३२] नासीले न विसीले , न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए , सिक्खासीलि त्ति वुच्चर्वई ॥
[३३३] अह चोद्दसहिं ठाणेहिं , वद्वमाणे उ संजए ।
अविनीए वुच्चर्वई सो उ , निव्वाणं च न गच्छइ ॥

- [३३४] अभिक्खणं कोही हवइ , पबंधं च पकुव्वई |
मेत्तिज्जमाणो वमइ , सुयं लद्धून मज्जई ||
- [३३५] अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई |
सुप्पियस्सावि मित्तस्स , रहे भासइ पावयं ||
- [३३६] पङ्गणवाई दुहिले , थद्धे लुद्धे अ निगगहे |

अञ्जश्चयण-११

- असंविभागी अवियत्ते , अविनीए त्ति वुच्चई ||
[३३७] अह पन्नरसहिं ठाणेहिं , सुविनीए त्ति वुच्चई |
नीयावित्ती अचवले , अमाई अकुञ्जहले ||
- [३३८] अप्पं च अहिक्खिवई , पबंधं च न कुव्वई |
मेत्तिज्जमाणो भयई , सुयं लद्धुं न मज्जई ||
- [३३९] न य पावपरिक्खेवी , नय मित्तेसु कुप्पई |
अप्पियस्सावि मित्तस्स , रहे कल्लाण भासई ||
- [३४०] कलहडमरवज्जए, बुद्धे अ आभिजाइए |
हिरिमं पडिसंली ने, सुविनीए त्ति वुच्चई ||
- [३४१] वसे गुरकूले निच्चं , जोगवं उवहाणवं |
पियंकरे पियंवाई , से सिक्खं लद्धुमरिहई ||
- [३४२] जहा संखं मि पयं निहियं दुहओ वि विरायई |
एवं बहुस्सुए भिक्खू , धम्मो कित्ती तहा सुयं ||
- [३४३] जहा से कं बोयाणं, आइण्णो कं थए सिया |
आसे जवेण पवरे , एव हवइ बहुस्सुए ||
- [३४४] जहाऽङ्गणसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे |
उभओ नं दिघोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३४५] जहा करेणुपरिकिणे , कुंजरे सद्विहायणे |
बलवंते अप्पडिहए , एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३४६] जहा से तिक्खसिंगे , जायखंधे विरायई |
वसहे जुहाहिवई , एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३४७] जहा से तिक्खदाढे , उदग्गे दुप्पहंसए |
सीहे मियाण पवरे , एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३४८] जहा से वासुदेवे , संखचक्कगयाधरे |
अप्पडिहयबले जोहे , एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३४९] जहा से चाऊं ते, चक्कवट्टी महि इঢ়িए |
चउद्धसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ||
- [३५०] जहा से सहस्सक्खे , वज्जपाणी पुरं दरे |
सक्के दिवाहिवई , एवं हवइ बहुस्सुए ||

- [३५१] जहा से तिमिरविद्वंसे , उच्चिंडुंते दिवायरे |
जलंते व तेण , एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५२] जहा से उडुवई चं दे, नक्खत्तपरिवारिए |
पडिपुणे पुण्णमासीए , एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५३] जहा से सामाइ यंगाणं, कोट्टागारे सुरक्षिए |

अज्ञायण-११

- नानाधन्नपडिपुणे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५४] जहा सा दुमाण पवरा , जंबू नाम सुदंसणा |
अनाढियस्स देवस्स , एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५५] जहा सा नईण पवरा , सलिला सागरंगमा |
सीया नीलवं तपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५६] जहा से नगाण पवरे , सुमहं मं दरे गिरी |
नानोसहिपज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५७] जहा से सयंभुरमणे , उदही अक्खओदए |
नानारयणपडिपुणे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- [३५८] समुद्रगंभीरसमा दुरासया |
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया |
सुयस्स पुणा वित्तलस्स ताइणो |
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥
- [३५९] तम्हा सुयमहिडुज्जा , उत्तमठुगवेसए |
जेणप्पाणं परं चेव , सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ तित बेमि
◦ इक्कारसमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

० बारसमं अज्ञायण - हरिएसिज्ज ०

- [३६०] सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मु नी |
हरिएसबलो नाम , आसि भिक्खू जिइं दिओ ॥
- [३६१] इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य |
जओ आयाणनिक्खेवे , संजओ सुसमाहिओ ॥
- [३६२] मनगुत्तो वयगुत्तो , कायगुत्तो जिइं दिओ |
भिक्खट्टा बं भइजंमि, जन्नवाडे उव ड्हिओ ॥
- [३६३] तं पासिऊणं एजं तं, तवेण परिसोसियं |
पंतोवहिउवगरणं, उवहसंति अ नारिया ॥
- [३६४] जाईमयपडिथद्वा, हिंसगा अजिइं दिया |
अबंभचारिणो बाला , इमं वयणमब्बवी ॥
- [३६५] कयरे आगच्छइ दित्तरुवे ? काले विकराले फोक्कनासे |

ओमचेलए पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिहरिय कं ठे ॥

- [३६६] कयरे तुमं इय अदसंणिजजे ? काए व आसाए इहमागओ सि ? ।
ओमचेलया पंसुपिसायभूया, गच्छकखलाहि किमिहं ठिओ सि ? ॥
- [३६७] जकखे तहिं तिंदुयरुक्खवासी, अनुकंपओ तस्स महामुनिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइं उ दाहरित्था ॥

अज्ञायण-१२

- [३६८] समणो अहं संजओ बं भयारी, विरओ धणपयणपरिगग्हाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्टा इहमागओ मि ॥
- [३६९] वियरिजजइ खजजइ भुज्जई य अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु त्ति, सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥
- [३७०] उवक्खडं भोयण माहणाणं, अतिद्वियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्जां किमिहं ठिओऽसि ? ॥
- [३७१] थलेसु बीयाइं व यंति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्वाए दलाह मज्जां, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥
- [३७२] खेत्ताणि अम्हं विड्याणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहं ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥
- [३७३] कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिगग्हं च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥
- [३७४] तुब्बेत्थ भो ! भारधरा गिराणं, अट्टं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरं ति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥
- [३७५] अज्ञावयाणं पडिकूलभासी, पभाससे किं नु सगासि अम्हं ।
अवि एयं वि नस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियं ठा ॥
- [३७६] समिईहि मज्जां सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइं दियस्स ।
जइ मे न दहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥
- [३७७] के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्ञावया वा सह खं डिएहिं ? ।
एयं खु दं डेण फलएण हं ता, कंठमि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥
- [३७८] अज्ञावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दंडेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव, समागया तं इसि तालयं ति ॥
- [३७९] रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्र त्ति नामेण अ निंदियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुछे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥
- [३८०] देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्ना मु रन्ना म नसा न झाया ।
नरिंददेविंदभिवंदिएणं, जेणाणि वंता इसिणा स एसो ॥
- [३८१] एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिओ संजओ बं भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणि, पितणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥
- [३८२] महाजसो एस महा नुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।

मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं , मा सव्वे तेण भे निद्धेज्जा ॥
[३८३] एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा , पत्तीइं भद्वाइं सुभासियाइं |
इसिस्स वेयावडियद्वयाए जक्खा कुमारे वि निवारयंति ॥
[३८४] ते घोरुर्लवा ठिय अं तलिक्खे, असुरा तहिं तं ज नं तालयं ति |
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमं ते, पासितु भद्वा इणमाहु भुज्जो ॥

अञ्जश्चयण-१२

[३८५] गिरिं नहेहिं खणह , अयं दं तेहिं खायह |
जायतेयं पाएहिं हणह , जे भिक्खु अवमन्नह ॥
[३८६] आसीविसो उगतवो महेसी , घोरव्वओ घोरपरक्कमो य |
अगनिं व पक्खं द पयंगसेणा , जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥
[३८७] सीसेण एयं सरणं उवेह , समागया सव्वजणेण तुब्बे |
जइ इच्छह जीवियं वा ध नं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥
[३८८] अवहेडियपिडिसउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचिद्वे |
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमं ते, उङ्ढंमुहे निगग्यजीहनेत्ते ॥
[३८९] ते पासिया खं डिय कट्टभूए , विमणो विसण्णो अह माहणो सो |
इसिं पसाएइ सभारियाओ , हीलं च निं द च खमाह भं ते! ॥
[३९०] बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं , जं हीलिया तस्स खमाह भं ते! |
महप्पसाया इ सिणो हवं ति, न हु मु नी कोवपरा हवं ति ॥
[३९१] पुत्रिं च इणिं च अ नागयं च , मणप्पदोसो न मे अतिथि कोइ |
जक्खा हु वेयावडियं करै ति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥
[३९२] अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा , तुब्बं न वि कुप्पह भूपन्ना |
तुब्बं तु पाए सरणं उवेमो , समागया सव्वजणेण अम्हे ॥
[३९३] अच्चेमु ते महाभाग ! न ते किंच न न अच्चिमो |
भुंजाहि सालिमं कूरं , नाणवंजण संजुयं ॥
[३९४] इमं च मे अतिथि पभूयमन्नं , तं भुंजसू अम्ह अ नुगगहड्हा |
बाढं त्ति पडिच्छइ भत्तपा नं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥
[३९५] तहियं गं धोदयपुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुड्हा |
पहयाओ दुं दुहीओ सुरेहिं , आगासे अहो दा नं च घुडं ॥
[३९६] सक्खं खु दीसई तवोविसेसो , न दीसई जाइविसेस कोई |
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं , जस्सेरिसा इ इठि महा नुभागा ॥
[३९७] किं माहणा ! जोई समारभंता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ? |
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं , न तं सुइ डुं कुसला वयं ति ॥
[३९८] कुसं च जूवं तणकबुमगिं , सायं च पायं उदगं फुसं ता |
पाणाइं भूयाइं विहेड्यं ता, भुज्जोऽवि मं दा पकरेह पावं ॥
[३९९] कहं चरे भिक्खु ! वयं जयामो ? पावाइं कम्माइं पणुल्लयामो |

- अक्खाहि णे संजय जक्खपूङ्या , कहं सुइडुं कुसला वयं ति ॥
- [४००] छज्जीवकाए असमारभं ता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्रहं इतिथओ मा न मायं , एयं परिन्नाय चरं ति दं ता ॥
- [४०१] सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं , इह जीवियं अ नवकंखमाणा ।
वोसडुकाओ सुइचत्तदेहा , महाजयं जय ई जन्नसि डुं ॥

अज्ञायण-१२

- [४०२] के ते जोई के व ते जोइठाणे ? का ते सुया किं व ते कारिसंगं ? ।
एहा य ते क्यरा सं ति भिक्खू ! क्यरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥
- [४०३] तवो जोई जीवा जोइठाणं , जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्म ए हा संजमजोगसं ती, होमं हुणामि इसिणं पस्तथं ॥
- [४०४] के ते हरए के य ते सं तितिथे ? कहिं सिणाओ व रयं जहासि ? ।
आइक्ख णे संजय जक्खपूङ्या , इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥
- [४०५] धम्मे हरए बं भै सं तितिथे, अनाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो , सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥
- [४०६] एयं सिणाणं कुसलेहि दिडुं , महासिणाणं इसिणं पस्तथं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा , महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते ॥ तिं
बेमि
- बारसमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ तेरसमं अज्ञायणं - चित्तसंभूइज्जं ◦

- [४०७] जाईपराजिओ खलु , कासि नियाणं तु हत्थिणपुरं मि ।
चुलणीए बं भदत्तो, उववन्नो पउम गुम्माओ ॥
- [४०८] कंपिल्ले सं भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालं मि ।
सेड्डिकुलंमि विसाले , धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥
- [४०९] कंपिलंमि य नयरे , समागया दो वि चित्तसं भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं, कहैंति ते एक्कमेक्कस्स ॥
- [४१०] चक्कवट्टी महि डढीओ, बंभदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमा नेनं, इमं वयणमब्बवी ॥
- [४११] आसीमो भायरा दोऽवि , अन्नमन्नवसानुगा ।
अन्नमन्नमनुरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥
- [४१२] दासा दसण्ण ये आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीराए , सोवागा कासिभूमिए ॥
- [४१३] देवा य देवलोगं मि, आसि अम्हे महि डढिया ।
इमा णो छ द्विया जाई , अन्नमन्नेण जा वि ना ॥
- [४१४] कम्मा नियाणपगडा , तुमे राय! विचिं तिया ।

तेसिं फलविवागेण , विष्पओगमुवागया ॥

[४१५] सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा |

ते अज्ज परिभुंजामो , किं नु चित्तेवि से तहा ॥

[४१६] सब्वं सुचिण्णं सफलं नराणं , कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि |

अत्थेहिं कामेहिं य उत्तमेहिं , आया ममं पुण्णफलोववेए ॥

[४१७] जाणासि संभूय ! महा नुभागं, महिङ्दियं पुण्णफलोववेयं |

अञ्जायण-१३

चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं ! इङ्गी जुई तस्सवि अप्पभूया ॥

[४१८] महत्थर्वा वयणप्पभूया , गाहाणुगीया नरसंघमज्जे |

जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया , इह जयंते समणोऽम्हि जाओ ॥

[४१९] उच्चोअए महु कक्के य बं भे, पवेङ्या आवसहा य रम्मा |

इमं गिं चित्तधं नप्पभूयं, पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

[४२०] नद्वेहिं गीएहिं य वाइएहिं , नारीजणाहिं परिवारयं तो |

भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू , मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥

[४२१] तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं , नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं |

धम्मस्सिसओ तस्स हियाणुपेही , चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥

[४२२] सब्वं विलवियं गीयं , सब्वं नद्वं विडम्बियं |

सब्वे आभरणा भारा , सब्वे कामा दुहावहा ॥

[४२३] बालाभिरामेसु दुहावहेसु , न तं सुहं कामगुणेसु रायं |

विरत्तकामाण तवोधणाणं , जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥

[४२४] नरिंद जाई अहमा नराणं , सोवागजाई दुहओ गयाणं |

जहिं वयं सब्वज नस्स वेस्सा , वसीअ सोवागनिवेस नेसु ॥

[४२५] तीसं य जाईइ उ पावियाए वुच्छा मु सोवागनिवेस नेसु |

सब्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा , इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥

[४२६] सो दाणिसिं राय महा नुभागो, महिङ्दिओ पुण्णफलोववेओ |

चइत्तु भोगाइं असासयाइं , आदानहेतं, अभिनिक्खमाहि ॥

[४२७] इह जीवीए राय असासयं मि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो |

से सो यई मच्चुमुहोवणीए , धम्मं अकाऊण परंमि लोए ॥

[४२८] जहेह सीहो व मियं गहाय , मच्चू नरं नेइ हु अं तकाले |

न तस्स माया व पिया व भाया , कालंमि तम्मंसहरा भवं ति ॥

[४२९] न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा |

|

एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं , कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥

[४३०] चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च , खेत्तं गिं धणधन्नं च सब्वं |

सकम्मबीओ अवसो पया इ, परं भवं सुंदरं पावगं वा ॥

- [४३१] तं एकगं तुच्छसरीरगं से , चिर्गयं दहियं उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्तोवि य नायओ वा , दायारमन्नं अणुसंकमं ति ॥
- [४३२] उवणिज्जई जीवियमप्पमायं , वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं । ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि , मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥
- [४३३] अहं पि जाणामि जहेह साहू ! जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संग करा हवंति , जे दुज्जया अज्जो ! अम्हारिसेहिं ॥
- [४३४] हत्थिणपुरंमि चित्ता , दद्भूणं नरवइं महि डढीयं ।

अज्ञायणं-१३

- कामभोगेसु गिद्धेणं , नियाणमसुहं कडं ॥
- [४३५] तस्स मे अपडिकं तस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं , कामभोगेसु मुच्छिओ ॥
- [४३६] नागो जहा पंकजलावसन्नो , ददुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा , न भिक्खुणो मग्गम नुव्वयामो ॥
- [४३७] अच्चेइ कालो तूरं ति राइ , न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयं ति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥
- [४३८] जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो , अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकं पी, तो होहिसि देवो इओ वित्वी ॥
- [४३९] न तुज्जा भोगे चइउण बुद्धी , गिद्धोसि आरं भपरिगहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विष्पलावो , गच्छामि रायं! आमं तिओ सि ॥
- [४४०] पंचालरायाऽवि य बं भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अनुत्तरे भुंजिय कामभोगे , अणुत्तरे सो नरए पविड्हो ॥
- [४४१] चित्तोऽवि कामेहि विरत्तकामो , उदगगचारित्ततवो महेसी ।
अनुत्तरं संजमं पालइत्ता , अनुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ त्ति
बेमि
- तेरसमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ चउद्दसमं अज्ञायण-उसुयारिज्जं ◦

- [४४२] देवा भवित्ताण पुरे भवं मि केई चुया एगविमा नवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे , खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥
- [४४३] सकम्मसेसेण पुराकएण , कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निविण्णसंसारभया जहाय , जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥
- [४४४] पुमत्तमागम्म कुमार दोऽवि , पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो , रायऽत्थ देवी कमलावई य ॥
- [४४५] जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविड्हचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खण द्वा, दद्भूण ते कामगुणे विरत्ता ॥

- [४४६] पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स , सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सारित्तु पोराणिय तथ जाइं , तहा सुचिणं तवसंजमं च ॥
- [४४७] ते कामभोगेसु असज्जमाणा , माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायस इढा, तातं उवागम्म इमं उदाहु ॥
- [४४८] असासयं दहु इमं विहारं , बहुअंतरायं न य दीहमां ।
तम्हा गिहंसि न रहं लभामो , आमंतयामो चरिस्सामु मो नं ॥
- [४४९] अह तायगो तथ मुणीण तेसि , तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयं ति, जहा न होई असुयाण लोगो ॥

अजङ्गायण-१४

- [४५०] अहिज्ज वेए परिविस्स विष्पे , पुत्ते परि दुष्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं , आरण्णगा होह मु नी पसत्था ॥
- [४५१] सोयगिणा आयगुणि धणेण , मोहानिला पज्जलणाहिएण ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं , लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥
- [४५२] पुरोहियं तं कमसोऽणु नंतं , नीमंतयंतं च सुए धणेण ।
जहक्कमं कामगुणेहिं चेव , कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥
- [४५३] वेया अहीया न भवं ति ताणं , भुत्ता दिया निं ति तमं तमेण ।
जाया य पुत्ता न हवं ति ताणं, को नाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ?
॥
- [४५४] खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा , पगामदुक्खा अ निगामसुक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया , खाणी अनत्थाण उ कामभोगा ॥
- [४५५] परिव्वयंते अ नियत्तकामे , अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे , पप्पोत्ति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥
- [४५६] इमं च मे अतिथ इमं च नत्थि, इमं च मे किच्चमिमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं , हरा हरंति त्ति कहं पमाओ ? ॥
- [४५७] धनं पभूयं सह इत्थियाहिं , सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो , तं सब्ब साहीणमिहेव तुब्बं ॥
- [४५८] धणेण किं धम्मधुराहिगारे , सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी , बहिं विहारा अभिगम्म भिक्खं ॥
- [४५९] जहा य अग्गी अरणी असं तो, खीरे घयं तेल्लमहा ति लेसु ।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता , संमुच्छई नासइ नावचिडे ॥
- [४६०] नोइंदियगेज्ज अमुत्तभावा , अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अजङ्गत्थहेउं निययस्स बं धो, संसारहेउं च वयं ति बं धं ॥
- [४६१] जहा वयं धम्मं अजाणमाणा , पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुब्भमाणा परिरक्खियंता, तं नेव भुज्जोऽवि समायरामो ॥
- [४६२] अब्भाहयंमि लोगं मि, सब्बओ परिवारिए ।

- अमोहाहिं पडं तीहिं, गिहंसि न रङ्गं लभे ॥
- [४६३] केण अब्भाहओ लोगो , केण वा परिवारिओ |
का वा अमोहा वुत्ता , जाया चिंतावरो हुमे ॥
- [४६४] मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो , जराए परिवारिओ |
अमोहा रयणी वुत्ता , एवं ताय विजाणह ॥
- [४६५] जा जा वच्चइ रयणी , न सा पडिनियत्तर्इ |
अहम्मं कुणमाणस्स , अफला जं ति राइओ ॥
- [४६६] जा जा वच्चइ रयणी , न सा पडिनियत्तर्इ |
धम्मं च कुणमाणस्स , सफला जं ति राइओ ॥

अज्ञायण-१४

- [४६७] एगओ संवसित्ताणं , दुहओ सम्मत्तसंजुया |
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥
- [४६८] जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं |
जो जाणे न मरिस्सामि , सो हु कंखे सुए सिया ॥
- [४६९] अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो , जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो |
अनागयं नेव य अत्थि किंचि , सद्वा खमं नो विणइत्तु रागं ॥
- [४७०] पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो , वासिष्टि! भिक्खायरियाइ कालो |
साहाहिं रुक्खो लहई समाहिं , छिन्नाहि साहाहिं तमेव खाणुं ॥
- [४७१] पंखाविहूणो व्व जहेह पक्खी , भिच्छाविहूणो व्व रणे न रिंदो |
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए , पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥
- [४७२] सुसंभिया कामगुणा इमे ते , संपिंडिआ अग्गरसाप्पभूया |
भुंजामु ता कामगुणे पगामं , पच्छा गमिस्सामु पहाणमगं ॥
- [४७३] भुत्ता रसा भोइ! जहाइ णे वओ , न जीवियद्वा पजहामि भोए |
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोनं ॥
- [४७४] मा हु तुमं सोयरियाण सं भरे, जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी |
भुंजाहि भोगाई मए समाणं , दुक्खं खु भिक्खायरिया विहारो ॥
- [४७५] जहा य भोइ तणुयं भुयंगो , निम्मोयणि हिच्च पलेइ मुत्तो |
एमेए जाया पयहं ति भोए , तेऽहं कहं ना नुगमिस्समेक्को ? ॥
- [४७६] छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया , मच्छा जहा कामगुणे पहाय |
धोरेयसीला तवसा उदारा , धीरा हु भिक्खायरियं चरं ति ॥
- [४७७] नहेव कुंचा समइक्कम्मंता , तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा |
पलेंति पुत्ता य पई य मज्जं , तेऽहं कहं ना नुगमिस्समेक्का ॥
- [४७८] पुरोहियं तं ससुयं सदारं , सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए |
कुडुंबसारं वित्तुत्तमं च , रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥
- [४७९] वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ |

- माहणेण परिच्छत्तं , धनं आयाउमिच्छसि ॥
- [४८०] सव्वं जगं जइ तुहं , सव्वं वाऽवि ध नं भवे ।
सव्वं पि ते अपजजत्तं , नेव ताणाय तं तव ॥
- [४८१] मरिहिसि रायं जया तया वा , मनोरमे कामगुणे पहाय ।
एकको हु धम्मे नरदेव ! ताणं, न विजर्ज अन्नमिहेह किंचि ॥
- [४८२] नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा , संताणछिन्ना चरिस्सामि मो नं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा , परिगग्हारंभनियत्तदोसा ॥
- [४८३] दवग्गिणा जहा रणे , डज्जमाणेसु जं तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयं ति, रागद्वोसवसं गया ॥

अजङ्गायणं-१४

- [४८४] एवमेव वयं मूढा , कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्जमाणं न बुज्जामो , रागद्वोसग्गिणा जगं ॥
- [४८५] भोगे भोच्चा वमित्ता य , लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छं ति, दिया कामकमा इव ॥
- [४८६] इमे य बद्धा फं दंति, मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु , भविस्सामो जहा इमे ॥
- [४८७] सामिसं कुललं दिस्सा , बज्जमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्जित्ता, विहरिस्सामो निरामिसा ॥
- [४८८] गिद्धोवमे उ नच्चाणं , कामे संसारव इढणे ।
उरगो सुवण्णपासे व्व , संकमाणो तणुं चरे ॥
- [४८९] नागो व्व बंध नं छित्ता , अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं ! उस्सुयारि त्ति मे सुयं ॥
- [४९०] चइत्ता वित्तलं रजं , कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा , निन्नेहा निष्परिगग्हा ॥
- [४९१] सम्मं धम्मं वियाणित्ता , चिच्चा कामगुणे चरे ।
तवं पगिज्जऽहक्खायं , घोरं घोरपरक्कमा ॥
- [४९२] एवं ते कमसो बुद्धा , सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्ममच्युभुभउविगगा, दुक्खसंतगवेसिणो ॥
- [४९३] सासणे विगयमोहाणं , पुत्रिं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण , दुक्खसंतमुवागया ॥
- [४९४] राया सह देवीए , माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव , सव्वे ते परिनिवुडे ॥ त्ति बेमि
◦ चउद्दसमं अजङ्गायणं सम्मतं ◦

◦ पन्नरसमं अजङ्गायणं - सभिक्खुयं ◦

- [४९५] मोनं चरिस्सामि समिच्च धम्मं , सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिजज अकामकामे , अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥
- [४९६] राओवरयं चरेजज लाढे , विरए वेयवियाऽयरकिखए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी , जे कम्हिवि न मुच्छार स भिक्खू ॥
- [४९७] अक्कोसवहं विइत्तु धीरे , मुनी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वगगमणे असंपहिडे , जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥
- [४९८] पंत सयणासणं भइत्ता , सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वगगमणे असंपहिडे , जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥
- [४९९] नो सकियमिच्छई न पूयं , नो वि य वं दणगं कुओ पसंसं ? ।

अज्ञायण-१७

- से संजए सुव्वए तवस्सी , सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥
- [५००] जेण पुणो जहाइ जीवियं , मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी , न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥
- [५०१] छिन्नं सरं भोमं अंतलिक्खं , सुमिणं लक्खणं दंडं वत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं , जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥
- [५०२] मंतं मूलं विविहं वेजजचिं तं , वमनविरेयणधुमनेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छयं च , तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥
- [५०३] खत्तियगण उगरायपुत्ता, माहणभोई य विविहा य सिष्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं , तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥
- [५०४] गिहिणो जे पव्वइएण दि ढ्वा, अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफल ढ्वा, जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥
- [५०५] सयणासणपानभोयणं , विविहं खाइमं साइमं परेसिं लद्दुं ।
अदए पडिसेहिए नियं ठे, जे तथ न पउस्सई स भिक्खू ॥
- [५०६] जं किंचि आहारपा नगं विविहं , खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकं पे, मनवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥
- [५०७] आयामगं चेव जवोदणं च , सीयं सोवीर जवोदगं च ।
नो हीलए पिं डं नीरसं तु , पंतकुलाई परिव्वए जे स भिक्खू ॥
- [५०८] सद्वा विविहा भवं ति लोए , दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला , जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ॥
- [५०९] वादं विविहं समिच्च लोए , सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी , उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥
- [५१०] असिष्पजीवी अगिहे अमित्ते , जिइंदिए सव्वओ विष्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खु ॥
- तित बेमि

० पन्नरसमं अज्ञायणं सम्मतं ०

० सोलसमं अज्ञायणं - बंभचेरसमाहिठाणं ०

[५११] सुयं मे आउसं ! तेण भगवया एवमक्खायं । इह खलु थेरेहि भगवं तेहि दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

[५१२] कयरे खलु ते थेरेहि भगवंतेहि रदस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। इमे खलु ते थेरेहि भगवं तेहि दस बंभचेर समाहि ठाणा पन्नता , जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुल समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

तं जहा विवित्ताई सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निगं थे नो इत्थीपसुपं डग संसत्ताइं अज्ञायणं-१६

सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त् आयरियाऽह निगं थस्स खलु इत्थिपसुपं डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विडिगिच्छा वा समुप्पजिज्जा, भेदं वा लभेज्जा , उम्मायं वा पाउणिज्जा , दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा , केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निगंथे ।

[५१३] नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह , निगंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ।

[५१४] नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निगं थे। तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह, निगंथस्स खलु इत्थीहि सद्धिं सं निसेज्जागयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीहि सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ।

[५१५] नो इत्थीणं इंदियाइं मनोहराइं मनोरमाइं आलोइत्ता निज्जाइत्ता हवइ से निगगन्थे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह, निगंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मनोहराइं मनोरमाइं आलोएमाणस्स निज्जायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगं थे इत्थीणं इंदियाइं मनोहराइं मनोरमाइं आलोएज्जा निज्जाएज्जा ॥

[५१६] नो निगंथे इत्थीणं कुडङ्ठं तरंसि वा दूसं तरंसि वा भित्तं तरंसि वा कूड्यसद्वं वा रुड्यसद्वं वा गीयसद्वं वा हसियसद्वं वा थणियसद्वं वा कं दियसद्वं वा विलवियसद्वं वा सुणेत्ता हवइ से निगंथे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह निगं थस्स खलु इत्थीणं कुडङ्ठं तरंसि वा दूसं तरंसि वा भित्तंतरंसि वा जाव विलवियसद्वं वा सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगं थे इत्थीणं कुडङ्ठंतरंसि वा जाव कंदियसद्वं वा विलवियसद्वं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ।

[५१७] नो निगंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अ नुसरित्ता हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त्? आयरियाऽह निगंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अ नुसरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विडिगिच्छा वा समुप्पजिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं

हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगं थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अनुसरेज्जा ।

[५१८] नो निगंथे पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह । निगंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगंथे पणीयं आहारं आहारेज्जा ।

[५१९] नो अङ्गायाए पा नभोयणं आहोरेत्ता हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह। निगं थस्स खलु अङ्गायाए पा नभोयणं आहारेमाणस्स बं भयारिस्स बं भचेरे संका जाव धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निगंथे अङ्गायाए पानभोयणं आहारेज्जा ।

[५२०] नो विभूसानुवादी हवइ से निगंथे, तं कहमिति चेत् ? आयरियाऽह, विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिज नस्स अभिलसणिज्जे हवइ , तओ णं तस्स इत्थिज नेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बं भचेरे संका वा जाव भंसेज्जा। तम्हा खलु नो नीगं थे विभूसा नुवादी हविज्जा ।

[५२१] नो सद्वरसगंधफासानुवादी हवइ से निगं थे, तं कहमिति चे त् ? आयरियाऽह, निगंथस्स खलु सद्वरसगंधफासानुवादिस्स बं भयारिस्स बं भचेरे संका वा कंखा वा विड्गिच्छा वा अज्ञायणं-१६

समुपज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्वरसगंधफासानुवादी भवेज्जा से निगं थे । दसमे बं भचेर-समाहिठाणे हवइ ।

[भवंति य इत्थ सिलोगा। तं जहा :-]

- | | | | |
|-------|-------------------------|------------------------|--|
| [५२२] | जं विवित्तमणाइणं , | रहियं इत्थिजणेण य | |
| | बंभचेरस्स रक्खट्टा , | आलयं तु निसेवए ॥ | |
| [५२३] | मनपल्हायजननी, | कामरागविवढणी | |
| | बंभचेररओ भिक्खू , | थीकहं तु विवज्जए ॥ | |
| [५२४] | समं च संथवं थीहिं , | संकहं च अभिक्खणं | |
| | बंभचेररओ भिक्खू , | निच्चसो परिवज्जए ॥ | |
| [५२५] | अंगपच्चंगसंठाणं, | चारुल्लवियपेहियं | |
| | बंभचेररओ थीणं , | चक्खुगिजङ्गं विवज्जए ॥ | |
| [५२६] | कूड्यं रुड्यं गीयं , | हसियं थणियं कंदियं | |
| | बंभचेररओ थीणं , | सोयगिजङ्गं विवज्जए ॥ | |
| [५२७] | हासं कि इङं रङं दप्पं , | सहसावित्तासियाणि य | |
| | बंभचेररओ थी णं, | नानुचिंते कयाइ वि ॥ | |
| [५२८] | पणीयं भत्तपा नं तु , | खिप्पं मयविवढणं | |
| | बंभचेररओ भिक्खू , | निच्चसो परिवज्जए ॥ | |
| [५२९] | धम्मलङ्घं मियं काले | जत्तत्थं पणिहाणवं | |
| | नाइमत्तं तु भुंजेज्जा | बंभचेररओ सया ॥ | |
| [५३०] | विभूसं परिवज्जेज्जा | सरीरपरिमंडनं | |
| | बंभचेररओ भिक्खू , | सिगारत्थं न धारए ॥ | |

- [५३१] सद्वे रुवे य गं धे य , रसे फासे तहेव य |
पंचविहे कामगुणे , निच्चसो परिवज्जए ॥
- [५३२] आलोओ थीजणाइण्णो , थीकहा य म नोरमा |
संथवो चेव नारीण , तासिं हं दियदरिसण ॥
- [५३३] कूइयं रुइयं गीयं , हासभुत्तासियाणि य |
पणीयं भत्तपा नं च , अइमायं पा नभोयण ॥
- [५३४] गत्तभूसणमिठुं च , कामभोगा य दुज्जया |
नरस्सऽत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥
- [५३५] दुज्जए कामभोगे य , निच्चसो परिवज्जए |
संकाठाणाणि सव्वाणि , वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥
- [५३६] धम्मारामे चरे भिक्खू , धिइमं धम्मसारही |
धम्मारामरते दं ते, बंभचेरसमाहिए ॥

अज्ञायण-१६

- [५३७] देवदानवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिंनरा |
बंभयारिं नमंसं ति, दुक्करं जे करं ति तं ॥
- [५३८] एस धम्मे धुवे निच्चे , सासए जि नदेसिए |
सिद्धा सिज्जंति चाणेण, सिज्जिस्संति तहावरे ॥ तित बेमि
० सोलसमं अज्ञायणं सम्मतं ०

० सत्तरसमं अज्ञायण - पावसमणिज्जं ०

- [५३९] जे केइ उ पव्वइए नियं ठे, धम्मं सुणित्ता वि नओववन्ने |
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलामं , विहरेज्ज पचछा य जहासुहं तु ॥
- [५४०] सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि , उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं |
जाणामि जं वट्टइ आउसु तित! किं नाम काहामि सुएण ? भंते! ॥
- [५४१] जे केई उ पव्वइए, निद्वासीले पगामसो |
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ , पावसमणि तित वुच्चई ॥
- [५४२] आयरियउवज्जाएहिं, सुयं वि नयं च गाहिए |
ते चेव खिंसई बाले , पावसमणि तित वुच्चई ॥
- [५४३] आयरियउवज्जायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ |
अप्पडिपूयए थद्वे , पावसमणि तित वुच्चई ॥
- [५४४] संमद्माणे पाणाणि , बीयाणि हरियाणि य |
असंजए संजय मन्नमाणो, पावसमणि तित वुच्चई ॥
- [५४५] संथारं फलगं पीढं , निसेज्जं पायकं बलं |
अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि तित वुच्चई ॥
- [५४६] दवदवस्स चरई , पमत्ते य अभिक्खणं |

- उल्लंघणे य चं डे य , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५४७] पडिलेहेइ पमत्ते , अवउज्जाइ पायकं बलं ।
पडिलेहा अ नाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५४८] पडिलेहेइ पमत्ते , से किंचि हु निसामिया ।
गुरुं पारिभावए निच्चं , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५४९] बहुमाई पमुहरे , थद्धे लुद्धे अ निगगहे ।
असंविभागी अ चियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५०] विवादं च उदीरेइ , अहम्मे अत्तपन्नहा ।
वुगगहे कलहे रत्ते , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५१] अथिरासने कुक्कुइए , जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणंमि अ नाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५२] ससरक्खपाए सुवई , सेज्जं न पडिलेहेइ ।

अज्ञायणं-१७

- संथारए अ नाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५३] दुद्ध-दही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं ।
अरए य तवोकम्मे , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५४] अत्थंतंमि य सुरं मि, आहारेइ अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५५] आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भौरे , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५६] सयं गेहं परिच्चज्ज , परगेहंसि वावरे ।
निमित्तेण य ववहरइ , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५७] संनाइपिंड जेमेइ , नेच्छई सामुदा नियं ।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ , पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- [५५८] एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे , रूवंधरे मु निपवराण हे द्विमे ।
अयंसि लोए विसमे व गरहिए, न से इहं नेव प रत्थ लोए ॥
- [५५९] जे वज्ज एए सया उ दोसे , से सुव्वए होइ मुणीण मज़ौ ।
अयंसि लोए अमयं व पूझए , आराहए दुहओ लोगमिण ॥ त्ति बेमि
◦ सत्तरसमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ अद्वारसमं अज्ञायणं - ‘संजइज्जं’ ◦

- [५६०] कंपिल्ले नयरे राया , ऊटिणबलवाहणे ।
नामेणं संज ओ नामं , मिगव्वं उव निगगए ॥
- [५६१] हयाणीए गयाणीए , रहाणीए तहवे य ।
पायत्ताणीए महया , सव्वओ परिवारिए ॥

- [५६२] मिए छुहित्ता हयगओ , कंपिल्लुज्जाण केसरे |
भीए सं ते मिए तत्थ , वहेइ रसमुच्छए ||
- [५६३] अह केसरं मि उज्जाणे , अनगारे तवोध ने |
सज्जायज्जाणसंजुत्ते, धम्मज्जाणं झियायइ ||
- [५६४] अप्फोवमंडवंमि, झायई झवियासवे |
तस्सागए मिगे पासं , वहेइ से नराहिवे ||
- [५६५] अह आसगओ राया , खिप्पमागम्म सो तहिं |
हए मिए उ पासित्ता , अनगारं तत्थ पासई ||
- [५६६] अह राया तत्थ संभं तो, अनगारो म णाऽहओ |
मए उ मं दपुण्णेण, रसगिद्वेण घित्तुणा ||
- [५६७] आसं विसज्जइत्ताणं , अनगारस्स सो निवो |
विनएण वं दए पाए , भगवं! एत्थ मे खमे ||

अज्जायण-१८

- [५६८] अह मोणेण सो भगवं , अनगारो झाण मस्सिओ |
रायाणं न पडिमं तेइ, तओ राया भयद्दुओ ||
- [५६९] संजओ अहम स्सीति, भगवं वाहराहि मे |
कुद्धे तेएण अ नगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ||
- [५७०] अभओ पत्थिवा ! तुब्बं , अभयदाया भवाहि य |
अनिच्चे जीवलोगं मि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ||
- [५७१] जया सत्वं परिच्चज्ज , गंतव्वमवसस्स ते |
अनिच्चे जीवलोगं मि, किं रज्जं मि पसज्जसि ||
- [५७२] जीवियं चेव रूवं च , विज्जुसंपायचंचलं |
जत्थं तं मुज्जसि रायं ! पेच्चत्थं नावबुज्जसे ||
- [५७३] दाराणि य सुया चेव , मित्ता य तह बं धवा |
जीवंतमनुजीवंति, मयं नाणुव्वयं ति य ||
- [५७४] नीहरंति मयं पुत्ता , पितरं परमदुक्खिया |
पितरो वि तहा पुत्ते , बंधू रायं तवं चरे ||
- [५७५] तओ तेण ऽज्जिए दव्वे , दारे य परिरक्खिए |
कीलंतऽन्ने नरा रायं , हट्टुद्दमलंकिया ||
- [५७६] तेणावि जं कयं कम्मं , सुहं वा जइ वा दुहं |
कम्मुणा तेण संजुत्तो , गच्छई उ परं भवं ||
- [५७७] सोऊण तस्स सो धम्मं , अनगारस्स, अंतिए |
महया संवेगनिव्वेदं , समावन्नो नराहिवो ||
- [५७८] संजओ चइउं रज्जं , निक्खंतो जि नसासने |
गद्भालिस्स भगवओ , अनगारस्स अं तिए ||

- [५७९] चिच्छा रडुं पव्वइए , खत्तिओ परिभासइ |
जहा ते दीसई रुवं , पसन्नं ते तहा मणो ||
- [५८०] किं नामे किं गोत्ते , कस्सद्वाए व माहणे ? |
कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं वि नीए त्तिवुच्चसि ? ||
- [५८१] संजओ नाम नामेण , तहा गोत्तेण गोयमो |
गद्भाली ममायरिया , विज्जाचरणपारगा ||
- [५८२] किरियं अकिरियं वि नयं, अन्नाणं च महामु नी |
एहिं चउहिं ठाणेहिं , मेयन्ने किं पभासई ? ||
- [५८३] इइ पाउकरे बुद्धे , नायए परि निव्वुए |
विज्जाचरण संपन्ने , सच्चे सच्चपरक्कमे ||
- [५८४] पडंति नरए घोरे , जे नरा पावकारिणो |
दिव्वं च गइं गच्छं ति, चरित्ता धम्ममारियं ||

अज्ञायण-१८

- [५८५] मायाबुइयमेयं तु , मुसा भासा निरत्थिया |
संजममाणोऽवि अहं , वसामि इरियामि य ||
- [५८६] सव्वेए विझ्या मज्जां , मिच्छादिट्टी अ नारिया |
विज्जमाणे परे लोए , सम्मं जाणामि अप्पयं ||
- [५८७] अहमासि महापाणे , जुइमं वरिससओवमे |
जा सा पालि महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ||
- [५८८] से चुए बं भलोगाओ, मानुस्सं भवमागए |
अप्पणो य परेसिं च , आउं जाणे जहा तहा ||
- [५८९] नाणा रुइं च छं दं च , परिवज्जेज्ज संज ओ |
अणद्वा जे य सव्वत्था , इइ विज्जाम नुसंचरे ||
- [५९०] पडिक्कमामि पसिणाणं , परमंतेहि वा पुणो |
अहो उ ड्विए अहोरायं , इइ विज्जा तवं चरे ||
- [५९१] जं च मे पुच्छसी काले , सम्मं सुद्धेण चेयसा |
ताइं पाउकरे बुद्धे , तं नाणं जि नसासने ||
- [५९२] किरियं च रोयई धीरे , किरियं परिवज्जए |
दिट्टीए दि ट्टीसंपन्ने, धम्मं चर सुदुच्चरं ||
- [५९३] एयं पुण्णपयं सोच्चा , अतथधम्मोवसोहियं |
भरहोऽवि भारहं वासं , चिच्छा कामाइ पव्वए ||
- [५९४] सगरोऽवि सागरं तं, भरहवासं नराहिवो |
इस्सरियं केवलं हिच्चा , दयाइ परिनिव्वुडे ||
- [५९५] चइत्ता भारहं वासं , चक्कवट्टी महि इट्टिओ |
पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ||

- [५९६] सणंकुमारो मणुस्सिं दो, चक्कवट्टी महि इदिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं , सोऽवि राया तवं चरे ॥
- [५९७] चइत्ता भारहं वासं , चक्कवट्टी महि इदिओ ।
संती सं तिकरे लोए , पत्तो गइम नुत्तरं ॥
- [५९८] इक्खागरायवसभो, कुंथू नाम नरीसरो ।
विक्खायकित्ती भगवं , मुक्खं गओ अनु त्तरं ॥
- [५९९] सागरंत जहित्ताणं, भरहं नरवरीसरो ।
अहो य अरयं पत्तो , पत्तो गइम नुत्तरं ॥
- [६००] चइत्ता भारहं वासं , चक्कवट्टी महिइदिओ ।
चइत्ता उत्तमे भोए , महापउमे दमं चरे ॥
- [६०१] एगच्छत्तं पसाहित्ता , महिं मा ननिसूरणो ।
हरिसेनो म नुस्सिंदो, पत्तो गइम नुत्तरं ॥

अज्ञायणं-१८

- [६०२] अन्निओ रायसहस्सोहिं , सुपरिच्छाई दमं चरे ।
जयनामो जि नक्खायं, पत्तो गइम नुत्तरं ॥
- [६०३] दसण्णरज्जं मुदियं , चइत्ताणं मु नी चरे ।
दसण्णभद्वो निक्खं तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥
- [६०४] नमी नमेइ अण्पाणं , सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही , सामण्णे पज्जुव द्विओ ॥
- [६०५] करकंडू कलिंगेसु , पंचालेसु य दुम्मुहो ।
नमी राया विदेहेसु , गंधारेसु य नग्गई ॥
- [६०६] एए न रिंदवसभा, निक्खंता जि नसासने ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं , सामण्णे पज्जुव द्विया ॥
- [६०७] सोवीरायवसभो, चइत्ताण मु नी चरे ।
उद्वायणो पव्वइओ , पत्तो गइम नुत्तरं ॥
- [६०८] तहेव कासीराया वि सेओ सच्चपरकक्मो ।
कामभोगे परिच्छज्ज , पहणे कम्ममहाव नं ॥
- [६०९] तहेव विजओ राया , अणद्वा कित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं , पयहित्तु महाजसो ॥
- [६१०] तहेवुगं तवं किच्चा , अव्वक्षित्तेण चेयसा ।
महब्बलो रायरिसी , आदाय सिरसा सिरिं ॥
- [६११] कहं धीरो अहेऊहिं , उम्मत्तो व महिं चरे ? ।
एए विसेसमादाय , सूरा दढपरक्कमा ॥
- [६१२] अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई
अतरिंसु तरं तेगे तरिस्सं ति अ नागया ॥

[६१३] कहं धीरे अहेऊहिं , अत्ताणं परियावसे |
सव्वसंगविनिमयक्के, सिद्धे भवइ नीरए || त्ति बेमि
◦ अडारसमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ एगूणवीसइमं अजङ्गयणं - मियापुत्तिज्जं ◦

- [६१४] सुग्गीवे नयरे रम्मे , काननुज्जाणसोहिए |
राया बलभद्वि त्ति , मिया तस्स इगमाहिसी ||
- [६१५] तेसिं पुत्ते बलसिरी , मियापुत्ते त्ति विस्सुए |
अम्मापिठण दइए , जुवराया दमीसरे ||
- [६१६] नंदने सो उ पासाए , कीलए सह इत्थिहिं |
देवे दोगुं दगे चेव , निच्चं मुझ्यमा नसो ||
- [६१७] मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्टिओ |

अजङ्गयणं-१९

- आलोएइ नगरस्स , चउक्कत्तियचच्चरे ||
- [६१८] अह तथ अइच्छं तं, पासई समणसंजयं |
तवनियमसंजमधरं, सीलइं गुणआगरं ||
- [६१९] तं पेहई मियापुत्ते , दिट्टीए, अनिमिसाए उ |
कहिं मन्नेरिसं रुवं , दिड्पुव्वं मए पुरा ||
- [६२०] साहुस्स दरिसणे तस्स , अजङ्गवसाणंमि सोहणे |
मोहं गयस्स सं तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ||
- [६२१] देवलोग चुओ संतो मानुसं भवमागओ
सणिनाणे समुप्पन्ने जाइं सरइपुराणयं ||
- [६२२] जाईसरणे समुप्पन्ने , मियापुत्ते महि इडिए |
सरई पोराणियं जाइं , सामण्णं च पुरा कयं ||
- [६२३] विसएसु अरज्जं तो, रज्जंतो संजमं मि य |
अम्मापियरं उ वागम्म, इमं वयणमब्बवी ||
- [६२४] सुयाणि मे पंच महव्वयाणि |
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु |
निव्विणकामो मि महण्णवाओ |
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ||
- [६२५] अम्मताय! मए भोगा , भुत्ता विसफलोवमा |
पच्छा कडुयविवागा , अनुबंधदुहावहा ||
- [६२६] इमं सरीरं अ निच्चं, असुइं असुइसंभवं |
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ||
- [६२७] असासए सरीरं मि, रइं नोवलभामहं |

- पच्छा पुरा व चइयव्वे , , फेणबुब्बुयसंनिभे ॥
- [६२८] मानुस्सित्ते असारं मि, वाहीरोगाण आलए |
जरामरघत्थंमि, खणंपि न रमाम इहं ॥
- [६२९] जम्म दुक्खं जरा दुक्खं , , रोगाणि मरणाणि य |
अ हो दुक्खो हु संसारो , , जत्थ कीसं ति जं तवो ॥
- [६३०] खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च , , पुत्तदारं च बं धवा |
चइत्ताणं इमं देहं , , गंतव्वमवस्स मे ॥
- [६३१] जहा किं पागफलाणं, परिणामो न सुं दरो |
एवं भुत्ताणं भोगाणं , , परिणामो न सुं दरो ॥
- [६३२] अद्वाणं जो महंतं तु , , अप्पहेज्जो पवज्जई |
गच्छंतो सो दुही होइ , , छुहातण्हाए पीडिओ ॥
- [६३३] एवं धम्मं अकाऊणं , , जो गच्छइ परं भवं |

अज्ञायणं-१९

- गच्छंतो सो दुही होइ , , वाही रोगेहिं पीडिओ ॥
- [६३४] अद्वाणं जो महंतं तु , , सपाहेज्जो पवज्जई |
गच्छंतो सो सुही होइ , , छुहातण्हाविवज्जिजओ ॥
- [६३५] एवं धम्मं पि काऊणं , , जो गच्छइ परं भवं |
गच्छंतो सो सुही होइ , , अप्पकम्मे अवेयणे ॥
- [६३६] जहा गेहे पलितं मि, तस्स गेहस्स जो पहू |
सारभंडाणि नीणेइ , , असारं अवउज्जाइ ॥
- [६३७] एवं लोए पलितं मि, जराए मरणेण य |
अप्पाणं तारइस्सामि , , तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥
- [६३८] तं बिं तङ्मापियरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं |
गुणाणं तु सहस्साइ , , धारेयव्वाइ भिक्खुणो ॥
- [६३९] समया सव्वभूएसु , , सत्तुमित्तेसु वा जगे |
पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥
- [६४०] निच्यकालप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं |
भासियव्वं हियं सच्चं , , निच्याउत्तेण दुक्करं ॥
- [६४१] दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स, विवज्जणं |
अणवच्चेसणिज्जस्स, गिणहणा अवि दुक्करं ॥
- [६४२] विरई अबं भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा |
उगं महव्वयं , , बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥
- [६४३] धणधन्नपेसवगेसु, परिगहविवज्जणं |
सव्वारंभपरिच्च्याओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥
- [६४४] चउव्विहे वि आहारे , , राईभोयणवज्जणा |

	सन्निहीसंचओ चेव ,	वजजेयव्वो सुदुक्करं ॥
[६४५]	छुहा तण्हा य सीउण्हं ,	दंसमसगा य वेयणा
	अक्कोसा दुक्खसेज्जा य ,	तणफासा जल्लमेव य ॥
[६४६]	तालणा तज्जणा चेव ,	वहबंधपरीसहा
	दुक्खं भिक्खायरिया ,	जायणा य अलाभया ॥
[६४७]	कावोया जा इमा वित्ती	, केसलोओ य दारुणो
	दुक्खं बंभव्यं घों ,	धारेउं य महप्पणो ॥
[६४८]	सुहोइओ तुमं पुत्ता !	सुकुमालो सुमज्जिओ
	न हुसी पभू तुमं पुत्ता	! सामण्णमनुपालिया ॥
[६४९]	जावज्जीवमविस्सामो,	गुणाणं तु महब्भरो
	गुरुओ लोहभारु व्व ,	जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥
[६५०]	आगासे गंगसोउ व्व ,	पडिसोउ व्व दुत्तरो

अञ्जायणं-१९

	बाहाहि सागरो चेव ,	तरियव्वो य गुणोदही ॥
[६५१]	वालुयाकवलो चेव ,	निरस्साए उ संजमे
	असिध्धारागमनं चेव ,	दुक्करं चरिउं तवो ॥
[६५२]	अहीं वेगं तदिड्डीए,	चरित्ते पुत्त ! दुक्करे
	जवा लोहमया चेव ,	चावेयव्वा सुदुक्करं ॥
[६५३]	जहा अग्गिसिहा दित्ता	, पाउं होइ सुदुक्करा
	तहा दुक्करं करेउं जे	, तारुण्णे समणत्तणं ॥
[६५४]	जहा दुक्खं भरेउं जे	, होइ वायस्स कोत्थलो
	तहा दुक्खं करेउं जे	, कीवेण समणत्तणं ॥
[६५५]	जहा तुलाए तोलेउं	, दुक्करो मं दरो गिरी
	तहा निहुयं नीसंकं	, दुक्करं समणत्तणं ॥
[६५६]	जहा भुयाहिं तरिउं	, दुक्करं रयणायरो
	तहा अ नुवसंतेणं,	दुक्करं दमसागरो ॥
[६५७]	भुंज माणुस्सए भोगे	, पंचलक्खणए तुमं
	भुत्तभोगी तओ जाया	! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥
[६५८]	सो बिंतऽम्मापियरो	, एवमेयं जहा फुडं
	इह लोए निष्पिवासस्स	, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥
[६५९]	सारीरमानसा चेव	, वेयणाओ अनं तओ
	मए सोढाओ भीमाओ	, असइं दुक्खभयाणि य ॥
[६६०]	जरामरणकांतारे,	चाउरंते भयागरे
	मए सोढाणि भीमाणि	, जम्माणि मरणाणि य ॥
[६६१]	जहा इहं अग नी उण्हो	, एत्तोऽनंतगुणो तहिं

	नरएसु वेयणा उण्हा ,	अस्साया वेइया मया ॥	
[६६२]	जहा इमं इहं सीयं ,	एत्तोऽनंतगुणो तहिं	
	नरएसु वेयणा सीया ,	अस्साया वेइया मए ॥	
[६६३]	कंदंतो कंदुकं भीसु,	उद्धपाओ अहोसिरो	
	हुयासणे जलं तंमि,	पक्कपुव्वो अ नंतसो ॥	
[६६४]	महादवगिगसंकासे,	मरुंमि वइरवालुए	
	कलंबवालुयाए य ,	दड्हपुव्वो अ नंतसो ॥	
[६६५]	रसंतो कंदुकं भीसु,	उड्ढं बद्धो अबं धवो	
	करवत्तकरकयाईहिं,	छिन्नपुव्वो अ नंतसो ॥	
[६६६]	अइतिक्खकंटगाइणे,	तुंगे सिं बलिपायवे	
	खेवियं पास बद्धेणं,	कड्ठोकड्ठाहिं दुक्करं ॥	
[६६७]	महाजंतेसु उच्छू वा ,	आरसंतो सुभेरवं	

अज्ञायणं-१९

	पीडिओ मि सकम्मेहिं ,	पावकम्मो अ नंतसो ॥	
[६६८]	कूवंतो कोलसुणएहिं ,	सामेहिं सबलेहि य	
	पा डिओ फालिओ छिन्नो ,	विष्फुरंतो अ नेगसो ॥	
[६६९]	असीहिं अयसिवण्णाहिं ,	भल्लेहिं पट्टिसेहि य	
	छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य ,	ओइणो पावकम्मुणा ॥	
[६७०]	अवसो लोहरहे जुत्तो ,	जलंते समिलाजुए	
	चोइओ तोत्तजुत्तेहिं ,	रोज्जो वा जह पाडिओ ॥	
[६७१]	हुयासणे जलं तंमि,	चियासु महिसो विव	
	दड्ठो पक्को य अवसो	, पावकम्मेहिं पाविओ ॥	
[६७२]	बला संडासतुं डेहिं,	लोहतुंडेहिं पक्खिहिं	
	विलुतो विलवं तोऽहं,	ढंकगिद्धेहिं नंतसो ॥	
[६७३]	तण्हाकिलंतो धावं तो,	पत्तो वेयरिणं नदिं	
	जलं पाहिं ति चिं तंतो,	खुरधाराहिं विवाइओ ॥	
[६७४]	उण्हाभित्तो संपत्तो ,	असिपत्तं महाव नं	
	असिपत्तेहिं पडं तेहिं,	छिन्नपुव्वो अ नेगसो ॥	
[६७५]	मुग्गरेहिं मुसंढीहिं ,	सूलेहिं मुसलेहिं य	
	गया संभगगत्तेहिं ,	पत्तं दुक्खं अनंतसो ॥	
[६७६]	खुरेहिं तिक्खधारेहिं ,	छुरियाहिं कप्पणीहि य	
	कप्पिओ फालिओ छिन्नो ,	उक्कित्तो य अ नेगसो ॥	
[६७७]	पासेहिं कूडजालेहिं ,	मिओ वा अवसो अहं	
	वाहिओ बद्धरुद्धो वा ,	बहू सो चेव विवाइओ ॥	
[६७८]	गलेहिं मगरजालेहिं ,	मच्छो वा अवसो अहं	

	उल्लिओ फालिओ गहिओ	, मारिओ य अ नंतसो ॥
[६७९]	वीदंसएहिं जालेहि	, लेप्पाहिं सउणो विव
	गहिओ लगो बद्धो य	, मारिओ य अ नंतसो ॥
[६८०]	कुहाडफरसुमाईहिं,	वड्ढईहिं दुमो विव
	कुट्टिओ फालिओ छिन्नो	, तच्छिओ य अ नंतसो ॥
[६८१]	चवेडमुट्टिमाईहिं,	कुमारेहिं अयं पिव
	ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो	, चुणिओ य अ नंतसो ॥
[६८२]	तत्ताइं तं बलोहाइं,	तत्याइं सीसयाणि य
	पाइओ कलकलं ताइं,	आरसंतो सुभेरवं ॥
[६८३]	तुहं पियाइं मंसाइं,	खंडाइं सोल्लगाणि य
	खाइओ मि समंसाइं	, अग्गिवण्णाइऽनेगसो ॥
[६८४]	तुहं पिया सुरा सीहू	, मेरओ य महूणि य

अज्ञायण-१९

	पाइओ मि जलं तीओ,	वसाओ रुहिराणि य ॥
[६८५]	निच्चं भीएण तत्थे ण,	दुहिएण वहिएण य
	परमा दुहसंबद्धा ,	वेयणा वेझ्या मए ॥
[६८६]	तिव्वचंडप्पगाढाओ,	घोराओ अइदुस्सहा
	महब्बयाओ भीमाओ ,	नरएसु वेझ्या मए ॥
[६८७]	जारिसा मा नुसे लोए ,	ताया! दीसं ति वेयणा
	एत्तो अ नंतगुणिया,	नरएसु दुक्खवेयणा ॥
[६८८]	सव्वभवेसु अस्साया ,	वेयणा वेझ्या मए
	निमेसंतरमित्तंपि,	जं साया नत्थि वेयणा ॥
[६८९]	तं बिं तङ्मापियरो,	छंदेणं पुत्त ! पव्वया
	नवरं पुण सामणे ,	दुक्खं निष्पडिकम्मया ॥
[६९०]	सो बेइ अम्मापियरो	, एवमेयं जहा फुडं
	पडिकम्मं को कुणई	, अरणे मियपक्खिणं ? ॥
[६९१]	एगब्बूए अरणे वा	, जहा उ चरई मिगे
	एवं धम्मं चरिस्सामि	, संजमेण तवेण य ॥
[६९२]	जहा मिगस्स आयंको	, महारण्णमि जायई
	अच्चंत रुक्खमूलं मि,	को णं ताहे चिगिच्छई ॥
[६९३]	को वा से ओसहं देइ	, को वा से पुच्छई सुहं
	को से भत्तं च पा नं वा ,	आहरित्तु पणामए ? ॥
[६९४]	जया य से सुही होइ	, तया गच्छई गोयरं
	भत्तपानस्स अ ड्वाए,	वल्लराणि सराणि य ॥
[६९५]	खाइत्ता पाणियं पातं	, वल्लरेहिं सरेहिं य

- मिगचारियं चरित्ताणं , गच्छई मिगचारियं ॥
- [६९६] एवं समुद्धि ए भिक्खु , एवमेव अ नेगए |
मिगचारियं चरित्ताणं , उडँ पक्कमई दिसं ॥
- [६९७] जहा मिए एग अ नेगचारी अनेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुनी गोयरियं पविडे ।
- नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥
- [६९८] मिगचारियं चरिस्सामि , एवं पुत्ता जहासुहं |
अम्मापिऊहिंणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥
- [६९९] मिगचारियं चरिस्सामि , सव्वदुक्खविमोक्खणिं |
तुब्भेहिं अं ब! अ णुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥
- [७००] एवं सो अम्मापियरो , अनुमाणित्ताण बहुविहं |
ममत्तं छिं दई ताहे , महानागो व्व कंचुयं ॥

अज्ञायण-१९

- [७०१] इड्ढी वित्तं च मित्ते य , पुत्तदारं च नायओ |
रेणुयं व पडे लगं , निदुणित्ताण निग्गओ ॥
- [७०२] पंचमहव्वयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो व
सब्भिंतरबाहिरओ, तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥
- [७०३] निम्ममो निरहंकारो , निस्संगो चत्तगारवो |
समो य सव्वभूएसु , तसेसु थावरेसु य ॥
- [७०४] लाभालाभे सुहे दुक्खे , जीविए मरणे तहा |
समो निं दापसंसासु, तहा मा नावमानओ ॥
- [७०५] गारवेसु कसाएसु , दंडसल्लभएसु य |
नियत्तो हाससोगाओ , अनियाणो अबं धणो ॥
- [७०६] अनिस्सओ इहं लोए , परलोए अ निस्सओ |
वासीचंदनकप्पो य , असने अ नसने तहा ॥
- [७०७] अप्पसत्थेहिं दारेहिं , सव्वओ पिहियासवे |
अज्ञाप्पज्ञाणजोगेहिं, पसत्थदमसासने ॥
- [७०८] एवं नाणेण चरणेण , दंसणेण तवेण य |
भावनाहि य सुद्धाहिं , सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥
- [७०९] बहुयाणि उ वासाणि , सामण्णमनुपालिया |
मासिएण उ भत्तेण , सिद्धिं पत्तो अ नुत्तरं ॥
- [७१०] एवं करं ति संबुद्धा , पंडिया पवियक्खणा |
विणियद्वंति भोगेसु , मियापुत्ते जहा रिसी ॥
- [७११] महापभावस्स महाजसस्स मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं |

तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुतं ॥
[७१२] वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं ममत्तबधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अनुत्तरं धारेजज निव्वाणगुणावहं महं ॥ त्ति बेमि
• एगूणवीसइमं अज्ञायणं समग्तं ०

◦ विंसइमं अज्ञायणं - महानियंठिजं ◦

- [७१३] सिद्धाणं नमो किच्चा , संजयाणं च भावओ |
अत्थधम्मगइं तच्चं , अनुसिड्धिं सुषेह मे ॥
- [७१४] पभूयरयणो राया , सेणिओ मगहाहिवो |
विहारजत्तं निज्जाओ , मंडिकुच्छिंसि चेइए ॥
- [७१५] नानादुमलयाइणं, नानापक्खिनिसेवियं |
नानाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नं दनोवमं ॥
- [७१६] तथ सो पासई साहुं , संजयं सुसमाहियं |

अज्ञायण-२०

- निसन्नं रुक्खमूलं मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥
- [७१७] तस्स रुवं तु पासित्ता , राइणो तं मि संजए |
अच्चंतपरमो आसी , अउलो रुवविम्हओ ॥
- [७१८] अहो वण्णो अहो रुवं , अहो अज्जस्स सोमया |
अ हो खं ती अहो मुत्ती , अहो भोगे असंगया ॥
- [७१९] तस्स पाए उ वं दित्ता, काऊण य पयाहिणं |
नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छई ॥
- [७२०] तरुणोऽसि अज्जो ! पव्वइओ , भोगकालंमि संजया |
उव्विओऽसि सामणे , एयमटुं सुषेमि ता ॥
- [७२१] अनाहो मि महारायं ! नाहो मज्जा न विज्जई |
अनु कंपगं सुहिं वावि , कंचि नाभिसमेमहं ॥
- [७२२] तओ सो पहसिओ राया , सेणिओ मगहाहिवो |
एवं ते इ डिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ? ॥
- [७२३] होमि नाहो भयंताणं , भोगे भुंजाहि संजया ! |
मित्तनाईपरिवुडो, मानुस्सं खु सुदुल्लहं ॥
- [७२४] अप्पणा वि अ नाहोऽसि, सेणिया! मगहाहिवा |
अप्पणा अ नाहो सं तो, कस्स नाहो भविस्ससि ? ॥
- [७२५] एवं वुत्तो नरिं दो सो , सुसंभंतो सुविम्हओ |
वयणं अस्सुयपुव्वं , साहुणा विम्हयं नि ओ ॥
- [७२६] अस्सा हत्थी म नुस्सा मे , पुरं अं तेउरं च मे |
भुंजामि मा नुसे भोगे , आणा इस्सरियं च मे ॥

- [७२७] एरिसे सं पयग्गंमि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? मा हु भं तो! मुसं वए ॥
- [७२८] न तुमं जाणे अ नाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ।
जहा अ नाहो भवई , सनाहो वा नराहिव ! ॥
- [७२९] सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अ नाहो भवई , जहा मेयं पवत्तियं ॥
- [७३०] कोसंबी नाम नयरी , पुराण पुरभेयणी ।
तथ आसी पिया मजङ्गं पभूयधनसंचओ ॥
- [७३१] पढमे वए महाराय ! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो , सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥
- [७३२] सत्थं जहा परमतिक्खं , सरीरविवरंतरे ।
आवीलिज्ज अरी कुद्धो , एवं मे अच्छिवेयणा ॥
- [७३३] तियं मे अं तरिच्छं च , उत्तमंगं च पीडई ।

अजङ्गायणं-२०

- इंदासणिसमा घोरा , वेयणा परमदारुणा ॥
- [७३४] उवद्विया मे आयरिया , विज्जामंततिगिच्छगा ।
अबीया सत्थकुसला , मंतमूलविसारया ॥
- [७३५] ते मे तिगिच्छं कुव्वं ति, चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयं ति, एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७३६] पिया मे सव्वसारंपि , दिज्जाहि मम कारणा ।
य दुक्खा विमोएइ , एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७३७] माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहद्विया ।
न य दुक्खा विमोएइ , एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७३८] भायरो मे महाराय ! सगा जेट्क निट्गा ।
न य दुक्खा विमोयं ति, एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७३९] भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्क निट्गा ।
न य दुक्खा विमोयं ति, एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७४०] भारिया मे महाराय ! अनुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नय नेहिं, उरं मैं परिसिंचई ॥
- [७४१] अन्नं पा नं च णहाणं च , गंधमल्लविलेवणं ।
मए नायमनायं वा , सा बाला नोवभुंजई ॥
- [७४२] खणं पि मे महाराय ! पासाओ मे न फिट्वई ।
न य दुक्खा विमोएइ , एसा मजङ्ग अ नाहया ॥
- [७४३] तओऽहं एवमाहंसु , दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
वेयणा अ नुभवितं जे , संसारंमि अ नंतए ॥

- [७४४] सयं च जइ मुंच्चेज्जा , वेयणा विउला इओ |
खंतो दं तो निरारं ओ, पव्वए अ नगारियं ||
- [७४५] एवं च चिं तइत्ताणं, पासुत्तो मि नराहिवा ! |
परीयटुंतीए राईए , वेयणा मे खयं गया ||
- [७४६] तओ कल्ले पभायं मि, आपुच्छित्ताण बं धवे |
खंतो दं तो निरारं ओ, पव्वइओ अन गारियं ||
- [७४७] ततोऽहं नाहो जाओ , अप्पणो य परस्स य |
सव्वेसिं चेव भ्रूयाणं , तसाणं थावराण य ||
- [७४८] अप्पा नई वेयरणी , अप्पा मे कूडसामली |
अ प्पा कामदुहा धे नू, अप्पा मे नं दनं व नं ||
- [७४९] अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य |
अ प्पा मित्तममित्तं च , दुष्पट्टिय सुपट्टिओ ||
- [७५०] इमा हु अन्ना वि अ नाहया निवा! तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि |

अजङ्गायणं-२०

- नि यंठधम्मं लहीयाण वी जहा , सीयंति एगे बहुकायरा नरा ||
- [७५१] जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ , सम्मं च नो फासयई पमाया |
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्दा , न मूलओ छिन्नइ बं धनं से ||
- [७५२] आउत्तया जस्स न अत्थि काइ , इरियाए भासाए तहेसणाए |
आयाणनिक्खेवदुगुँछणाए, न वीरजायं अ नुजाइ मग्गं ||
- [७५३] चिरं पि से मुं डरुई भवित्ता , अथिरव्वए तवनियमेहिं भट्ठे |
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता , न पारए होइ हु संपराए ||
- [७५४] पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे , अयंतिए कूडकहाव ने वा |
राढामणी वेरुलियप्पगासे , अमहग्घए होइ हु जाणएसु ||
- [७५५] कुसीललिंगं इह धारइत्ता , इसिजङ्गयं जीविय बूहइत्ता |
असंजए संजय लप्पमाणे, विनिग्धायमागच्छइ से चिरंपि ||
- [७५६] विसं तु पीयं जह कालकूडं , हणाइ सत्थं जह कुगगहीयं |
ए सो वि धम्मो विसओव वन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ||
- [७५७] जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे , निमित्तकोऊहलसंपगाढे |
कुहेडविज्जासवरदारजीवी, न गच्छई सरणं तं मि काले ||
- [७५८] तमंतमेषोव उ से असीले , सया दुही विष्परिया सुवेइ |
संधावई नरगतिरिक्खजोणि , मोनं विराहेत्तु असाहुरुवे ||
- [७५९] उद्देसियं कीयगडं नियागं , न मुंचई किंचि अ नेसणिज्जं |
अ रगी विवा सव्वभक्खी भवित्ता , इत्तो चुए गच्छइ कहु पावं ||
- [७६०] न तं अरी कंठ छेत्ता करे इ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा |
से नाहि इं मच्चुमुहं तु पत्ते , पच्छानुतावेण दयाविहूणो ||

- [੭੬੧] ਨਿਰਤਥਿਆ ਨਗਰੁੰਝ ਤ ਤਸ਼ਸ , ਜੇ ਤਤਮਦੇ ਵਿਵਜਾ ਸਮੇਝ ।
ਇਮੇ ਵਿ ਸੇ ਨਤਿਥ ਪਰਾਂ ਵਿ ਲੋਏ, ਦੁਹਓ ਵਿ ਸੇ ਡਿਜ਼ਜ਼ਿਤ ਤਤਥ ਲੋਏ ॥
- [੭੬੨] ਏਮੇਵਹਾ ਛੰ ਦਕੁਸੀਲਰ੍ਖੇ, ਮਰਗਾਂ ਵਿਰਾਹਿਤੁ ਜਿਣੁਤਮਾਣਾਂ ।
ਕੁਰੀ ਵਿਵਾ ਭੋਗਰਸਾਣੁਗਿਦਾ , ਨਿਰਡਸੋਧਾ ਪਰਿਯਾਵਮੇਝ ॥
- [੭੬੩] ਸੋਚਚਾਣ ਮੇਹਾਵਿ ਸੁਭਾਸਿਧਾਂ ਇਮਾਂ , ਅਨੁਸਾਸਨਾਂ ਨਾਣਗੁਣੋਵਕੇਧਾਂ ।
ਮਰਗਾਂ ਕੁਸੀਲਾਣ ਜਹਾਧ ਸਵਵਾਂ , ਮਹਾਨਿਧਿਠਾਣ ਵਾਏ ਪਹੇਣਾਂ ॥
- [੭੬੪] ਚਰਿਤਮਾਧਾਰਗੁਣਨਿਨਾਏ ਤਾਂਓ , ਅਨੁਤਰਾਂ ਸੰਜਮ ਪਾਲਿਯਾਣਾਂ ।
ਨਿਰਾਸਵੇ ਸੱਖਵਿਧਾਣ ਕਮਮਾਂ , ਤਵੇਝ ਠਾਮਾਂ ਵਿਤਲੁਤਤਮਾਂ ਧੁਵਾਂ ॥
- [੭੬੫] ਏਕੁਗਦਾਂਤੇਵਿ ਮਹਾਤਵੋਧ ਨੇ, ਮਹਾਮੁਨੀ ਮਹਾਪਿੱਨੇ ਮਹਾਧਸੇ
ਮਹਾਨਿਧਿਠਿਜ਼ਮਿਣਾਂ ਮਹਾਸੁਧਾਂ , ਸੇ ਕਾਹਾਏ ਮਹਾਧਾਵਿਤਥਰੇਣਾਂ ॥
- [੭੬੬] ਤੁਝੋ ਧੇਣਿਓ ਰਾਧਾ , ਇਣਮੁਦਾਹੁ ਕਧਿਨਜਲੀ ।
ਅਨਾ ਹਤਤਾਂ ਜਹਾਭੂਧਾਂ , ਸੁਝੂ ਮੇ ਤਕਦੰਸਿਧਾਂ ॥
- [੭੬੭] ਤੁਜ਼ਿਂ ਸੁਲਖਾਂ ਖੁ ਮ ਨੁਸ਼ਸ ਜਮਮਾਂ, ਲਾਭਾ ਸੁਲਦਾ ਧ ਤੁਮੇ ਮਹੇਸੀ ! ।

ਅਜ਼ਾਯਣ-੨੦

- ਤੁਬੈ ਸਨਾਹਾ ਧ ਸਬਾਂ ਧਵਾ ਧ , ਜਾਂ ਭੈ ਠਿਆ ਮਰਗੇ ਜਿ ਨੁਤਤਮਾਣਾਂ ॥
- [੭੬੮] ਤਾਂ ਸਿ ਨਾਹੋ ਅ ਨਾਹਾਣਾਂ, ਸਵਵਭੂਧਾਣ ਸੰਜਯਾ ।
ਖਾਮੇਮਿ ਤੇ ਮਹਾਭਾਗ ! ਇਚਾਮਿ ਅ ਨੁਸਾਸਿਤਾਂ ॥
- [੭੬੯] ਪੁਚਿਛਊਣ ਮਾਂ ਤੁਬੈਂ , ਝਾਣਵਿਗਧਾਓ ਧ ਜੋ ਕਾਂਓ ।
ਨਿਮੰਤਿਧਾ ਧ ਭੋਗੇਹਿਂ , ਤਾਂ ਸਵਵਾਂ ਮਰਿਸੇਹਿ ਮੇ ॥
- [੭੭੦] ਏਵਾਂ ਥੁਣਿਤਾਣ ਸੇ ਰਾਧਸੀਹੋ , ਅਨਗਾਰਸੀਹੁ ਪਰਮਾਇ ਭਤੀਏ ।
ਸਾਓਰਾਹੋ ਧ ਸਪਰਿਧਿਣੋ ਸਬਾਂਧਵੋ, ਧਮਮਾਨੁਰਤਤੋ ਵਿਮਲੇਣ ਚੇਯਸਾ ॥
- [੭੭੧] ਊਸਸਿਧਾਰੋਮਕ੍ਰਾਵੋ, ਕਾਊਣ ਧ ਪਧਾਹਿਣਾਂ ।
ਅਭਿਵੰਦਿਤੁਣ ਸਿਰਸਾ , ਅਇਆਓ ਨਰਾਹਿਵੋ ॥
- [੭੭੨] ਇਧਰੋ ਵਿ ਗੁਣਸਮਿਦ੍ਧੋ, ਤਿਗੁਤਿਗੁਤਤੋ ਤਿਦੰਡਵਿਰਾਓ ਧ ।
ਵਿਹਗ ਇਵ ਵਿ਷ਪੁਸਕਕੋ , ਵਿਹਰਇ ਵਸੁਹੁ ਵਿਗਧਮੋਹੋ ॥ ਤਿਤ ਬੇਮਿ
• ਵਿੱਸਇਮਾਂ ਅਜ਼ਾਯਣਾਂ ਸਮੱਮਤਾਂ •

◦ ਏਗਵਿੱਸਇਮਾਂ ਅਜ਼ਾਯਣਾਂ - ਸਮੁਦ੍ਰਪਾਲੀਧਾਂ ◦

- [੭੭੩] ਚੰਪਾਏ ਪਾਲਿਏ ਨਾਮ , ਸਾਵਏ ਆਸਿ ਵਾਣਿਏ ।
ਮਹਾਵੀਰਸ਼ਸ ਭਗਵਾਓ , ਸੀਸੇ ਸੋ ਤ ਮਹਾਪਣੋ ॥
- [੭੭੪] ਨਿਗਨਥੇ ਪਾਵਧਾਣੇ , ਸਾਵਏ ਸੇ ਵਿ ਕੋਵਿਏ ।
ਪੋਏਣ ਵਕਹਰਾਂ ਤੇ, ਪਿਹੁੰਡੇ ਨਗਰਮਾਗਏ ॥
- [੭੭੫] ਪਿਹੁੰਡੇ ਵਕਹਰਾਂ ਤਸ਼ਸ, ਵਾਣਿਓ ਦੇ ਝ ਧੂਧਰਾਂ ।
ਤਾਂ ਸਸਤਾਂ ਪਇਗਿਜ਼ਾ , ਸਦੇਸਮਹ ਪਤਿਥਾਓ ॥
- [੭੭੬] ਅਹ ਪਾਲਿਧਸ਼ਸ ਘਰਣੀ , ਸਮੁਦੰਸਿ ਪਸਵੰਡੇ ।

	अह बालए तहिं जाए ,	समुद्धपालि त्ति नामए ॥
[७८७]	खेमेण आगए चं पं ,	सावए वाणिए घरं ।
	संवङ्गडई धरे तस्स ,	दारए से सुहोइए ॥
[७८८]	बावत्तरी कलाओ य ,	सिक्खई नीइकोविए ।
	जोव्वणेण य संपन्ने ,	सुरुवे पियदंसणे ॥
[७८९]	तस्स रुववइं भज्जं ,	पिया आणेइ रुविणि ।
	पासाए कीलए रम्मे ,	देवो दोगुं दओ जहा ॥
[७८०]	अह अन्नया कयाई ,	पासायालोयणे ठि ओ ।
	वजङ्ग मं डणसोभागं,	वजङ्गं पासइ वजङ्गं ॥
[७८१]	तं पासिऊण संविर्गो ,	समुद्धपालो इणमब्बवी ।
	अहोऽसुभाण कम्माणं ,	निज्जाणं पावगं इमं ॥
[७८२]	संबुद्धो सो तहिं भगवं ,	परमसंवेगमागओ ।
	आपुच्छऽम्मापियरो,	पव्वए अ नगारियं ॥

अजङ्गायणं-२१

- [७८३] जहित्तु सगं थ महाकिलेसं, महंतमोहं कसिणं भया णगं । परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा , वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥
- [७८४] अहिंस सच्चं च अतेणगं च , तत्तो य बं भं अपरिग्गहं च । पडिवजिज्या पंच महव्वयाणि , चरिज्ज धम्मं जि नदेसियं विदू ॥
- [७८५] सव्वेहिं भूएहिं दया नुकंपी, खंतिक्खमे संजयबं भयारी । सावज्जजोंग परिवज्जयं तो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥
- [७८६] कालेण कालं विहरेज्ज रड्डे , बलाबलं जाणिय अप्पणो य । सीहो व सद्वेण न सं तसेज्जा वयजोग सुच्चा न असं भमाहु ॥
- [७८७] उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा , पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा । न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा , न यावि पूयं गरहं च संजए ॥
- [७८८] अनेगच्छंदामिह मा नवेहिं, जे भावओ से पगरेइ भिक्खू । भयभेरवा तत्थ उइं ति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥
- [७८९] परीसहा दुव्विसहा अ नेगे, सीयंति जत्था बहुकायरा नरा । से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खु , संगामसीसे इव नागराया ॥
- [७९०] सीओसिणा दंसमसा य फासा , आयंका विविहा फुसं ति देहं । अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा , रयाइ खेवेज्ज पुराक डाइ ॥
- [७९१] पहाय रागं च तहेव दोसं , मोहं च भिक्ख सययं वियक्खणो । मेरु व्व वाएण व अकं पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥
- [७९२] अणुन्नए नावणए महेसी , न यावि पूयं गरहं च संजए । से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए , निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥
- [७९३] अरझरझसहे पहीणसंथवे , विरए आयहिए पहाणवे ।

परमदृपएहिं चिद्वई , छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥

[७९४] विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई , निरोवलेवाइं असंथडाइं ।

इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं , काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥

[७९५] सन्नाणनाणोवगए महेसी , अनुत्तरं चरितं धम्मसंचयं ।

अनुत्तरे नाणधरे जसंसी , ओभासई सुरिए वंs तलिक्खे ॥

[७९६] दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं , निरंगणे सव्वओ विष्पमुकके ।

तरित्ता समुद्रं व महाभवोघं, समुद्रपाले अपुणागमं गए ॥ त्तिबेमि

◦ एगविंसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ बाइसइमं अजङ्गयणं - रहनेमिज्जं ◦

[७९७] सोरियपुरंमि नयरे , आसि राया महि इद्धिए ।

वसुदेव त्ति नामेण , रायलक्खणसंजुए ॥

[७९८] तस्स भज्जा दुवे आसी , रोहिणी देवई तहा ।

अजङ्गयणं-२२

तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता , इड्डा रामकेसवा ॥

[७९९] सोरियपुरंमि नयरे , आसि राया महि इद्धिए ।

समुद्विजए नामं , रायलक्खणसंजुए ॥

[८००] तस्स भज्जा सिवा नाम , तीसे पुत्तो महायसो ।

भगवं अरि डुनेमि त्ति , लोगनाहे दमीसरे ॥

[८०१] सोऽरिद्वनेमिनामो उ , लक्खणस्सरसंजुओ ।

अद्वसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥

[८०२] वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झासोयरो ।

तस्स रायमईकन्नं , भजं जायई केसवो ॥

[८०३] अह सा रायवरकन्ना , सुसीला चारुपेहणी ।

सव्वलक्खणसंपन्ना, विज्जुसोयामणिष्पभा ॥

[८०४] अहाह जणओ तीसे , वासुदेवं महि इद्धियं ।

इहागच्छउ कुमारो, जो से कन्नं द दामिहं ॥

[८०५] सव्वोसहीहिं णहविओ , कयकोउयमंगलो ।

दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥

[८०६] मत्तं च गं धहत्तिं च , वासुदेवस्स जे डुगं ।

आरुढो सोहए अहियं , सिरे चूडामणी जहा ॥

[८०७] अह ऊसिएण छत्तेण , चामराहि य सोहिए ।

दसारचक्केण तओ, सव्वओ परिवारिओ ॥

[८०८] चउरंगिणीए से नाए, रइयाए जहककमं ।

तुरियाण सन्निनाएण , दिव्वेणं गग नं फुसे ॥

- [८०९] एयारिसाए इ ड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाइ य ।
नियगाओ भव नाओ, निजाओ वण्हिपुंगवो ॥
- [८१०] अह सो तत्थ निजजं तो, दिस्स पा ने भयद्वए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च , सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥
- [८११] जीवियं तु सं पत्ते, मंसद्वा भक्खियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने , सारहिं इणमब्बवी ॥
- [८१२] कस्स अद्वा इमे पाणा , एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च , सन्निरुद्धा य अच्छहिं ? ॥
- [८१३] अह सारही तओ भणई , एए भद्वा उ पाणिणो ।
तुज्जं विवाहकज्जं मि, भोयावेतं बहुं ज नं ॥
- [८१४] सोऊण तस्स वयणं , बहुपाणिविनासणं ।
चिंतेइ से महापन्नो , सानुक्कोसे जिएहिं ऊ ॥
- [८१५] जइ मज़्ज़ा कारणा एए , हम्मंति सुबहू जिया ।

अज़ङ्गायणं-२२

- न मे एयं तु निस्सेसं , परलोगे भविस्सई ॥
- [८१६] सो कुं डलाण जुयलं , सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि , सारहिस्स पणामए ॥
- [८१७] मनपरिणामो य कओ , देवा य जहोइयं समोइणा ।
सव्वड्ढीइ सपरिसा , निक्खमणं तस्स काउं जे ॥
- [८१८] देवमनुस्सपरिवुडो, सिबियारयणं तओ समारुढो ।
निक्खमिय बारगाओ , रेवययंमि द्विओ भगवं ॥
- [८१९] उज्जाणं संपत्तो , ओइणो उत्तमाउ सीयाओ ।
साहस्सीइ परिवुडो , अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥
- [८२०] अह से सुगं धगंधीए, तुरियं मउकुंचिए ।
सयमेव लुंचई केसे , पंचमुडीहिं समाहिओ ॥
- [८२१] वासुदेवो य णं भण ई, लुत्तकेसं जिइं दियं ।
इच्छियमनोरहं तुरियं , पावसु तं दमीसरा ॥
- [८२२] नाणेणं दंसणेणं च , चरित्तेणं तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए , वड्ढमाणो भवाहि य ॥
- [८२३] एवं ते रामकेसवा , दसारा य बहू ज ना ।
अरिदुनेमिं वं दित्ता, अभिगया बारगापुरिं ॥
- [८२४] सोऊण रायकन्ना , पव्वज्जं सा जि नस्स उ ।
नीहासा य निरा नंदा, सोगेण उ समु च्छिया ॥
- [८२५] राईमई विचिं तेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्छत्ता , सेयं पव्वइउं मम ॥

- [८२६] अह सा भमरसं निभे, कुच्चफणगपसाहिए ।
सयमेव लुंचई केसे , धिइमंता ववस्सिया ॥
- [८२७] वासुदेवो य णं भणइ , लुत्तकेसं जिइं दियं ।
संसारसागरं घोरं , तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥
- [८२८] सा पव्वइया सं ती, पव्वावेसी तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव , सीलवंता बहुस्सुया ॥
- [८२९] गिरिं रेवतयं जं ती, वासेणुल्ला उ अं तरा ।
वासंते अं धयारंमि, अंतो लयणस्स साठिया ॥
- [८३०] चीवराइं विसारं ती, जहा जाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भगगचित्तो , पच्छा दिड्डो य तीइ वि ॥
- [८३१] भीया य सा तहिं द हुं, एगंते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउ संगोप्फं , वेवमाणी निसीयई ॥
- [८३२] अह सोऽवि रायपुत्तो , समुद्दविजयंगओ ।

अजङ्गायणं-२२

- भीयं पवेवियं द हुं, इमं वक्कं उदाहरे ॥
- [८३३] रहनेमी अहं भद्वे ! सुरुवे चारुभासिणी ! ।
ममं भयाहि सुत नु, न ते पीला भविस्सई ॥
- [८३४] एहि ता भुंजिमो भोए , माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
भुत्तभोगी तओ पच्छा , जिनमगं चरिस्सिमो ॥
- [८३५] दहुण रहनेमिं तं , भग्नुज्जोयपराजियं ।
राइमई असं भंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥
- [८३६] अह सा रायवरकन्ना , सुड्डिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च , रक्खमाणी तयं वए ॥
- [८३७] जइ सि रुवेण वेसमणो , ललिएण नलकुब्बरो ।
तहा वि ते न इच्छामि , जइसि सक्खं पुरंदरो ॥
- [८३८] धिरत्थु तेऽजसोकामी , जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेतं , सेयं ते मरणं भवे ॥
- [८३९] अहं च भोगरायस्स , तं च सि अं धगवण्हिणो ।
मा कुले गं धणा होमो , संजमं निहुओ चर ॥
- [८४०] जइ तं काहिसि भावं , जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो , अद्विअप्पा भविस्ससि ॥
- [८४१] गोवालो भं डवालो वा , जहा तद्वव नि स्सरो ।
एवं अ निस्सरो तं पि , सामण्णस्स भविस्ससि ॥
- [८४२] कोहं मा नं निगिण्हित्ता , मायं लोभं च सव्वसो ।
इंदियाइं वसे काउं , अप्पाणं उवसंहरे ॥

- [४३] तीसे सो वयणं सोच्चा , , संजयाए सुभासियं ।
अंकुरेण जहा नागो , , धम्मे संपदिवाइओ ॥
- [४४] मनगुत्तो वयगुत्तो , , कायगुत्तो जिइं दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे , , जावज्जीवं दद्व्वाओ ॥
- [४५] उगं तवं चरित्ताणं , , जाया दो न्नि वि केवली ।
सवं कम्मं खवित्ताणं , , सिद्धि पत्ता अ नुत्तरं ॥
- [४६] एवं करें ति संबुद्धा , , पंडिया पवियक्खणा ।
विणियद्वृत्ति भोगेसु , जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ त्ति बेमि
◦ बाइसइमं अज्ञायणं सम्मतं ०

◦ तेविंसइमं अज्ञायणं-केसिगोयमिज्जं ◦

- [४७] जिणे पासि त्ति नामेण , , अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू , , धम्मतित्थयरे जि ने ॥

अज्ञायण-२३

- [४८] तस्स लोगपईवस्स , , आसि सीसे महायसे ।
केसी कुमारसमणे , , विज्जाचरणपारगे ॥
- [४९] ओहिनाणसुए बुध्धे , , सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयं ते, , सावत्थिं पुरमागए ॥
- [५०] तिंदुयं नाम उज्जाणं , , तंमि नगरमं डले ।
फासुए सिज्जसंथारे , , तत्थ वासमुवागए ॥
- [५१] अह तेणेव कालेण , , धम्मतित्थयरे जि ने ।
भगवं वद्धमाणु त्ति , , सव्वलोगंमि विस्सुए ॥
- [५२] तस्स लोगपईवस्स , , आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नामं , , विज्जाचरणपारए ॥
- [५३] बारसंगविऊ बुद्धे , , सीससंघसमाउले ।
गामानुगामं रीयं ते, , सेऽवि सावत्थिमागए ॥
- [५४] कोट्टगं नाम उज्जाणं , , तंमी नगरमं डले ।
फासुए सिज्जसंथारे , , तत्थ वासमुवागए ॥
- [५५] केसी कुमारसमणे , , गोयमे य महायसे ।
उभओऽवि तत्थ विहरिंसु , , अल्लीणा सुसमाहिया ॥
- [५६] उभओ सीससंघाणं , , संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिं ता समुप्पन्ना , , गुणवंताण ताइणं ॥
- [५७] केरिसो वा इमो धम्मो , , इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥
- [५८] चाउज्जामो य जो धम्मो , , जो इमो पंचसिक्खओ ।

देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामु नी ॥
 [८६९] अचेलओ य जो धम्मो , जो इमो सं तरुत्तरो ।
 एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥
 [८६०] अह ते तत्थ सीसाणं , विन्नाय पवित्रिकियं ।
 समागमे कयमई , उभओ केसिगोयमा ॥
 [८६१] गोयमे पडिरुव न्न् सीससंघसमाउले ।
 जेडुं कुलमवेक्खं तो, तिंदुयं व नमागओ ॥
 [८६२] केसी कुमारसमणे , गोयमं दिस्समागयं ।
 पडिरुवं पडिवतिं , सम्मं संपडिवज्जई ॥
 [८६३] पलालं फासुयं तत्थ , पंचमं कुसतणाणि य ।
 गोयमस्स निसेज्जाए , खिप्पं संपणामए ॥
 [८६४] केसी कुमारसमणे , गोयमे य महायसे ।
 उभओ निसण्णा सोहंति, चंदसूरसमप्पभा ॥

अज्ञायणं-२३

[८६५] समागया बहू तत्थ , पासंडा कोउगा मिया ।
 गिहत्थाणं अ नेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥
 [८६६] देवदानवगंधवा, जक्खरक्खसकिंनरा ।
 अदिस्साणं च भूयाणं , आसी तत्थ समागमो ॥
 [८६७] पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसिं बुवं तं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥
 [८६८] पुच्छ भं ते! जहिच्छं ते , केसिं गोयममब्बवी ।
 तओ केसी अणुन्नाए , गोयमं इणमब्बवी ॥
 [८६९] चाउज्जामो य जो धम्मो , जो इमो पंचसि किखओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण , पासेण य महामु नी ॥
 [८७०] एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ।
 धम्मे दुविहे मेहावी , कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥
 [८७१] तओ केसिं बुवं तं तु , गोयमो इणमब्बवी ।
 पन्ना समिक्खए धम्मं , तत्तं तत्तवि निच्छियं ॥
 [८७२] पुरिमा उज्जुजडा उ , वंकजडा य पच्छिमा ।
 मज्जिमा उज्जुपन्ना उ , तेण धम्मे दुहा कए ॥
 [८७३] पुरिमाणं दुविसोज्ज्ञो उ , चरिमाणं दुर नुपालओ ।
 कप्पो मज्जिमगाणं तु , सुविसोज्ज्ञो सुपालओ ॥
 [८७४] साहु गोयम! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्जङ्ग , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
 [८७५] अचेलगो य जो धम्मो , जो इमो सं तरुत्तरो ।

- देसिओ वद्धमाणेण , पासेण य महाजसा ॥
- [८७६] एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ।
लिंगे दुविहे मेहावी , कहं विष्पच्चओ न ते ? ॥
- [८७७] तओ केसि बुवाणं तु , गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म , धम्मसाहणमिच्छयं ॥
- [८७८] पच्चयत्थं च लोगस्स , नानाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च , लोगे लिंगपओयणं ॥
- [८७९] अह भवे पइन्ना उ , मोकखसब्भूयसाहणा ।
नाणं च दंसणं चेव , चरित्तं चेव निच्छए ॥
- [८८०] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्जं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [८८१] अनेगाणं सहस्राणं , मज्जे चिद्वसि गोयमा ! ।
ते य ते अहिगच्छं ति, कहं ते निजिया तुमे ? ॥

अज्ञायणं-२३

- [८८२] एगे जिए जिया पंच , पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं , सव्वसत्तू जिणामऽहं ॥
- [८८३] सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसि बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥
- [८८४] एगऽप्पे अजिए सत्तू , कसाया इं दियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं , विहरामि अहं मु नी ॥
- [८८५] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्जं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [८८६] दीसंति बहवे लोए , पासबद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ , कहं तं विहरसी मु नी! ॥
- [८८७] ते पासे सव्वसो छित्ता , निहंतूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ , विहरामि अहं मु नी! ॥
- [८८८] पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसि बुवंतं तु , गोयमो इणम ब्बवी ॥
- [८८९] रागद्वोसादओ तिव्वा , नेहपासा भयंकरा ।
ते छिं दित्ता जहानायं , विहरामि जहक्कमं ॥
- [८९०] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्जं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [८९१] अंतो हिअयसंभूया, लया चिद्वइ गोयमा ! ।
फलेइ विसभक्खी ण, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥
- [८९२] तं लयं सव्वसो छित्ता , उद्धरित्ता समूलियं ।

विहरामि जहानायं , मुक्को मि विसभक्खणं ॥

[८९३] लया य इङ् का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।

तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥

[८९४] भवतण्हा लया वुत्ता , शीमा शीमफलोदया ।

तमुच्छित्तु जहानायं , विहरामि महामु नी! ॥

[८९५] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसुं गोयमा ! ॥

[८९६] संपज्जलिया घोरा , अग्नी चि दुइ गोयमा ! ।

जे डहं ति सरीरथे , कहं विजङ्गाविया तुमे ? ॥

[८९७] महामेहप्पसूयाओ, गिजङ्गा वारि जलुत्तमं ।

सिंचामि सयं देहं , सित्ता नो डहं ति मे ॥

[८९८] अग्नी य इङ् के वुत्ता , केसी गोयममब्बवी ।

तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥

अजङ्गायणं-२३

[९९] कसाया अग्निगणो वुत्ता , सुयसीलतवो जलं ।

सुयधाराभिहया सं ता, भिन्ना हु न डहं ति मे ॥

[१००] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसुं गोयमा ! ॥

[१०१] अयं साह स्सिओ शीमो , दुड्स्सो परिधावई ।

जंसि गोयम ! आरुढो , कहं तेण न हीरसि ? ॥

[१०२] पधावंतं निगिण्हामि , सुयरस्सीससमाहियं ।

न मे गच्छइ उम्मगं , मगं च पडिवज्जई ॥

[१०३] आसे य इङ् के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥

[१०४] मनो साह स्सिओ शीमो , दुड्स्सो परिधावई ।

तं सम्मं तु निगिण्हामि , धम्मसिक्खाइ कं थगं ॥

[१०५] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसुं गोयमा ! ॥

[१०६] कुप्पहा बहवे लोए , जेहिं नासं ति जं तुणो ।

अद्वाणे कहं वट्ठं तो, तं न नाससि गोयमा ! ? ॥

[१०७] जे य मग्गेण गच्छति , जे य उम्मगगपट्टिया ।

ते सव्वे वेइया मजङ्गं , ते न नस्सामहं मु नी! ॥

[१०८] मग्गे य इङ् के वुत्ते , केसी गोयममब्बवी ।

तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥

[१०९] कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मगगपट्टिया ।

- सम्मगं तु जि नकखायं, एस मगे हि उत्तमे ॥
- [११०] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [१११] महाउदगवेगेण, वुजङ्गमाणाण पाणिणं ।
सरणं ग इं पड्डा य , दीवं कं मन्नसी ? मुनी! ॥
- [११२] अतिथ एगो महादीवो , वारिमजङ्गे महालओ ।
महाउदगवेगस्स, गई तथ न विज्जई ॥
- [११३] दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥
- [११४] जरामरणवेगेण, वुजङ्गमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पड्डा य , गई सरणमुत्तमं ॥
- [११५] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥

अजङ्गायण-२३

- [११६] अन्नवंसि महोहंसि , नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारुढो कहं पारं गमिस्ससि ? ॥
- [११७] जा उ अस्साविणी नावा , न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा , सा उ पारस्स गामिणी ॥
- [११८] नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥
- [११९] सरीरमाहु नाव त्ति , जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो , जं तरंति महेसिणो ॥
- [१२०] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [१२१] अंधयारे तमे घोरे , चिट्ठंति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयंमि पाणिणं ॥
- [१२२] उग्गओ विमलो भा नू, सव्वलोयपभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं , सव्वलोयंमि पाणिणं ॥
- [१२३] भानु य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- [१२४] उग्गओ खीणसंसारो , सव्वन्नू जि नभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं , सव्वलोयंमि पाणिणं ॥
- [१२५] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मजङ्गं , तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- [१२६] सारीरमानसे दुख्ये , बजङ्गमाणाण पाणिणं ।

खेमं सिवम नाबाहं, ठाणं किं मन्नसी ? मुनी! ॥

[१२७] अतिथ एगं धुवं ठाणं लोगरगं मि दुरारुहं ।
जत्थ नतिथ जरामच्चू , वाहिणो वेयणा तहा ॥

[१२८] ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु , गोयमो इणमब्बवी ॥

[१२९] निव्वाणं ति अबाहं ति , सिद्धी लोगरगमेव य ।
खेमं सिवं अ नाबाहं, जं तरंति महेसिणो ॥

[१३०] तं ठाणं सासयं वासं , लोगरगंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयं ति, भवोहंतकरा मु नी ॥

[१३१] साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसायातीत ! सव्वसुत्तमहोयही ॥

[१३२] एवं तु संसए छिन्ने , केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवंदित्ता सिरसा , गोयमं तु महायसं ॥

अजङ्गयणं-२३

[१३३] पंचमहव्ययं धम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमं मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥

[१३४] केसीगोयमओ निच्चं , तंमि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्कसो, महत्थत्थविनिच्छओ ॥

[१३५] तोसिया परिसा सव्वा , सम्मग्गं समुवट्टिया ।
संथुया ते पसीयं तु, भयवं केसिगोयमे ॥ त्ति बेमि
◦ तेविंसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ चउविंसइमं अजङ्गयणं - पवयणमाया ◦

[१३६] अद्व पवयणमायाओ , समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ , तओ गुत्तीउ आहिआ ॥

[१३७] इरियाभासेसणाऽदाने, उच्चारे समि ई इय ।
मनगुत्ती वयगुत्ती , कायगुत्ती य अद्वमा ॥

[१३८] एयाओ अद्व समिईओ , समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं , मायं जत्थ उ पवयणं ॥

[१३९] आलंबणेण कालेण , मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥

[१४०] तत्थ आलं बणं नाणं , दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते , मग्गे उप्पहवज्जए ॥

[१४१] दव्वओ खेत्तओ चेव , कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउविहा वुत्ता , तं मे कित्तयओ सुण ॥

- [१४२] दव्वओ चक्खुसा पेहे , जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव री एज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥
- [१४३] इंदियत्थे विवज्जित्ता , सज्जायं चेव पं चहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे , उवउत्ते रियं रिए ॥
- [१४४] कोहे मा ने य मायाए , लोभे य उवउत्तया ।
हासे भये मोहरिए , विकहासु तहेव य ॥
- [१४५] एयाइं अट्ठ ठाणाइं , परिवज्जितु संजए ।
असावज्जं मियं काले , भासं भासिज्ज पन्नवं ॥
- [१४६] गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥
- [१४७] उग्गमुप्पायणं पढमे , बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं , विसोहेज्ज जयं जई ॥
- [१४८] अहोवहोवग्गहियं, भंडं दुविहं मु नी ।

अज्जायणं-२४

- गिणहंतो निकिखवं तो वा , पउंजेज्ज इमं विहिं ॥
- [१४९] चक्खुसा पडिलेहित्ता , पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निकिखवेज्जा वा , दुहओऽवि समिए सया ॥
- [१५०] उच्चारं पासवणं , खेलं सिंधाण जल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं , अन्नं वावि तहाविहं ॥
- [१५१] अनावायमसंलोए, अनावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥
- [१५२] अनावायमसंलोए, परस्सऽनुवधाइए ।
समे अज्जुसिरे वाऽवि, अचिरकालकयंमि य ॥
- [१५३] विच्छिन्ने दुरमोगढे , नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥
- [१५४] एयाओ पं च समिईओ , समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ , वोच्छामि अ नुपुञ्चसो ॥
- [१५५] सच्चा तहेव मोसा य , सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य , मनगुत्ति चउव्विहा ॥
- [१५६] संरंभसमारंभे, आरंभे य तहेव य ।
मनं पवत्तमाणं तु , नियत्तेज्ज जयं जई ॥
- [१५७] सच्चा तहेव मोसा य , सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य , वङ्गुत्ती चउव्विहा ॥
- [१५८] संरंभसमारंभे, आरंभे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

- [१५९] ठाणे निसीयणे चेव , तहेव य तुयदृणे ।
उल्लंघणे पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे ॥
- [१६०] सरंभसमारंभे आरं भंमि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु , नियत्तेज्ज जयं जई ॥
- [१६१] एयाओ पंच समिर्झओ , चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणेऽवृत्ता , असुभत्थेसु सव्वसो ॥
- [१६२] एआओ पवयणमाया , जे सम्म आयरे मु नी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा , विष्पसुच्छई पं डिए ॥ त्ति बेमि
◦ चउविंसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ पंचविंसइमं अजङ्गयणं - जणइज्जं ◦

- [१६३] माहणकुलसंभूओ, आसि विष्पो महायसो ।
जायाई जमज न्नंमि, जयघोसे त्ति नामओ ॥

अजङ्गयणं-२७

- [१६४] इंदियगगामनिगगाही, मगगगामी महामु नी ।
गामाणुगगामं रीयंते , पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥
- [१६५] वाणारसीए बहिया , उज्जाणंमि म नोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे , तत्थ वासमुवागए ॥
- [१६६] अह तेणेव कालेण , पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण , जणणं जयइ वेयवी ॥
- [१६७] अह से तत्थ अ नगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स ज णंमि, भिक्खमट्टा उव द्विए ॥
- [१६८] समुवद्वियं तहिं सं तं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं , भिक्खू! जायाहि अन्नओ ॥
- [१६९] जे य वेयविझ विष्पा , जन्नमट्टा य जे दिया ।
जोइसंगविझ जे य , जे य धम्माण पारगा ॥
- [१७०] जे समत्था समुद्धत्तुं , परं अ प्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं , भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥
- [१७१] सो तत्थ एवं पडिसिद्धो , जायगेण महामु नी ।
न वि रु डो न वि तु डो, उत्तमट्टगवेसओ ॥
- [१७२] नऽन्नदुं पाणहेतं वा , नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खण ड्वाए, इमं वयणमब्बवी ॥
- [१७३] नवि जाणासि वेयमुहं , नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च , जं च धम्माण वा मुहं ॥
- [१७४] जे समत्था समुद्धत्तुं , परं अ प्पाणमेव य ।

	न ते तुमं वियाणासि	,	अह जाणासि तो भण ॥
[१७५]	तस्सऽक्खेवपमोक्खं तु	,	अचयंतो तहिं दिओ ।
	सपरिसो पंजली होउं	,	पुच्छई तं महामु नी ॥
[१७६]	वेयाणं च मुहं बूहि	,	बूहि जन्नाणं जं मुहं ।
	नक्खत्ताण मुहं बूहि	,	बूहि धम्माण वा मुहं ॥
[१७७]	जे समत्था समुद्धत्तुं	,	परं अ प्पाणमेव य ।
	एयं मे संसयं सव्वं	,	साहू! कहसु पुच्छिओ ॥
[१७८]	अग्निगुह्तमुहा वेया	,	जन्नद्वी वेयसा मुहं ।
	नक्खत्ताण मुहं चं दो,		धम्माण कासवो मुहं ॥
[१७९]	जहा चं दं गहाईया	,	चिडुंती पंजलीउडा ।
	वंदमाणा नमंसं ता,		उत्तमं म नहारिणो ॥
[१८०]	अजाणगा जन्नवाई	,	विजजामाहणसंपया ।
	मूढा सज्जायतवसा	,	भासच्छन्ना इवऽगिगणो ॥

अजङ्गायणं-२५

[१८१]	जो लोए बं भणो वुत्तो अग्नी	व महिओ जहा ।
	सया कुसलसंदिङ्गं	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१८२]	जो न सज्जइ आगं	तुं, पव्वयंतो न सोय ई ।
	रमइ अज्जवयणं मि,	तं वयं बूम माहणं ॥
[१८३]	जायरूवं जहामदुं	, निदंतमलपावगं ।
	रागदोसभ्याईयं,	तं वयं बूम माहणं ॥
[१८४]	तवस्सियं किसं दं	तं अवचियमंससोणियं ।
	सुव्वयं पत्तनिव्वाणं	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१८५]	तसे पाणे वियाणेत्ता	, संगहेण य थावरे ।
	जो न हिंसइ तिविहेण	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१८६]	कोहा वा जइ वा हासा	, लोहा वा जइ वा भया ।
	मुसं न वयई जो उ	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१८७]	चित्तमंतमचित्तं वा	, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
	न गिणहाइ अदत्तं जे	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१८८]	दिव्वमानुसतेरिच्छं,	जो न सेवइ मेहुणं ।
	मनसा कायवक्केण	तं वयं बूम माहणं ॥
[१८९]	जहा पोमं जले जायं	, नोवलिष्पइ वारिणा ।
	एवं अलित्तं कामेहिं	, तं वयं बूम माहणं ॥
[१९०]	अलोलुयं मुहाजीविं	, अनगारं अकिंचणं ।
	असंसत्तं गिहत्थेसु	तं वयं बूम माहणं ॥
[प्र०]	[जहित्ता पुव्वसंजोगं	, नाइसंगे य बं धवे ।

- जो न सज्जइ भोगेसु , तं वयं बूम माहणं ॥
- [१९१] पसुबंधा सव्ववेया ज दुं च पावकम्मुणा ।
न तं तायं ति दुस्सीलं , कम्माणि बलवं ति हि ॥
- [१९२] नवि मुं डिएण समणो , न ऊँकारेण बं भणो ।
न मु नी रण्णवासेण , कुसचीरेण न तावसो ॥
- [१९३] समयाए समणो होइ , बंभचेरेण बं भणो ।
नाणेण य मु नी होइ , तवेण होइ तावसो ॥
- [१९४] कम्मुणा बं भणो हि , कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वईसो कम्मुणा होइ , सुद्धो हवइ कम्मुणा ॥
- [१९५] एए पाउकरे बुद्धे , जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविनिम्मुकं , तं वयं बूम माहणं ॥
- [१९६] एवं गुणसमाउत्ता , जे भवं ति दिउत्तमा ।
ते समत्था समुद्धतुं , परं अ प्पाणमेव य ॥

अञ्जायणं-२५

- [१९७] एवं तु संसाए छिन्ने , विजयघोसे य माहणे ।
समुदाया तयं तं तु , जयघोसं महामु निं ॥
- [१९८] तुड्हे य विजयघोसे , इणमुदाहु कयंजली ।
माहणतं जहाभ्युं , सुद्धु मे उवदसियं ॥
- [१९९] तुब्बे जइया जन्नाणं , तुब्बे वेयविठु विठु ।
जोइसंगविठु तुब्बे , तुब्बे धम्माण पारगा ॥
- [१०००] तुब्बे समत्था समुद्धतुं , परं अ प्पाणमेव य ।
तयनुगगहं करेह०म्हं , भिक्खेण भिक्खु उत्तमा ॥
- [१००१] न कजं मज्ज भिक्खेण , खिप्पं निक्खमसू दिया ॥
मा भमिहिसि भयाव त्ते, घोरे संसारसागरे ॥
- [१००२] उवलेवो होइ भोगेसु , अभोगी नोवलिप्प इ ।
भोगी भमई संसारे , अभोगी विप्पमुच्चर्झ ॥
- [१००३] उल्लो सु क्को य दो छूढा , गोलया मट्टियामया ।
दोऽवि आवडिया कु इडे, जो उल्लो सोऽत्थ लगर्झ ॥
- [१००४] एवं लगं ति दुम्मेहा , जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लगं ति, जहा से सुक्के गोलए ॥
- [१००५] एवं से विजयघोसे , जयघोसस्स अं तिए ।
अनगारस्स निक्खं तो, धम्मं सोच्चा अ नुत्तरं ॥
- [१००६] खवित्ता पुव्वकम्माइं , संजमेण तवेण य ।
जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अ नुत्तरं ॥ तित बेमि

० पंचविंसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ०

० छव्वीसइमं अजङ्गयणं - सामायारी ०

- [१००७] सामायारिं पवक्खामि , सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
जं चरित्ताण निर्गं था, तिणा संसारसागरं ॥
- [१००८] पढमा आवस्सिया नाम , बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया , चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
- [१००९] पंचमी छं दणा नाम , इच्छाकारो य छ दुओ ।
सत्तमो मिच्छाकारो उ , तहक्कारो य अ दुमो ॥
- [१०१०] अब्भुद्धाणं च नवमं , दसमी उवसंपया ।
सा दसंगा साहूण , सामायारी पवेइया ॥
- [१०११] गमने आवस्सियं कुज्जा , ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणं सयंकरणे , परकरणे पडिपुच्छणं ॥
- [१०१२] छंदणा दव्वजाएण , इच्छाकारो य सारणे ।

अजङ्गयणं-२६

- मिच्छाकारो य निं दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥
- [१०१३] अब्भुद्धाणं गुरुपूया , अच्छणे उवसंपया ।
एवं दुपंचसंजुत्ता , सामायारी पवेइया ॥
- [१०१४] पुत्विलंमि चउब्भाए , आइच्चंमि समुद्धिइ ।
भंडयं पडिलेहित्ता , वंदित्ता य तओ गुरुं ॥
- [१०१५] पुच्छज्जा पंजलिउडो , किं कायव्वं मए इहं ? ।
इच्छं निओइउं भं तै!, वेयावच्चे व सजङ्गाए ॥
- [१०१६] वेयावच्चे निउत्तेण , कायव्वं अगिलायओ ।
सजङ्गाए वा निउत्तेण , सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥
- [१०१७] दिवस्सस चउरो भागे , भिक्खु कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा , दिनभागेसु चउसु वि ॥
- [१०१८] पढमं पोरिसि सजङ्गायं , बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं , पुणो चउत्थीइ सजङ्गायं ॥
- [१०१९] आसाढे मासे दुपया , पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु , तिप्पया हवइ पोरिसी ॥
- [१०२०] अंगुलं सत्तरत्तेण , पक्खेण च दुरंगुलं ।
वड्ढए हायए वाऽवि , मासेण चउरंगुलं ॥
- [१०२१] आसाढबहुले पक्खे , भद्रवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुणवङ्गसाहेसु य , बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥
- [१०२२] जेड्डामुले आसाढसावणे , छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।

- अद्वहि बी इयतयंमि, तइए दस अ द्वहिं चउत्थे ॥
- [१०२३] रतिं पि चउरो भागे , भिकखू कुज्जा वियकखणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा , राइभाएसु चउसु वि ॥
- [१०२४] पठमं पोरिसि सजङ्गायं , बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्वमोक्खं तु , चउत्थी भुज्जो वि सजङ्गायं ॥
- [१०२५] जं नेइ जया रतिं , नक्खतं तं मि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा , सजङ्गायं पओसकालं मि ॥
- [१०२६] तम्मेव य नक्खत्ते , गयणं चउब्भाग सावसेसंमि ।
वेरत्तियंपि कालं , पडिलेहित्ता मु नी कुज्जा ॥
- [१०२७] पुव्विल्लंमि चउब्भाए , पडिलेहित्ताण भं डयं ।
गुरुं वं दित्तु सजङ्गायं , कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥
- [१०२८] पोरिसीए चउब्भाए , वंदित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स , भायणं पडिलेहए ॥
- [१०२९] मुहपोतिं पडिलेहित्ता , पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।

अजङ्गायण-२६

- गोच्छगलइयंगुलिओ, वर्त्थाइं पडिलेहए ॥
- [१०३०] उडं थिरं अतुरियं , पुव्वं ता वर्त्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे , तइयं च पुणो पमजिज्जा ॥
- [१०३१] अनच्चावियं अवलियं , अनानुबंधिं अ मोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा , पाणीपाणिविसोहणं ॥
- [१०३२] आरभडा सं मद्दा, वजजेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी , विक्खित्ता वेड्या छ द्वी ॥
- [१०३३] पसिढिलपलंबलोला, एगामोसा अ नेगरूवधुणा ।
कुणइ पमाणि पमायं , संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥
- [१०३४] अनूनाइरित्तपडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य ।
पठमं पयं पस्तथं , सेसाणि उ अप्पस्तथाइं ॥
- [१०३५] पडिलेहणं कुणं तो, मिहो कहं कुणइ ज नवयकहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं , वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥
- [१०३६] पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणा अपम त्तो, छणहं पि विराहओ होइ ॥
- [१०३७] तइयाए पोरिसीए , भत्तं पा नं गवेसए ।
छणहं अन्नतरा गंमि, कारणंमि समु द्विए ॥
- [१०३८] वेयण वेयावच्चे , इरियट्टाए य संजम द्वाए ।
तह पाणवत्तियाए , छटुं पुण धम्मचिं ताए ॥
- [१०३९] निगंथो धिइमं तो, निगंथी वि न करेज्ज छहिं चेव ।

- ठाणेहिं उ इमेहिं , अणइक्कमणा य से होइ ॥
- [१०४०]** आयंके उवसगे , तितिक्खया बं भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेतु , सरीवोच्छेयणद्वाए ॥
- [१०४१]** अवसेसं भं डगं गिज़ा , चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्वजोयणाओ, विहारं विहरे मु नी ॥
- [१०४२]** चउत्थीए पोरिसीए , निकिखवित्ताण भायणं ।
सज़्जायं च तओ कुज्जा , सव्वभावविभावणं ॥
- [१०४३]** पोरिसीए चउब्भाए , वंदित्ताण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्ता कालस्स , सेज्जं तु पडिलेहए ॥
- [१०४४]** पासवणुच्चारभूमिं च , पडिलेहिज्जा जयं जई ।
काउस्सगं तओ कुज्जा , सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
- [१०४५]** देवसियं च अईयारं , चिंतिज्जा अ नुपुव्वसो ।
नाणे य दंसणे चेव , चरित्तंमि तहेव य ॥
- [१०४६]** पारिय काउस्सगो, वंदित्ताण तओ गुरु ।

अज़्जायण-२६

- देवसियं तु अईयारं , आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥
- [१०४७]** पडिक्कमित्ताण निस्सल्लो , वंदित्ताण तओ गुरु ।
काउस्सगं तओ कुज्जा , सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
- [१०४८]** सिद्धाणं संथवं किच्चा वंदित्ताण तओ गुरु ।
थुइमंगलं च काऊणं , कालं संपडिलेहए ॥
- [१०४९]** पढमं पोरिसि सज़्जायं , बिइयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्वमोक्खं तु , सज़्जायं तु चउत्थिए ॥
- [१०५०]** पोरिसीए चउत्थीए , कालं तु पडिलेहि ए ।
सज़्जायं तु तओ कुज्जा , अबोहंतो असंजए ॥
- [१०५१]** पोरिसीए चउब्भा ए, वंदित्ताण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥
- [१०५२]** आगए कायवोस्सगे , सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सगं तओ कुज्जा , सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
- [१०५३]** राइयं च अईयारं , चिंतिज्ज अ नुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमि य , चरित्तंमि तवंमि य ॥
- [१०५४]** पारियकाउस्सगो, वंदित्ताण तओ गुरु ।
राइयं तु अईयारं , आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥
- [१०५५]** पडिक्कमित्तु निस्सल्लो , वंदित्ताण तओ गुरु ।
काउस्सगं तओ कुज्जा , सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
- [१०५६]** किं तवं पडिवज्जामि ?, एवं तत्थ विचिं तए ।

काउस्सगं तु पारित्ता , करिज्जा जि नसंथवं ॥
[१०५७] पारियकाउस्सगो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
तवं संपडिवज्जेत्ता , कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥
[१०५८] एसा सामायारी , समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता बहू जीवा , तिण्णा संसारसागरं ॥ त्ति बेमि
• छवर्वौसइमं अज्ञायणं सम्मतं ॥

◦ सत्तावीसइमं अज्ञायणं - खलुंकिज्जं ◦

[१०५९] थेरे गणहरे गग्गे , मुनी आसि विसारए ।
आइणे गणिभावं मि, समाहिं पडिसंधए ॥
[१०६०] वहणे वहमाणस्स , कंतारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स , संसारो अइवत्तई ॥
[१०६१] खलुंके जो उ जोएइ , विहम्माणो किलिस्सई ।
असमाहिं च वेएइ , तोत्तओ य से भज्जई ॥

अज्ञायणं-२७

[१०६२] एं डसइ पुच्छं मि, एं विं धइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं , एगो उप्पहप द्विओ ॥
[१०६३] एगो पडइ पासेण , निवेसइ निविज्जई ।
उक्कुद्दइ उप्पिडइ , सढे बालगवी वए ॥
[१०६४] माई मुद्देण पडइ , कुद्दे गच्छइ पडिप्पहं ।
मयलक्खण चिट्ठई , वेगेण य पहावई ॥
[१०६५] छिन्नाले छिं दई सेलिं , दुदंतो भंजए जुगं ।
सेऽवि य सुस्सुयाइत्ता , उज्जाहित्ता पलायए ॥
[१०६६] खलुंका जारिसा जोज्जा , दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणं मि, भजंती धिदुब्बला ॥
[१०६७] इद्धीगारविए एगे , एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे , एगे सुचिरकोहणे ॥
[१०६८] भिक्खाऽलसिए एगे , एगे ओमाणभीरुए थद्दे ।
एगे च अनुसासंमि, हेऊहिं कारणोहि य ॥
[१०६९] सो वि अं तरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई ।
आयरियाणं तु वयणं , पडिकूलेइ अ भिक्खणं ॥
[१०७०] न सा ममं वियाणाइ , न वि सा मज्जा दाहिई ।
निगग्या होहिई मन्ने , साहू अन्नोऽत्थ वज्जउ ॥
[१०७१] पेसिया पलितंचं ति, ते परियं ति समं तओ ।
रायवेट्टि च मन्नं ता, करेति भित्तिं मुहे ॥

- [१०७२] वाइया संगहिया चेव , भत्तपाणेहिं पोसिया ।
जायपकखा जहा हंसा , पककमंति दिसो दिसिं ॥
- [१०७३] अह सारही विचिं तेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्जं दु डुसीसेहिं?, अप्पा मे अवसीयई ॥
- [१०७४] जारिसा मम सीसा उ , तारिसा गलिगद्वहा ।
गलिगद्वहे जहित्ताणं , दं पगिणहई तवं ॥
- [१०७५] मिउमद्वसंपन्नो, गंभीरो सुसमाहिओ ।
विहरइ महिं महप्पा , सीलभूएण अप्पणा ॥ तित बेमि
◦ सत्तावीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ अद्वावीसइमं अजङ्गयणं - मोक्खमगगई ◦

- [१०७६] मोक्खमगगईं तच्चं , सुणेह जि नभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥
- [१०७७] नाणं च दंसणं चेव , चरित्तं च तवो तहा ।

अजङ्गयणं-२८

- एस मग्गु त्ति पन्नत्तो , जिणेहिं वरदंसिहिं ॥
- [१०७८] नाणं च दंसणं चेव , चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गम नुप्पत्ता, जीवा गच्छं ति सुगगई ॥
- [१०७९] तत्थ पंचविहं नाणं , सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहिनाणं तु तड्यं , मणनाणं च केवलं ॥
- [१०८०] एयं पंचविहं ना णं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसि , नाणं नाणीहिं देसियं ॥
- [१०८१] गुणाणं आ सओ दव्वं , एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु , उभओ अस्सिया भवे ॥
- [१०८२] धम्मो अहम्मो आगासं , कालो पुग्गल-जं तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो , जिणेहिं वरदंसिहिं ॥
- [१०८३] धम्मो अहम्मो आगासं , दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अनंताणि य दव्वाणि , कालो पुग्गलजं तवो ॥
- [१०८४] गइलक्खणो उ धम्मो , अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं , नहं ओगाहलक्खणं ॥
- [१०८५] वत्तणालक्खणो कालो , जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेण दंसणेण च , सुहेण य दुहेण य ॥
- [१०८६] नाणं च दंसणं चेव , चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य , एयं जीवस्स लक्खणं ॥
- [१०८७] सद्धयार-उज्जोओ, पभा छायाऽतवो इ वा ।

- वण्णरसगंधफासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥
- [१०८८] एगत्तं च पुहत्तं च , संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य , पज्जवाणं तु लक्खणं ॥
- [१०८९] जीवाऽजीवा य बं धो य , पुण्णं पावाऽसवो तहा ।
संवरो निजजरा मोक्खो , संतेण तहिया नव ॥
- [१०९०] तहियाणं तु भावाणं , सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्वहं तस्स, सम्मतं, तं वियाहियं ॥
- [१०९१] निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुईमेव ।
अभिगम-वित्थाररुई, किरिया-संखेव धम्मरुई ॥
- [१०९२] भूयत्थेणाहिगया, जीवाऽजीवा य पुण्ण पावं च ।
सह सं मुङ्गासव संवरो, रोएइ उ निस्सग्गो ॥
- [१०९३] जो जि नदिडे भावे , चउव्विहे सद्वहाइ सयमेव ।
एमेव नन्नह त्ति य , स निसग्गरुई त्ति नायव्वो ॥
- [१०९४] एए चेव उ भावे , उवइडे जो परेण सद्वहई ।

अज्ञायण-२८

- छउमत्थेण जिणेण व , उवएसरुई त्ति नायव्वो ॥
- [१०९५] रागो दोसो मोहो , अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रोयंतो , सो खलु आणारुई नामं ॥
- [१०९६] जो सुत्तमहिज्जं तो, सुएण ओगाहरुई उ सम्मतं ।
अंगेण बहिरेण व , सो सुत्तरुई त्ति नायव्वो ॥
- [१०९७] एगेण अ नेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मतं ।
उदए व्व तेल्लबिं दू सो बीयरुई त्ति नायव्वो ॥
- [१०९८] सो होइ अभिगमरुई , सुयनाणं ज स्स अत्थओ दिडं ।
एक्कारस अंगाइं , पड्णणगं दि द्विवाओ य ॥
- [१०९९] दव्वाण सव्वभावा , सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्वा ।
सव्वाहिं नयविहीहिं , वित्थाररुई त्ति नायव्वो ॥
- [११००] दंसणनाणचरित्ते, तवविनए सच्चसमिइगुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई , सो खलु किरियारुई नाम ॥
- [११०१] अनभिग्गहियकुटिड्डी, संखेवरुई त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे , अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥
- [११०२] जो अत्थिकायधम्मं , सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्वहई जिणाभिहियं , सो धम्मरुई त्ति नायव्वो ॥
- [११०३] परमत्थसंथवो वा , सुदिड्परमत्थसेवणं वा वि ।
वावन्नकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्वहणा ॥
- [११०४] नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं , दंसणे उ भइयवं ।

- सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मतं ॥
- [११०५]** नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुं ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥
- [११०६]** निस्संकिय-निकंखिय-निव्वितिगिच्छा अमूढिदि ढी य ।
उववूह शिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अ डु ॥
- [११०७]** सामाइयऽत्थ पढमं, छेदोवद्वावणं भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥
- [११०८]** अकसायं अ हक्खायं, छउमत्थस्स जि नस्स वा ।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥
- [११०९]** तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरंब्बिंतरो तहा ।
बाहिरो छविहो वुत्तो, एवमब्बिंतरो तवो ॥
- [१११०]** नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्वहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुजङ्गई ॥
- [११११]** खवेत्ता पुव्वकम्माइ, संजमेण तवेण य ।

अजङ्गयणं-२८

सव्वदुक्खपहीणद्वा, पक्कमंति महेसिणो ॥ तित्बेमि
◦ अद्वावीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ एगूणतीसइमं अजङ्गयणं - सम्मतपरक्कमे ◦

[१११२] सुयं मे आउसं ! तेण भगवया एवमक्खायं । इह खलु सम्मतपरक्कमे नाम अजङ्गयणे समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए , जं सम्मं सद्वह इत्ता पत्ति याइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरिता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अ नुपालइत्ता बहवे जीवा सिजङ्गांति बुजङ्गांति मुच्चांति परिनिव्वायांति सव्वदुक्खाणमंतं करेति ।

[१११३] तस्स णं अयमड्हे एवम्माहिज्जइ , तं जहा:- संवेगे, निव्वेए , धम्मसद्धा , गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया, आलोयणया , निं दणया, गरिहणया , सामाइए , चउव्वीसत्थ ए, वं दणए, पडिक्कमणे, काउस्सगे , पच्चक्खाणे , थयथुईमंगले , कालपडिलेहणया , पायच्छित्तकरणे , खमावयणया , सजङ्गाए, वायणया , पडिपुच्छणया , परियद्वणया , अणुप्पेहा , धम्मकहा , सुयस्स आराहणया , एगरगमनसंनिवेसणया, संजमे , तवे , वोदाणे , सुहसाए , अप्पडिबद्धया , विवित्तसयणासणसेवणया , विणियद्वणया, संभोगपच्चक्खाणे, उवहिपच्चक्खाणे, आहारपच्चक्खाणे,....

कसायपच्चक्खाणे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, सहायपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, सब्भावपच्चक्खाणे, पडिरुवणया, वेयावच्चे, सव्वगुणसंपन्नया, वीयरागया, खंती, मुत्ती, मद्ववे, अज्जवे, भावसच्चे, करणसच्चे , जोगसच्चे , म नगुत्तया, वयगुत्तया , कायगुत्तया , म नसमाधारणया, वयसमाधारणया, कायसमाधारणया , नाणसंपन्नया , दंसणसंपन्नया , चरित्तसंपन्नया , सोइं दियनिग्गहे, चक्किंदियनिग्गहे, घाणि दियनिग्गहे, जि ब्बिंदियनिग्गहे, फासिं दियनिग्गहे, कोहविजए , मा नविजए, मायाविजए, लोहविजए, पेजदोसमिच्छादंसणविजए, सेलेसी, अकम्मया ।

[१११४] संवेगेण भं ते! जीवे किं जणयइ ? | संवेगेण अ नुत्तरं धम्मसद्बं जणयइ | अनुत्तराए धम्मसद्बाए संवेगं हव्वमागच्छइ | अ नंतानुबंधिकोहमानमायालोभे खवेइ | नवं च कम्मं न बंधइ | तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ | दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अथेगइए तेणेव णं भवगगहणेण सिज्जांति बुज्जांति विमुच्यंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेति | विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्यं पुणो भवगगहणं नाइक्कमइ |

[१११५] निव्वेएण भंते जीवे किं जणयइ ? | निव्वेएण दिव्वमाणुसु तेरिच्छएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ | सव्वविसएसु विरज्जइ | सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरं भपरिच्चायं करेइ | आरंभपरिच्चाय करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ, सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य हवइ |

[१११६] धम्मसद्बाए णं भं ते! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्बाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ | आगारधम्मं च णं चयइ अ नगारिए णं जीवे सारीरमानसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ |

[१११७] गुरुसाहम्मियसुस्सूसणाए णं भं ते! जीवे किं जणयइ ? | गुरुसाहम्मियसुस्सूसणाए णं वि नयपडिवत्तिं जणयइ | वि नयपडिवन्ने य णं जीवे अ नच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय मणुस्सदेव-दुर्गईओ निरुभई | वण्णसंजलणभत्तिबहुमानयाए माणुस्सदेवगईओ निबंधई, सिद्धि सोगगइं च अज्ञायणं-२९

विसोहेइ | पसत्थाइं च णं वि नयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ | अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ |

[१११८] आलोयणाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? | आलोयणाए णं मायानियाण-मिच्छादंसण-सल्लाणं मोक्खमग्गविग्धाणं अ नंतसंसारबंधणाणं उद्धरणं करेइ | उज्जुभावं च जणयइ | उज्जुभाव - पडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयं नपुंसगवेयं च न बं धइ | पुव्वबद्धं च णं निजरेइ |

[१११९] निंदणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? | निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ | पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेठिं पडिवज्जइ | करणगुणसेठीपडिवन्ने य णं अ नगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ |

[११२०] गरहणयाए णं भं ते! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाएणं अपुरक्कारं जणयइ | अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ | पसत्थजोगं पडिवन्ने य णं अनगारे अनंतधाइपज्जवे खवेइ |

[११२१] सामाइएणं भं ते! जीवे किं जणयइ ? सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ |

[११२२] चउव्वीसत्थएणं भंते! जीवे किं जणयइ ? चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ |

[११२३] वंदनएणं भंते! जीवे किं जणयइ ? वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ | उच्चागोयं कम्मं निबं धइ | सोहगं च णं अपडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ | दाहिणभावं च णं जणयइ |

[११२४] पडिक्कमणेणं भं ते! जीवे किं जणयइ ? पडिक्कमणेणं वयछिद्वाणि पिहेइ | पिहियवयछिद्वे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अहुसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ |

[११२५] काउसगेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? काउ० तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ | विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वयहियए ओहरियभरुवं भारवहे पसत्थज्ञाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ |

[११२६] पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? | पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरु भइ |

पच्चक्खाणेण इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहं गए य एं जीवे सव्वदव्वेसु वि नीयतण्हे सीझभूए विहरई ।

[११२७] यथुइमंगलेण भं ते! जीवे किं जणयइ ? | थ यथुइमंगलेण नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ | नाण-दंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य एं जीवे अं तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ।

[११२८] कालपडिलेहणयाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | कालपडिलेहणयाए नाणावरणिजं कम्मं खवेइ ।

[११२९] पायच्छित्तकरणेण भं ते! जीवे किं जणयइ ? | पा यच्छित्त करणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ | निरइयारे आवि भवइ | सम्मं च एं पायच्छित्तं पडिच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

[११३०] खमावणयाए एं भंते! जीवे किं जणयइ? | खमावणयाए एं पल्हायणभावं जणयइ | पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावं उ प्पाएइ मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ।

[११३१] सजङ्गाएण भंते! जीवे किं जणयइ ? | सजङ्गाएण नाणावरणिजं कम्मं खवेइ ।

[११३२] वायणाए एं भं ते जीवे किं जणयइ ? | वायणाए निजजरं जणयइ | सुयस्स य अनुसज्जणाए अनासायणे, वट्टए | सुयस्स अनुसज्जणाए अनासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ | अजङ्गायण-२९

तित्थ धम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

[११३३] पडिपुच्छणयाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | पडिपुच्छणाए एं सुत्तत्थ तदुभयाइं विसोहेइ | कंखामोहणिजं कम्मं वोच्छिंदइ ।

[११३४] परियट्टणाए एं भं ते! जीवे किं जणयइ ? | परियट्टणाए एं वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाइए ।

[११३५] अणुप्पेहाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | अणुप्पेहाए आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्प-गडीओ घणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ | दीहकाल द्विइयाओ हस्सकाल द्विइयाओ पकरेइ | तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ | बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च एं कम्मं सिया बंधइ, सिय नो बं धइ | असायावेयणिजं च एं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ | अ नाइयं च एं अनवदगं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं खिप्पामेव वीइवयइ ।

[११३६] धम्मकहाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | धम्मकहाए एं कम्म-निजजरं जणयइ | धम्मकहाए एं पवयणं पभावेइ | पवयण पभावेण जीवे आगमेसस्स भद्वत्ताए कम्मं निबं धइ ।

[११३७] सुयस्स आराहणयाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | सुयस्स आराहणाए एं अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।

[११३८] एगगमनसंनिवेसणयाए एं भंते! जीवे किं जणयइ ? | एगगमन-संनिवेसणयाए एं चित्तनिरोहं करेइ ।

[११३९] संजमेण भंते! जीवे किं जणयइ? | संजमेण अणणह्यतं जणयइ ।

[११४०] तवेण भंते! जीवे किं जणयइ? | तवेण वोदाणं जणयइ ।

[११४१] वोदाणेण भं ते! जीवे किं जणयइ ? | वोदाणेण अकिरियं जणयइ | अकिरियाए

भवित्ता तओ पच्छा सिज़झाइ, बुज़झाइ, मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ।

[११४२] सुहसाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | सु हसाएणं अणुस्सुयतं जणयइ ।
अणुस्सुयाए णं जीवे अनुकंपाए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिजं कम्मं खवेइ ।

[११४३] अप्पडिबद्धयाए णं भंते जीवे किं जणयइ ? अप्पडिबद्धयाए निस्संगत्तं जणयइ ।
निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगमगचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

[११४४] विवित्तसयणासणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | वि वित्तसयणासणयाए णं
चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगं तरए मोक्खभावपडिवन्ने
अद्विहं कम्मगंडिं निज्जरेइ ।

[११४५] विनियद्वणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | वि नियद्वणयाएणं पावकम्माणं
अकरणयाए अब्मुद्वेइ । पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरं त संसारकंतारं
वीईवयइ ।

[११४६] संभोगपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? | संभोग पच्चक्खाणे णं आलंबणाइं
खवेइ । निरालं बणस्स य आय यट्टिया योगा भवं ति । सएणं लाभेणं संतूस्सइ , परलाभं नो आसादेइ , नो
तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ । परलाभं अणास्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे
अनभिलसमाणे दुच्चं सुहसेजं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

अज़झायणं-२९

[११४७] उवहिपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | उ वहिपच्चक्खाणेणं अपलिमं थं
जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ।

[११४८] आहारपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | आ हार पच्चक्खाणेणं जीविया-
संसप्पओं वोच्छिंदइ । जीवियासंसप्पओं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ।

[११४९] कसायपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? | कसाय पच्चक्खाणेणं वीयरागभावं
जणयइ । वीयरागभावं पडिवन्नेऽवि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ।

[११५०] जोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | जो गपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं
जणयइ । अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

[११५१] सरीरपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सरीर पच्चक्खाणेणं सिद्धाइ
सयगुणकित्तणं निव्वत्तेइ । सिद्धाइ सयसगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगरगमुवगए परमसुही भवइ ।

[११५२] सहायपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सहायपच्चक्खाणे णं एगीभावं
जणयइ । एगीभावभूए य जीवे एगत्तं भावेमाणे अप्पसद्वे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे
संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

[११५३] भत्तपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? भत्तपच्चक्खाणेणं अनेगाइं भवसयाइं
निरुभइ ।

[११५४] सब्भावपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? | सब्भाव पच्चक्खाणे णं अनियट्टिं
जणयइ । अनियट्टिं पडिवन्ने य अनगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ , तं जहा- वेयणिजं आउयं नामं
गोयं, तओ पच्छा सिज़झाइ बुज़झाइ मुच्चइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ।

[११५५] पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | प डिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ ।

लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते
सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिजजरुवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ।

[११५६] वेयावच्चेण भंते! जीवे किं जणयइ ? | वेयावच्चेण तित्थयरनामकम्मं निबंधइ ।

[११५७] सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? | सव्वगुणसंपन्नयाए अपुनरावत्तिं
जणयइ । अपुनरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमानसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ।

[११५८] वीयरागयाए णं भंते जीवे किं जणयइ ?० नेहाणुबंधणाणि तणहाणुबंधणाणि य
वोच्छिंदइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्फरिसरूवरसगंधेसु सच्चित्ताचित्तमीसएसु चेव विरज्जइ ।

[११५९] खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | खं तीए णं परीसहे जिणइ ।

[११६०] मुत्तीए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य
जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ ।

[११६१] अज्जवयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? | अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं
भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ।

[११६२] मद्वयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | मद्वयाए णं अनुस्सियत्तं जणयइ ।
अनुस्सियत्तेण जीवे मिउमद्ववसंपन्ने अडु मयद्वाणाइं निद्वावेइ ।

[११६३] भावसच्चेण भंते! जीवे किं जणयइ ? | भावसच्चेण भावविसोहिं जणयइ ।

अज्जायण-२९

भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहं तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्मुद्वेइ । अरहं त
पन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्मुद्वित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ।

[११६४] करणसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? | करणसच्चेण करणसत्तिं जणयइ ।
करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ।

[११६५] जोग सच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? | जो गसच्चेण जोगं विसोहेइ ।

[११६६] मनगुत्तयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? | मणगुत्तयाए जीवे एगरगं जणयइ ।
एगरगचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

[११६७] वयगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | वयगुत्तयाए निवियारं जणयइ ।
निवियारे णं जीवे वङ्गुत्ते अजङ्गप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ।

[११६८] कायगुत्तयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? | कायगुत्तयाए संवरं जणयइ । संवरेण
कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ।

[११६९] मनसमाहारणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? मनसमाहारणयाए एगरगं जणयइ ।
एगरगं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मतं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निजजरेइ ।

[११७०] वइसमाहारणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? वइसमाहार० णं वइसमाहारणं दंसण-
पज्जवे विसोहेइ । वइसमाहारणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निजजरेइ ।

[११७१] कायसमाहारणयाए णं भंते जीवे किं जणयइ ? | कायसमाहारणयाए णं
चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहिता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेता
चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिजङ्गइ बुजङ्गइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ।

[११७२] नाणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | नाणसंपन्नयाए णं जीवे सव्वभा -

वाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरं ते संसारकंतारे न विणस्सइ । नाणवि नय- तवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयविसारए य असंधायणिजे भवइ ।

[११६३] जहा सूइ ससुत्ता पडिया वि न विनस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विनस्सइ ॥

[११६४] दंसणसंपन्नयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? दंसण संपन्नयाए णं भवमिच्छत्त छेयणं करेइ, परं न विज्ञायइ । परं अविज्ञाएमाणे अ नुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे समं भावेमाणे विहरइ ।

[११६५] चरित्तसंपन्नयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? चरित्त संपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अ नगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्ञाइ बुज्ञाइ मुच्चइ परिनिवायइ सव्वटुक्खाणमंत करेइ ।

[११६६] सोइंदियनिग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? सोइंदिय निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्वेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ । तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११६७] चक्खिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चक्खिंदियनिग्गहेणं मणुन्ना - मणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ । तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११६८] घाणिंदिय निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? घाणिंदियनिग्गहेणं मणुन्ना - अज्ञायणं-२९

मणुन्नेसु गं धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ , तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ , पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११६९] जिल्लिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जिल्लिंदियनिग्गहेणं मणुन्ना मणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ , तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ , पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८०] फासिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | फा सिदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ , तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ , पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८१] कोहविजएणं भंते! जीवे किं जणयइ ? | कोहविजएणं खंतिं जणयइ, कोहवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८२] मानविजएणं भंते! जीवे किं जणयइ ? मानविजएणं मद्वं जणयइ , मानवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८३] मायाविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मायाविजएणं अज्जवं जणयइ । मायावेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८४] लोभविजएणं भंते! जीवे किं जणयइ ? लोभविजएणं संतोसं जणयइ , लोभवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निजजरेइ ।

[११८५] पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? | पि ज्जदोसमिच्छा- दंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुद्देइ । अद्विहस्स कम्मस्स कम्मगिंठिविमोयणयाए तप्पढ- मयाए जहाणुपुव्वीए अ डावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ , पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणा- वरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अनुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभा सगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पा डेइ जाव सजोगी भवइ , ताव ईरियावहियं कम्मं निबंधइ सुहफरिसं दुसमयठि ईयं । तं पढमसमए बद्धं , बिड्यसमए वेइयं, तइयसमए

निजिजण्णं, तं बद्धं पुद्दुं उदीरियं वेइयं निजिजण्णं, सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ।

[११८६] अह आउयं पालइत्ता अं तोमुहुत्तद्वावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणं सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुककजङ्गाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुं भइ, वइजोगं निरुं भइ, कायजोगं निरुं भइ, आनपान निरोहं करेइ, ईसिपंचरहस्सक्खरुच्चारणद्वाए य णं अ नगारे समुच्छइन्नकिरियं अनियहि - सुककजङ्गाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च ए चत्तारि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ ।

[११८७] तओ ओरालियं कम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तथं गं ता सागरोवउत्ते सिजङ्गइ बुजङ्गइ जाव अं तं करेइ ।

[११८८] एस खलु सम्मतपरककमस्स अजङ्गयणस्स अद्वे समणेणं भगवया महावीरेण आघविए पन्नविए परुविए दंसिए उवदंसिए । त्ति बेमि

◦ एगूणतीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ तीसइमं अजङ्गयणं - तवमगगगई ◦

[११८९] जहा उ पावगं कम्मं , रागदोससमज्जियं ।

खवेइ तवसा भिक्खू , तमेगगगमणो सुणे ॥

[११९०] पाणिवहमुसावाया, अदत्तमेहुणपरिगग्हा विरओ ।

अजङ्गयणं-३०

राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अ नासवो ॥

[११९१] पंचसमिओ तिगुत्तो , अकसाओ जिइं दिओ ।

अगारवो य निस्सल्लो , जीवो होइ अ नासवो ॥

[११९२] एएसिं तु विव ज्जासे, रागदोससमज्जियं ।

खवेइ उ जहा भिक्खू , तमेगगगमणो सुणे ॥

[११९३] जहा महातलायस्स , सन्निरुद्धे जलागमे ।

उस्सिंचणाए तवणाए , कमेणं सोसणा भवे ॥

[११९४] एवं तुं संजयस्सावि , पावकम्मनिरासवे ।

भवकोडीसंचियं कम्मं , तवसा निजरिज्जइ ॥

[११९५] सो तवो दुविहो वुत्तो , बाहिरङ्गभिंतरो तहा ।

बाहिरो छविहो वुत्तो , एवमभिंतरो तवो ॥

[११९६] अनसनमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।

कायकिलेसो संलीणया य बजङ्गो तवो होइ । |

[११९७] इत्तरिय मरणकाला य , अनसना दुविहा भवे ।

इत्तरिय सावकंखा , निरवकंखा उ बिझिज्या । |

[११९८] जो सो इत्तरियतवो , सो समासेण छविहो ।

सेढितवो पयरतवो , घनो य तह होइ वग्गो य । |

[११९९] तत्तो य वग्गवग्गो , पंचमो छ दुओ पइण्णतवो ।

मनइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ । |

- [१२००] जा सा अ नसना मरणे , दुविहा सा वियाहिया ।
सवियारमवियारा, कायचिंदं पई भवे । |
- [१२०१] अहवा सपरिकम्मा , अपरिकम्मा य आहिया ।
नीहारिमनीहारी, आहारच्छेअओ दोसु वि । |
- [१२०२] ओमोयरणं पंचहा , समासेण वियाहियं ।
दव्वओ खेत्तकालेण , भावेण पज्जवेहि य । |
- [१२०३] जो जस्स उ आहारो , तत्तो ओमं तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई, एवं दव्वेण ऊ भवे । |
- [१२०४] गामे नगरे तह रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कब्बड दोणमुह पटृण मडंब संबाहे । |
- [१२०५] आसमपए विहारे , संनिवेसे समायघोसे य ।
थलिसेनाखंधारे, सत्थे संवट्कोट्ये य । |
- [१२०६] वाडेसु व रत्थासु य, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई , एवं खेत्तेण उ भवे । |
- [१२०७] पेडा य अद्धपेडा , गोमुत्रित पयंगविहिया चेव ।

अज्ञायण-३०

- संबुक्कावट्टाय य गंतुं पच्चागया छट्टा । |
- [१२०८] दिवसस्स पोरुसीणं , चउणंपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु , कालोमाणं मुणेयवं । |
- [१२०९] अहवा तइयाए पोरिसीए , ऊणाइ घासमेसं तो ।
चऊभागूणाए वा , एवं कालेण ऊ भवे । |
- [१२१०] इत्थी वा पुरिसो वा , अलंकिओ वा नालंकिओ वावि ।
अन्नयरवयत्थो वा , अन्नयरेणं व वत्थेणं । |
- [१२११] अन्नेण विसेसेणं , वण्णेणं भावम नुमयंते उ ।
एवं चरमाणा खलु , भावोमाणं मुणेयवं । |
- [१२१२] दव्वे खेत्ते काले भावंमि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ , पज्जवचरओ भवे भिक्खू । |
- [१२१३] अद्विहगोयरगं तु , तहा सत्तेव एसणा ।
अभिगग्हा य जे अन्ने , भिक्खायरियमाहिया । |
- [१२१४] खीरदहिसप्पिमाई,
परिवज्जनं रसाणं तु , भणियं रसविवज्जनं । |
- [१२१५] ठाणा वीरासणाईया , जीवस्स उ सुहावहा ।
उरगा जहा धरिज्जं ति, कायकिलेसं तमाहियं । |
- [१२१६] एगंतं अना वाए,
सयनासन सेवणया, इत्थीपसु विवज्जिए ।
विवित्त सयनासनं । |

- [१२१७] एसो बाहिरगं तवो, समासेण वियाहिओ ।
अब्बिंतरं तवं एत्तो , वुच्छामि अ नुपुव्वसो । ।
- [१२१८] पायच्छित्तं वि नओ, वेयावच्चं तहेव सजङ्गाओ ।
झाणं च विउस्सग्गो , एसो अ ब्बिंतरो तवो । ।
- [१२१९] आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जं भिक्खू वहई सम्म , पायच्छित्तं तमाहियं । ।
- [१२२०] अब्बुद्वाणं अंजलिकरणं , तहेवासनदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सासा, विनओ एस वियाहिओ । ।
- [१२२१] आयरियमाईयंमि वेयावच्चो य दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं , वेयावच्चं तमाहियं । ।
- [१२२२] वायणा पुच्छणा चेव , तहेव परियट्णा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा , सजङ्गाओ पं चहा भवे । ।
- [१२२३] अद्वृद्धाणि वज्जित्ता , झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं , झाणं तं तु बुहा वए । ।
- [१२२४] सयनासन ठाणे वा , जे उ भिक्खू न वावरे ।

अजङ्गायणं-३०

- कायस्स विउस्सग्गो , छट्टो सो परिकित्तिओ । ।
- [१२२५] एवं तवं तु दुविहं , जे सम्मं आयरे मु नी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा , विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥ त्तिं बेमि
◦ तीसइमं अजङ्गायणं सम्मतं ०

◦ एगतीसइमं अजङ्गायणं - चरणविही ◦

- [१२२६] चरणविहिं पवक्खामि , जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा , तिण्णा संसारसागरं । ।
- [१२२७] एगओ विरइं कुज्जा , एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियतिं च , संजमे य पवत्तणं । ।
- [१२२८] रागदोसे य दो पावे , पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं , से न अच्छइ मं डले ॥ ॥
- [१२२९] दंडाणं गारवाणं च , सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चर्यई निच्चं , से न अच्छइ मं डले ॥ ॥
- [१२३०] दिव्वे य जे उवसग्गे , तहा तेरिच्छमा नुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं , से न अच्छइ मं डले ॥ ॥
- [१२३१] विगहाकसायसन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जरई निच्चं , से न अच्छइ मं डले ॥ ॥
- [१२३२] वएसु इं दियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।

- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३३] लेसासु छसु काएसु , छक्के आहारकारणे ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३४] पिंडोर्गहपडिमासु, भयट्टाणेसु सत्तसु ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३५] मदेसु बं भगुत्तीसु, भिक्खुधम्मंमि दसविहे ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३६] उवासगाणं पडिमासु , भिक्खूणं पडिमासु य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३७] किरियासु भुयगामेसु , परमाहिम्मएसु य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३८] गाहासोलसएहिं तहा असंजमं मि य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२३९] बंभंमि नायजङ्गयणेसु , ठाणेसु य समाहिए ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।

अजङ्गयणं-३१

- [१२४०] एगवीसाए सबले , बावीसाए परीसहे ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले । ।
- [१२४१] तेवीसाए सूयगडे , रूवाहिएसु सुरेसु अ ।
- जे भिक्खु जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले ॥
- [१२४२] पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले ॥
- [१२४३] अनगारगुणेहिं च , पगप्पंमि तहेव य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छई मंडले ॥
- [१२४४] पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले ॥
- [१२४५] सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
- जे भिक्खू जयई निच्चं , से न अच्छइ मंडले ॥
- [१२४६] इइ एएसु ठाणेसु , जे भिक्खू जयई सया ।
- खिप्पं सो सव्वसंसारा , विष्पमुच्चइ पंडिओ ॥ त्ति बेमि
- एगतीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ◦

◦ बत्तीसइमं अजङ्गयणं पमायट्टाणं ◦

- [१२४७] अच्चंतकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
- तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता , सुणेह एगं तहियं हियत्थं ॥

- [१२४८] नाणस्स सव्वस्स पगासणा ए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणा ए, एगंतसोकखं समुवेड मोकखं ॥
- [१२४९] तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा , विवज्जणा बालज नस्स दूरा ।
सज्जायएगंतनिसेवणा य , सुत्तथसंचितणया थिई य ॥
- [१२५०] आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं , सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धि ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं , समाहिकामे समणे तवस्सी ॥
- [१२५१] न वा लभेज्जा निउणं सहायं , गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एगो वि पावाइं विवज्जयं तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥
- [१२५२] जहा य अं डप्पभवा बलागा , अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहययणं खु तण्हा , मोहं च तण्हाययणं वयं ति ॥
- [१२५३] रागो य दोसो वि य कम्मबीयं , कम्मं च मोहप्पभवं वयं ति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं , दुकखं च जाईमरणं वयं ति ॥
- [१२५४] दुकखं हयं जस्स न होइ मोहो , मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो , लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥
- [१२५५] रागं च दोसं च तहेव मोहं , उद्घत्तुकामेण समूलजालं ।

अज्जायण-३२

- जे जे उवाया पडिवजिजयव्वा , ते कित्तइस्सामि अहा नुपुविं ॥
- [१२५६] रसा पगामं न निसेवियव्वा , पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्वं ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥
- [१२५७] जहा दवग्गी पउरि धणे वणे , समारुओ नोवसमं उवेड ।
एविंदियग्गी वि पगामभोइणो , न बं भयारिस्स हियाय कस्सई ॥
- [१२५८] विवत्तसेज्जासणजंतियाणं, ओमासणाणं दमिङं दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं , पराइयो वाहिरिवोसहेहिं ॥
- [१२५९] जहा बिरालावसहस्स मूले , न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जो , न बं भयारिस्स खमो निवासो ॥
- [१२६०] न रूवलावण्णविलासहासं , न जंपियं इंगियपेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता , दहुं ववस्से समणे तवस्सी ॥
- [१२६१] अदंसणं चेव अपत्थणं च , अचिंतणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजनस्सारियझाणजुग्गं, हियं सया बं भवए रयाणं ॥
- [१२६२] कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं , न चाइया खोभइं तिगुत्ता ।
तहा वि एगं तहियं ति नच्चा , विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ।
- [१२६३] मोक्खाभिकंखिस्स वि मानवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थ लोए , जहित्थओ बालम नोहराओ ॥
- [१२६४] एए य संगे समझक्कमित्ता , सुदुत्तरा चेव भवं ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता , नई भवे अवि गं गासमाना ॥

- [१२६५] कामाणुगिद्विष्पभवं खु दुक्खं , सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जे काइयं मा नसियं च किंचि , तस्संतंगं गच्छइ वीयरागो ॥
- [१२६६] जहा य किं पागफला म नोरमा, रसेण वण्णेण य भुजमाणा ।
ते खुड़डए जीविय पच्चमाणा , एओवमा कामगुणा विवागे ॥
- [१२६७] जे इं दियाणं विसया मणुन्ना , न तेसु भावं निसिरे कया ई ।
न या मणुन्नेसु मणं पि कुज्जा , समाहिकामे समणे तवस्सी ॥
- [१२६८] चकखुस्स रूवं गहणं वयं ति, तं रागहेतुं तु मणुन्नमाहुं ।
तं दोसहेतुं अमणुन्नमाहुं , समो य जो तेसु य वीयरागो ॥
- [१२६९] रूवस्स चकखुं गहणं वयं ति, चकसुस्स रूवं गहणं वयंति ।
रागस्स हेतुं समणुन्नमाहुं , दोसस्स हेतुं अमणुन्नमाहुं ॥
- [१२७०] रूवेसु जो गिद्विमुवेइ तिवं , अकालियं पावइ से वि नासं ।
रागातरे से जह वा पयंगे , आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥
- [१२७१] जे यावि दोसं समुवेइ तिवं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुदंतदोसेण सएण जं तू, न किं चि रूवं अवरज्जर्इ से ॥
- [१२७२] एगंतरत्ते रुइरंसि रूवे , अतालिसे से कुणई पओसं ।

अज्ञायण-३२

- दुक्खस्स सं पीलमुवेइ बाले , न लिप्पई ते न मु नी विरागो ॥
- [१२७३] रुवानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिडे ॥
- [१२७४] रुवानुवाएण परिगगहेण , उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥
- [१२७५] रूवे अतित्ते य परिगगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुडिं ।
अ तुडिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१२७६] तणहभिभ्यस्स अदत्तहारिणो , रूवे अतित्तस्स परिगगहे य ।
मा यामुसं व डढ़ लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- [१२७७] मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य , पयोगकाले य दुही दुरं ते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, रूवे अतित्तो दुहिओ अ निस्सो ॥
- [१२७८] रुवानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किं चि ? ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं , निवृत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१२७९] एमेव रूवं मि गओपओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुड्हचित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- [१२८०] रूवे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्जो ऽवि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ॥
- [१२८१] सोयस्स सदं गहणं वयंति , तं रागहेतुं तु मणुन्नमाहुं ।
तं दोसहेतुं अमणुन्नमाहु , समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

- [१२८२] सद्वस्स सोयं गहणं वयंति , सोयस्स सद्वं गहणं वयंति ।
रागस्स हेतुं समणुन्नमाहु , दोसस्स हेतुं अमणुन्नमाहु ॥
- [१२८३] सद्वेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं , अकालियं पावइ से वि नासं ।
रागात्रे हरिणमिगे व मुद्दे , सद्वे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥
- [१२८४] जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्वंतदोसेण सएण जं तू , न किं चि सद्वं अवरज्ञाई से ॥
- [१२८५] एगंतरत्ते रुइरंसि सद्वे , अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सं पीलमुवेइ बाले , न लिप्पई ते न मु नी विरागो ॥
- [१२८६] सद्वानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अतड्डगुरु किलिड्डे ॥
- [१२८७] सद्वानुवाएण परिगगहेण , उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥
- [१२८८] सद्वे अतित्ते य परिगगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुड्डिं ।
अनुड्डिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१२८९] तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो , सद्वे अतित्तस्स परिगगहे य ।

अज्ञायण-३२

- मायामुसं व इद्ध लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई ॥
- [१२९०] मोसस्स पच्छा य पुरथओ य , पओगकाले य दुही दुरं ते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, सद्वे अतित्तो दुहीओ अ निस्सो ॥
- [१२९१] सद्वानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं , निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१२९२] एमेव सद्वं मि गओ पओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पटुड्डचित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो इ दुहं विवागे ॥
- [१२९३] सद्वे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्जे वि सं तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
- [१२९४] घाणस्स गंधं गहणं वयंति , तं रागहेतुं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेतुं अमणुन्नमाहु , समो य जो तेसु स वीयरागो ॥
- [१२९५] गंधस्स घाणं गहणं वयंति , घाणस्स गंधं गहणं वयंति ।
रागस्स हेतुं समणुन्नमाहु , दोसस्स हेतुं अमणुन्नमाहु ॥
- [१२९६] गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं , अकालियं पावइ से वि नासे ।
रागात्रे ओसहगं धगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमं ते ॥
- [१२९७] जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्वंतदोसेण सएण जं तू , न किंचि गंधं अवरज्ञाई से ॥
- [१२९८] एगंतरते रुइरंसि गं धे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले , न लिप्पई तेण मु नी विरागो ॥

- [१२९९] गंधानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ८ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अत्तडुगुरु किलिडे ॥
- [१३००] गंधाणुवाएण परिगहेण , उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥
- [१३०१] गंधे अतित्ते य परिगगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तु ढिं ।
अतुडिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१३०२] तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो , गंधे अतित्तस्स परिगगहे य ।
मायामुसं व डढ़ लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- [१३०३] मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य , पओगकाले य दुही दुरं ते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, गंधे अतित्तो दुहिओ अ निस्सो ॥
- [१३०४] गंधानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं , निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१३०५] एमेव गं धंमि गओ पओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुडुचित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- [१३०६] गंधे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।

अज्ञायण-३२

- न लिप्पई भवमज्जे वि सं तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
- [१३०७] जिहाए रसं गहणं वयंति , तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्न माहु, समो य जो तेसु य वीयरागो ॥
- [१३०८] रसस्स जिब्भं गहणं वयंति , जिब्भाए रसं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु , दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥
- [१३०९] रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं , अकालियं पावइ से वि नासं ।
रागात्रे बडिसविभिन्नकाए , मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥
- [१३१०] जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुदंतदोसेण सएण जं तू, न किंचि रसं अवरज्ञई से ॥
- [१३११] एगंतरत्ते रुडरंसि रसे , अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले , न लिप्पई तेण मु नी विरागो ॥
- [१३१२] रसानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ८ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अत्त डुगुरु किलि डे ॥
- [१३१३] रसानुवाएण परिगहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥
- [१३१४] रसे अतित्ते य परिगगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुडिं ।
अतुडिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१३१५] तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो , रसे अतित्तस्स परिगगहे य ।
मायामुसं व डढ़ लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

- [१३१६] मोसस्स पच्छा य पुरथओ य , पओगकाले य दुही दुरं ते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, रसे अतितो दुहिओ अ निस्सो ॥
- [१३१७] रसानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं , निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१३१८] एमेव रसं मि गओ पओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पटुड्चित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- [१३१९] रसे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्जो वि सं तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
- [१३२०] कायस्स फासं गहणं वयंति , तं रागहेतुं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेतुं अमणुन्नमाहु , समो य जो तेसु य वीयरागो ॥
- [१३२१] फासस्स कायं गहणं वयंति , कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेतुं समणुन्नमाहु , दोसस्स हेतु अमणुन्नमाहु ॥
- [१३२२] फासेसु जो गिद्धमुवेइ तिवं , अकालियं पावइ से वि नासं ।
रागात्रे सीयजलावसन्ने , गाहगहीए महिसे विवन्ने ॥
- [१३२३] जे यावि दोसं समुवेइ तिवं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।

अञ्जायण-३२

- दुदंतदोसेण सएण जं तू, न किंचि फासं अवरज्जई से ॥
- [१३२४] एगंतरत्ते रुइरंसि फासे , अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले , न लिप्पई तेण मु नी विरागो ॥
- [१३२५] फासानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अत्त डगुरु किलि ढे ॥
- [१३२६] फासानुवाएण परिगहेण , उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतितिलाभे ॥
- [१३२७] फासे अतित्ते य परिगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तु ढिं ।
अतुडिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१३२८] तण्हाभिभ्यस्स अदत्तहारिणो , फासे अतित्तस्स परिगहे य ।
मायामुसं व इढ़ लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- [१३२९] मोसस्स पच्छा य पुरथओ य , पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, फासे अतित्तो दुहिओ अ निस्सो ॥
- [१३३०] फासानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्खं , निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१३३१] एमेव फासं मि गओ पओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पटुड्चित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो होइ दुहे विवागे ॥
- [१३३२] फासे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्जो वि सं तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

- [१३३३] मनस्स भावं गहणं वयंति , तं रागहेतुं तुं मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेतुं अमणुन्नमाहु , समो य जो तेसु स वीयरागो ॥
- [१३३४] भावस्स म नं गहणं वयंति , मनस्स भावं गहणं वयंति ।
रागस्स हेतुं समणुन्नमाहु , दोसस्स हेतुं अमणुन्नमाहु ॥
- [१३३५] भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिवं , अकालियं पावइ से वि नासं ।
रागात्रे कामगुणेसु गिद्धे , करेणुमगावहिए गजे वा ॥
- [१३३६] जे यावि दोसं समुवेइ तिवं , तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्धंतदोसेण सएण जंतू , न किंचि भावं अवरजङ्गई से ॥
- [१३३७] एगंतरत्ते रुडरंसि भावे , अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले , न लिप्पई तेण मु नी विरागो ॥
- [१३३८] भावानुगासानुगए य जीवे , चराचरे हिंसइ नेगरुवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले , पीलेइ अत्त डुगुरु किलि ड्वे ॥
- [१३३९] भावानुवाएण परिगहेण , उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से , संभोगकाले य अतितिलाभे ॥
- [१३४०] भावे अतित्ते य परिगहं मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुड्हिं ।

अज्ञायण-३२

- अतुद्धिदोसेण दुही परस्स , लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- [१३४१] तणहभिभ्यस्स अदत्तहारिणो , भावे अतित्तस्स परिगहे य ।
मायामुसं व डढ़ लोभदोसा , तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- [१३४२] मोसस्स पच्छा य पुरथओ य , पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययं तो, भावे अतित्तो दुहिओ अ निस्सो ॥
- [१३४३] भावानुरत्तस्स नरस्स एवं , कुर्त्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं , निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- [१३४४] एमेव भावं मि गओ पओसं , उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुड्हचित्तो य चिणाइ कम्मं , जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- [१३४५] भावे विरत्तो म नुओ विसोगो , एण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्जो वि संतो , जलेण वा पोक्खरिणीपिलासं ॥
- [१३४६] एविंदियत्था य म नस्स अत्था, दुक्खस्स हेतुं मनुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं न वीयरागस्स करै ति किंचि ॥
- [१३४७] न कामभोगा समयं उवैं ति, न यावि भोगा विगइं उवैं ति ।
जे तप्पओसी य परिगही य , सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥
- [१३४८] कोहं च मा नं च तहेव मायं , लोहं दुगुच्छं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं , नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥
- [१३४९] आवज्जई एवम नेगरुवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे , कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

- [१३५०] कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू , पच्छानुतावेण तव्वप्पभावं ।
ए वं वियारे अमियप्पयारे , आवज्जई इं दियचोरवस्से ॥
- [१३५१] तओ से जायं ति पओयणाइँ , निमज्जितं मोहमहण्णवं मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्वा , तपच्चयं उज्जमए य रागी ॥
- [१३५२] विरज्जमाणस्स य इं दियत्था, सद्वाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा , निव्वतयंती अमणुन्नयं वा ॥
- [१३५३] एवं स संकप्पविकप्पणासुं , संजायई समयमुव द्वियस्स ।
अत्थे असंकप्पयओ तओ से , पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥
- [१३५४] सो वीयरागो क्यसव्वकिच्चो , खवेइ नाणावरणं खणेण ।
तहेव जं दंसणमावरेइ , जं चं तरायं पकरेइ कम्मं ॥
- [१३५५] सव्वं तओ जाणइ पासए य , अमोहणे होइ निरं तराए ।
अनासवे झाणसमाहिजुत्ते , आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥
- [१३५६] सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मु क्खो, जं बाहई सययं जं तुमेयं ।
दीहामयं विष्पमुक्को पसत्थो , तो होइ अच्चं तसुही क्यत्थो ॥
- [१३५७] अनाइकालप्पभवस्स एसो , सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।

अज्ञायणं-३२

वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता , कमेण अच्चं तसुही भवंति ॥ त्ति
बेमि

◦ बत्तीसइमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ तेत्तीसइमं अज्ञायणं कम्मपयडी ◦

- [१३५८] अदुं कम्माइं वोच्छामि , आनुपुविं जह क्कमं ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो , संसारे परिव दृई ।
- [१३५९] नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं , आउकम्मं तहेव य ॥
- [१३६०] नामकम्मं च गोयं च , अंतरायं तहेव य ।
ए वमेयाइ कम्माइं , अद्वेव उ समासओ ॥
- [१३६१] नाणावरणं पं चविहं, सुयं आभि निबोहियं ।
ओहिनाणं च तइयं , मणनाणं च केवलं ॥
- [१३६२] निद्वा तहेव पयला , निद्वानिद्वा पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ , पंचमा होइ नायव्वा ॥
- [१३६३] चक्खुमचक्खूओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं , नायव्वं दंसणावरणं ॥
- [१३६४] वेयणीयंपि य दुविहं , सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया , एमेव असायस्स वि ॥

- [१३६५] मोहणिज्जंपि दुविहं , दंसणे चरणे तहा ।
दंसणे तिविहं वुतं , चरणे दुविहं भवे ॥
- [१३६६] सम्मतं चेव मिच्छतं , सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ , मोहणिज्जस्स दंसणे ॥
- [१३६७] चरित्तमोहणं कम्मं , दुविहं तं वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु , नोकसायं तहेव य ॥
- [१३६८] सोलसविहभेणं, कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा , कम्मं च नोकसायजं ॥
- [१३६९] नेरइयतिरिक्खाऊ, मणुस्साउं तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु , आउकम्मं चउविहं ॥
- [१३७०] नामकम्मं तु दुविहं , सुहमसुहं च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया , एमेव असुहस्स वि ॥
- [१३७१] गोयं कम्मं दुविहं , उच्चं नियं च आहियं ।
उच्चं अ डुविहं होइ , एवं नीयं पि आहियं ॥
- [१३७२] दाने लाभे य भोगे य , उवभोगे वीरिए तहा ।
पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥

अज्ञायण-३३

- [१३७३] एयाओ मूलपयडीओ , उत्तराओ य आहिया ।
पएसगं खेत्तकाले य , भावं च उत्तरं सुण ॥
- [१३७४] सव्वेसिं चेव कम्माणं , पएसगमनंतगं ।
गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥
- [१३७५] सव्वजीवाण कम्मं तु , संगहे छद्विसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु , सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥
- [१३७६] उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडीओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ , अंतोमुहुतं जहन्निया ॥
- [१३७७] आवरणिज्जाण दुण्हंपि , वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कम्मं मि, ठिई एसा वियाहिया ॥
- [१३७८] उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा , अंतोमुहुतं जहन्निया ॥
- [१३७९] तेत्तीस सागरोवमा , उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स , अंतोमुहुतं जहन्निया ॥
- [१३८०] उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा , अंतो मुहुतं जहन्निया ॥
- [१३८१] सिद्धाणऽनंतभागो य , अनुभागा हवं ति उ ।
सव्वेसु वि पएसगं , सव्वजीवेसु इच्छियं ॥

[१३८२] तम्हा एएसिं कम्माणं , अनुभाग वियाणिया ।
एएसिं संवरे चेव , खवणे य जए बुहो ॥ त्तिबेमि
० तेत्तीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ०

० चउतीसइमं अजङ्गयणं - लेसजङ्गयणं ०

- [१३८३] लेसजङ्गयणं पवक्खामि , आनुपुविं जहककमं ।
छणहंपि कम्मलेसाणं , अनुभावे सुणेह मे ॥
- [१३८४] नामाइं वण्णरसगं ध फासपरिणामलक्खणं ठाणं ।
ठिइं गइं आउं य , लेसाणं तु सुणेह मे ॥
- [१३८५] किण्हा नीला य काऊ य , तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्टा य , नामाइं तु जहककमं ॥
- [१३८६] जीमूयनिद्ध संकासा, गवलरिद्धुग संनिभा ।
खंजंजण नयननिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥
- [१३८७] नीलासोग संकासा, चासपिच्छ सम्प्पभा ।
वेरुलियनिद्ध संकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥
- [१३८८] अयसीपुष्प संकासा, कोइलच्छ दसंनिभा ।

अजङ्गयणं-३४

- पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥
- [१३८९] हिंगुलयधाउ संकासा, तरुणाइच्च सन्निभा ।
सुयतुंड पईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ॥
- [१३९०] हरियालभेय संकासा, हलिद्वाभेय सम्प्पभा ।
सणासण कुसुमनिभा, पम्हलेसा उ व ण्णओ ॥
- [१३९१] संखंककुंद संकासा, खीरपूर सम्प्पभा ।
रययहार संकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥
- [१३९२] जह कडुय तुंबगरसो, निंबरसो कडुय रोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अ नंतगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ॥
- [१३९३] जह तरुण अंबगरसो, तुवरकविडुस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अ नंतगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ॥
- [१३९४] जह तरुण अंबगरसो, तुवरकविडुस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अनंतगुणो , रसो उ काऊए नायव्वो ॥
- [१३९५] जह परिणयं बगरसो, पक्ककविडुस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अनंतगुणो , रसो उ तेऊए नायव्वो ॥
- [१३९६] वरवारुणीए व रसो , विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरगस्स व रसो , एत्तो पम्हाए परएणं ॥
- [१३९७] खज्जूर मुद्दियरसो, खीररसो खं ड सक्कररसो वा ।

- एत्तो वि अनंतगुणो , रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥
- [१३९८] जह गोमडस्स गं धो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तो वि अनंतगुणो , लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥
- [१३९९] जह सुरहि कुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणा णं ।
एत्तो वि अनंतगुणो , पसत्थलेसाण तिणहंपि ॥
- [१४००] जह करगयस्स फासो , गोजिब्भाए य सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अनंतगुणो , लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥
- [१४०१] जह ब्रूस्स व फासो , नवनीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तो वि अनंतगुणो , पसत्थलेसाण तिणहंपि ॥
- [१४०२] तिविहो व नवविहो वा , सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा , लेसाणं होङ परिणामो ॥
- [१४०३] पंचासवप्पमत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिव्वारंभ परिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥
- [१४०४] निदंधस परिणामो, निस्संसो अजिइं दिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, किणहलेसं तु परिणमे ॥
- [१४०५] इस्सा अमरिस अतवो , अविज्ज माया अहीरिया ।

अजङ्गयणं-३४

- गेही पओसे य सढे , पमत्ते रसलोलुए सायगवेसए य ॥
- [१४०६] आरंभओ अविरओ , खुद्दो साहसिसओ नरो ।
एयजोग समाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥
- [१४०७] वंके वंकसमायारे , नियडिल्ले अ नुज्जुए ।
पलिउंचग ओवहिए, मिच्छटिड्डी अ नारिए ॥
- [१४०८] उप्फालगदुडवाई य , तेणे यावि य मच्छरी ।
एयजोग समाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥
- [१४०९] नीयावित्ती अचवले , अमाई अकुऊहले ।
विनीय विनए दं ते, जोगवं उवहाणवं ॥
- [१४१०] पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरु हिएसए ।
एयजोग समाउत्तो, तेऊलेसं तु परिणमे ॥
- [१४११] पयणु कोहमाणे य , मायालोभे य पयणुए ।
पसंतचित्ते दं तप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥
- [१४१२] तहा य पयणुवाई य , उवसंते जिइं दिए ।
एयजोग समाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥
- [१४१३] अडृरुद्दाणि वजिज्त्ता , धम्मसुक्काणि झायए ।
पसंतचित्ते दं तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥
- [१४१४] सरागे वीयरागे वा , उवसंते जिइं दिए ।

- एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥
- [१४१५]** असंखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया ।
संखाईया लोगा , लेसाण हवं ति ठाणाइं ॥
- [१४१६]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना , तेत्तीसा सागरा मुहुत्त ऽहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई , नायव्वा किण्हलेसाए ॥
- [१४१७]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना , दस उद्दी पलियमसंखभागमब्भहिया
।
उक्कोसा इ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥
- [१४१८]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई , नायव्वा काउलेसाए ॥
- [१४१९]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई , नायव्वा तेउलेसाए ॥
- [१४२०]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना , दस हौंति य सागरा मुहुत्तऽहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई , नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- [१४२१]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना तेत्तीसं सागरा मुहुत्त ऽहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- [१४२२]** एसा खलु लेसाणं , ओहेण ठिई उ वणिया होइ ।

अज्ञायण-३४

- चउसु वि गईसु एत्तो , लेसाण ठिईं तु वोच्छामि ॥
- [१४२३]** दस वाससहस्राइं , काउए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलिओवमं , असंखभागं च उक्कोसा ॥
- [१४२४]** तिण्णुदही पलिओवमं , असंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दसउदही पलिओवमं असंखभागं च उक्कोसा ॥
- [१४२५]** दसउदही पलिओवमं असंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा , होइ किण्हाए लेसाए ॥
- [१४२६]** एसा नेरझ्याणं , लेसाण ठिई उ वणिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि , तिरियमनुस्साण देवाणं ॥
- [१४२७]** अंतोमुहुत्तमद्वं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराणं वा , वजिज्ता केवलं लेसं ॥
- [१४२८]** मुहुत्तद्वं तु जहन्ना , उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहिं वरिसेहिं ऊणा , नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- [१४२९]** एसा तिरियनराणं , लेसाण ठिई उ वणिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि , लेसाण ठिई उ देवाणं ॥
- [१४३०]** दस वाससहस्राइं , किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्ज़मो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥

- [१४३१] जा किण्हाए ठिई खलु , उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण नीलाए , पलियमसंखं च उक्कोसा ॥
- [१४३२] जा नीलाए ठिई खलु , उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण काऊए , पलियमसंखं च उक्कोसा ॥
- [१४३३] तेण परं वोच्छामि , तेऊलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमंतर जोइसवेमाणियाणं च ॥
- [१४३४] पलिओवमं जहन्नं , उक्कोसा सागरा उ दु णहःहिआ ।
पलियमसंखेज्जेण, होइ भागेण तेऊए ॥
- [१४३५] दसवाससहस्राङ्, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुन्नुदही पलिओवम असंखभागं च उक्कोसा ॥
- [१४३६] जा तेऊए ठिई खलु , उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण पम्हाए , दस उ मुहुत्त शहियाङ् उक्कोसा ॥
- [१४३७] जा पम्हाए ठिई खलु , उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण सुक्काए , तेत्तीस मुहुत्तं अ ब्भहिया ॥
- [१४३८] किण्हा नीला काऊ , तिन्निवि एयाओ अहम्मलेसाओ ।
एयाहिं तिहिवि जीवो , दुग्गइं उववज्जई बहुसो ॥
- [१४३९] तेऊ पम्हा सुक्का , तिन्निवि एयाओ धम्मलेसाओ ।

अज्ञायण-३४

- एयाहि तिहिवि जीवो , सुग्गइं उववज्जई ॥
- [१४४०] लेसाहिं सव्वाहिं , पढमे समयं मि परिणयाहिं तु , ।
न हु कस्सइ उववाओ , परे भवे अत्थ जीवस्स ॥
- [१४४१] लेसाहिं सव्वाहिं , चरिमे समयं मि परिणया हिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ , परे भवे होइ जीवस्स ॥
- [१४४२] अंतमुहुत्तंमि गए , अंतमुहुत्तंमि सेसाए चेव ।
लेसाहि परिणयाहिं , जीवा गच्छं ति परलोयं ॥
- [१४४३] तम्हा एयासि लेसाणं , अनुभावे वियाणिया ।
अप्पस्त्थाओ वज्जित्ता , पस्त्थाओऽहिट्टिए मु नी ॥ त्तिबेमि
◦ चउत्तीसइमं अज्ञायणं सम्मतं ◦

◦ पणतीसइमं अज्ञायणं - अणगारमगगगई ◦

- [१४४४] सुणेह मे एगरगमणा , मरगं बुद्धेहिं देसियं ।
जमायरंतो भिक्खू , दुक्खाणंतकरे भवे ॥
- [१४४५] गिहवासं परिच्चज्ज , पवज्जामस्सिए मु नी ।
इमे संगे वियाणिज्जा , जेहिं सज्जं ति मा नवा ॥
- [१४४६] तहेव हिंसं अलियं , चोज्जं अबं भसेवणं ।

- इच्छाकामं च लोभं च , संजओ परिवज्जए ॥
[१४४७] मनोहरं चित्तघरं , मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पं डुरुल्लोयं, मनसा वि न पत्थए ॥
- इंदियाणि उ भिक्खुस्स , तारिसंमि उव्वस्सए ।
[१४४८] दुक्कराइं निवारेतं , कामरागविवङ्घणे ॥
- सुसाणे सुन्नगारे वा , रुक्खमूले व इक्कओ ।
[१४४९] पइरिक्के परकडे वा , वासं तत्थ अभिरोयए ॥
- फासुयंमि अ नाबाहे, इत्थीहिं अ नभिद्धए ।
[१४५०] तत्थ संकप्पए वासं , भिक्खू परमसंजए ॥
- न सयं गिहाइं कुव्विज्जा , नेव अन्नेहिं कारए ।
[१४५१] गिहकम्मसमारंभे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥
- तसाणं थावराणं च , सुहुमाणं बादराण य ।
[१४५२] तम्हा गिहसमारं भं, संजओ परिवज्जए ॥
- तहेव भत्तपा नेसु, पयणे पयावणेसु य ।
[१४५३] पाणभूयदयद्वाए, न पए न पयावए ॥
- जलधन्ननिस्सिया जीवा , पुढवीकद्वनिस्सिया ।
[१४५४] हम्मंति भत्तपा नेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥

अज्ञायण-३५

- विसप्पे सत्वओ धारे , बहुपाण विनासणे ।
[१४५५] नत्थि जोइसमे सत्थे , तम्हा जोइं न दीवए ॥
- हिरण्णं जायरुवं च , मनसा वि न पत्थए ।
[१४५६] समलेटुकंचने भिक्खू , विरए कयविक्कए ॥
- किणांतो कडओ होइ , विक्किणांतो य वाणिओ ।
[१४५७] कयविक्कयंमि वट्ठं तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
- भिक्खियवं न केयवं , भिक्खुणा भिक्खुवित्तिणा ।
[१४५८] कयविक्कओ महादोसो , भिक्खवित्ती सुहावहा ॥
- समुयाणं उछमेसिज्जा , जहासुत्तमनिंदियं ।
[१४५९] लाभालाभंमि संतुडे , पिंडवायं चरे मु नी ॥
- अलोले न रसे गिद्धे , जिब्बादंते अमु च्छए ।
[१४६०] न रसद्वाए भुंजिज्जा , जवणद्वाए महामु नी ॥
- अच्चयं रयणं चेव , वंदनं पूयणं तहा ।
[१४६१] इड्ढीसक्कारसम्माणं, मनसा वि न पत्थए ॥
- सुक्कं जङ्गाणं झियाएज्जा , अनियाणे अकिंच ने ।
[१४६२] वोसद्वकाए विहरेज्जा , जाव कालस्स पज्जओ ॥
- निज्जूहिऊणं आहारं , कालधम्मे उव द्विए ।
[१४६३]

जहिंठण मा नुसं बों दिं, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥
[१४६४] निमम्मे निरहंकारो , वीयरागो अ नासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं , सासयं परि निव्वए ॥ त्ति बेमि
• पणतीसइमं अजङ्गयणं सम्मतं ०

◦ छत्तीसइमं अजङ्गयणं - जीवाजीवविभृती ◦

[१४६५] जीवाजीवविभृतं, सुणेह मे एगम ना इओ ।
जं जाणिठण भिक्खू , सम्मं जयइ संजमे ॥
[१४६६] जीवा चेव अजीवा य , एस लोए वियाहिए ।
अजीव देसमागासे , अलोए से वियाहिए ॥
[१४६७] दव्वओ खेत्तओ चेव , कालओ भावओ तहा ।
पर्वणा तेसिं भवे , जीवाणमजीवाण य ॥
[१४६८] रुविणो चेव अरूवी य , अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता , रुविणो य चउट्विहा ॥
[१४६९] धम्मत्थिकाए तद्देसे , तप्पएसे य आहिए ।
अहम्मे तस्स देसे य , तप्पएसे य आहिए ॥
[१४७०] आगासे तस्स देसे य , तप्पएसे य आहिए ।

अजङ्गयणं-३६

अद्वासमए चेव , अरूवी दसहा भवे ॥
[१४७१] धम्माधम्मे य दो चेव , लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे , समए समयखेत्तिए ॥
[१४७२] धम्माधम्मागासा, तिन्नि वि एए अ नाइया ।
अपज्जवस्सिया चेव , सव्वदं तु वियाहिया ॥
[१४७३] समए वि संतडं पप्प , एवमेव वियाहिए ।
आएसं पप्प साइए , सपज्जवसिए वि य ॥
[१४७४] खंधा य खंधदेसा य , तप्पएसा तहेव य ।
परमाणुणो य बोद्धव्वा , रुविणो य चउट्विहा ॥
[१४७५] एगत्तेण पुहुत्तेण खंधा य परमाणु य ।
लोएगदेसे लोए य , भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥
[सुहुमा सव्वलोगं मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु , तेसिं वुच्छं चउट्विहं ॥]
[१४७६] संतडं पप्प तेस नाई, अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
[१४७७] असंखकालमुक्कोसं, इकं समयं जह न्नयं ।
अजीवाण य रुवीण , ठिई एसा वियाहिया ॥

- [१४७८] अनंतकालमुक्कोसं, इकं समयं जह न्नयं ।
अजीवाण य रूबीणं , अंतरेयं वियाहियं ॥
- [१४७९] वण्णओ गंधओ चेव , रसओ फासओ तहा ।
संठाणओ य विण्णेओ , परिणामो तेसिं पंचहा ॥
- [१४८०] वण्णओ परिणया जे उ , पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया , हालिद्वा सुक्किला तहा ॥
- [१४८१] गंधओ परिणया जे उ , दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्बिंगंध परिणामा , दुब्बिंगंधा तहेव य ॥
- [१४८२] रसओ परिणया जे उ , पंचहा ते पकित्तिया ।
तित्त-कडुय-कसाया, अंबिला महुरा तहा ॥
- [१४८३] फासओ परिणया जे उ , अद्वहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव , गुरुया लहुया तहा ॥
- [१४८४] सीया उण्हा य णिद्वा य , तहा लुक्खा य आहिया ।
इय फास-परिणया एए , पुग्गला समुदाहिया ॥
- [१४८५] संठाणओ परिणया जे उ , पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमंडला य वट्टा य , तंसा चउरंसमायया ॥
- [१४८६] वण्णओ जे भवे किण्हे , भइए से उ गंधओ ।

अजङ्गयण-३६

- रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४८७] वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४८८] वण्णओ लोहिए जे उ , भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४८९] वण्णओ पीयए जे उ , भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९०] वण्णओ सुक्किले जे उ , भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९१] गंधओ जे भवे सुब्भी , भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९२] गंधओ जे भवे दुब्भी , भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९३] रसओ तित्तए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९४] रसओ कडुए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥

- [१४९५] रसओ कसाए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९६] रसओ अंबिले जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९७] रसओ महुरए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९८] फासओ कक्खडे जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१४९९] फासओ मउए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५००] फासओ गुरुए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०१] फासओ लहुए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०२] फासओ सीयए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०३] फासओ उण्हए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।

अजङ्गयण-३६

- गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०४] फासओ निद्वए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०५] फासओ लुक्खए जे उ , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए संठाणओ वि य ॥
- [१५०६] परिमंडल-संठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए फासओ वि य ॥
- [१५०७] संठाणओ भवे वट्टे , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए फासओ वि य ॥
- [१५०८] संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए फासओ वि य ॥
- [१५०९] संठाणओ जे चउरंसे , भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए फासओ वि य ॥
- [१५१०] जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव , भइए फासओ वि य ॥
- [१५११] एसा अजीव-विभत्ती , समासेण वियाहिया ।
इत्तो जीवविभत्तिं , वुच्छामि अ नुपुव्वसो ॥

- [१५१२] संसारतथा य सिद्धा य , दुविहा जीवा वियाहिया ।
सिद्धा नेगविहा वुत्ता , तं मे कित्तयओ सुण ॥
- [१५१३] इत्थी पुरिस-सिद्धा य , तहेव य नपुंसगा ।
सलिंगे अ न्नलिंगे य , गिहिलिंगे तहेव य ॥
- [१५१४] उक्कोसोगाहणाए य , जहन्नमजङ्गमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च , समुद्रंमि जलं मि य ॥
- [१५१५] दस य नपुंसएसु, बीसं इथियासु य ।
पुरिसेसु य अद्वसयं , समए ने गेण सिजङ्गइ ॥
- [१५१६] चत्तारि य गिहिलिंगे , अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेण अद्वसयं , समए ने गेण सिजङ्गइ ॥
- [१५१७] उक्कोस्सोगाहणाए य , सिजङ्गंते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जह न्नाए, जवमजङ्गेद्वृत्तरं सयं ॥
- [१५१८] चउरुड्डलोए य दुवे समुद्दे , तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सयं च अद्वृत्तरं तिरिय लोए , समए नेगेण सिजङ्गइ धुवं ।
- [१५१९] कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पइडिया ?, ।
कहिं बोंदि चइत्ताणं ?, कत्थ गंतूण सिजङ्गइ ? ॥
- [१५२०] अलोए पडिहया सिद्धा , लोयग्गे य पइडिया ।

अजङ्गयणं-३६

- इ हं बोंदिं चइत्ताणं , तत्थ गंतूण सिजङ्गइ ॥
- [१५२१] बारसहिं जोयणेहिं , सव्वडस्सुवरि भवे ।
ईसिपब्भार-नामा उ , पुढवी छत्त-संठिया ॥
- [१५२२] पणयाल सयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया ।
तावइयं चेव वित्तिण्णा , तिगुणो साहिय परिरओ ॥
- [१५२३] अद्वजोयण-बाहल्ला, सा मज्जां मि वियाहिया ।
परिहायंति चरिमंते , मच्छिपत्ताउ त नुयरी ॥
- [१५२४] अजुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तयसंठिया य , भणिया जि नवरेहिं ॥
- [१५२५] संखं ककुंद संकासा, पंडुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो , लोयंतो उ वियाहिओ ॥
- [१५२६] जोयणस्स उ जो तत्थ , कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए , सिद्धाणोगाहणा भवे ॥
- [१५२७] तत्थ सिद्धा महाभागा , लोगर्गंमि पइडिया ।
भवप्पपंचओ मुक्का , सिद्धिं वरगाइं गया ॥
- [१५२८] उस्सेहो जस्स जो होइ , भवंमि चरिमं मि उ ।
तिभागहीना तत्तो य , सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

- [१५२९] एगत्तेण साइया , अपज्जवसिया वि य ।
पुहत्तेण अ नाइया, अपज्जवसिया वि य ॥
- [१५३०] अर्लविणो जीवघ ना, नाणदंसण-सन्निया ।
अउलं सुहं संपत्ता , उवमा जस्स नत्थि उ ॥
- [१५३१] लोगेगदेसे ते सव्वे , नाणदंसण-सन्निया ।
संसारपारनित्थिणा, सिद्धि वरगई गया ॥
- [१५३२] संसारत्था उ जे जीवा , दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव , थावरा तिविहा तहिं ॥
- [१५३३] पुढवी आउ-जीवा य , तहेव य वणस्सई ।
इच्छेए थावरा तिविहा , तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- [१५३४] दुविहा पुढवी जीवा य , सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥
- [१५३५] बायरा जे उ पज्जत्ता , दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोधव्वा , सण्हा सत्तविहा तहिं ॥
- [१५३६] किण्हा नीला य रुहिरा हालिद्वा सुकिक्ला तहा ।
पंडुपणग महिया, खरा छत्तीसई विहा ॥
- [१५३७] पुढवी य सक्करा वालुया य , उवले सिला य लोणूसे ।

अज्ञायण-३६

- अय तंब तउय सीसग , रूप्पसुवण्णे य वझरे य ॥
- [१५४८] हरियाले हिंगुलुए , मनोसिला सासगंजण-पवाले ।
अब्भपडल अभ्वालुय, बायरकाए मणिविहाणा ॥
- [१५३९] गोमेज्जए य रुयगे , अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगय मसारगल्ले, भुयमोयग इंदनीले य ॥
- [१५४०] चंदन गेरुय हंसगब्बे, पुलए सोगंधिए य बोधव्वे ।
चंदप्पह वेरुलिए, जलकंते सूरकंते य ॥
- [१५४१] एए खरपुढवीए , भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥
- [१५४२] सुहुमा य सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु , वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥
- [१५४३] संतइं पप्प अनाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च सा ईया, सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५४४] बावीस सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं , अंतोमुहुत्तं जह न्निया ॥
- [१५४५] असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जह न्निया ।
कायठिई पुढवीणं , तं कायं तु अमुंचओ ॥

- [१५४६] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ।
विजदंभि सए काए , पुढवी जीवाण अंतरं ॥
- [१५४७] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणदेसओ वावि , विहाणाइं सहस्सओ ॥
- [१५४८] दुविहा आउजीवा उ , सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥
- [१५४९] बायरा जे उ पज्जत्ता , पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्दोदए य उस्से य , हरतनू महिया हिमे ॥
- [१५५०] एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगं मि, लोगदेसे य बायरा ॥
- [१५५१] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५५२] सत्तेव सहस्साइं , वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई आऊणं , अंतोमुहुत्तं जह न्नियं ॥
- [१५५३] असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ।
कायठिई आऊणं , तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१५५४] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ।

अज्ञायण-३६

- विजदंभि सए का ए, आउजीवाण अंतरं ॥
- [१५५५] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्ससो ॥
- [१५५६] दुविहा वणस्सई जीवा , सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥
- [१५५७] बायरा जे उ पज्जत्ता , दुविहा ते वियाहिया ।
साहारण सरीरा य , पत्तेगा य तहेव य ॥
- [१५५८] पत्तेग-सरीराउ नेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य , लया वल्ली तणा तहा ॥
- [१५५९] वलया पव्वगा कुहणा , जलरुहा ओसही तहा ।
हरियकाया उ बोधव्वा , पत्तेगाइ वियाहिया ॥
- [१५६०] साहारण सरीराओ, नेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव , सिंगबेरे तहेव य ॥
- [१५६१] हिरिली सिरिली स स्सिरिली, जावई के य कंदली ।
पलंडु ल्हसुण कंदे य , कंदली य कुहुव्वए ॥
- [१५६२] लोहि णीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य ।
कणहे य वज्जकंदे य , कंदे सूरणए तहा ॥

- [१५६३] अस्सकण्णी य बोधवा , सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुंढी य हलिद्वा य , नेगहा एवमायओ ॥
- [१५६४] एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगं मि, लोगदेसे य बायरा ॥
- [१५६५] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५६६] दस चेव सहस्साइं , वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणस्सईणं आउं तु , अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ॥
- [१५६७] अनंतकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जह न्निया ।
कायठिईं पणगाणं , तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१५६८] असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ।
विजंडमि सए काए , पणगजीवाण अंतरं ॥
- [१५६९] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्ससो ॥
- [१५७०] इच्येए थावरा तिविहा , समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे , वुच्छामि अ नुपुव्वसो ॥
- [१५७१] तेऊ वाऊ य बोधवा , उराला य तसा तहा ।

अज्ञायण-३६

- इच्येए तसा तिविहा , तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- [१५७२] दुविहा तेऊ जीवा उ , सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥
- [१५७३] बायरा जे उ पज्जत्ता , नेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अग नी, अच्चिजाला तहेव य ॥
- [१५७४] उक्का विज्जू य बोधवा , नेगहा एवमेयओ ।
एगविहमनाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥
- [१५७५] सुहुमा सव्वलोगं मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु , तेसिं वुच्छं चउविहं ॥
- [१५७६] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५७७] तित्न्नेव अहोरत्ता , उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिईं तेऊणं , अंतोमुहुत्तं जह न्नियं ॥
- [१५७८] असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जह न्निया ।
कायठिईं तेऊणं , तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१५७९] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जह न्नयं ।
विजंडमि सए काए , तेऊ जीवाण अंतरं ॥

- [१५८०] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्सो ॥
- [१५८१] दुविहा वाउजीवा उ , सुहमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥
- [१५८२] बायरा जे उ पज्जत्ता , पंचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया मंडलिया , घनगुंजा सुद्ववाया य ॥
- [१५८३] संवट्टगवाए य , नेगहा एवमायओ ।
एगविहमनाणत्ता, सुहमा तत्थ वियाहिया ॥
- [१५८४] सुहमा सव्वलोगं मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु , तेसिं वुच्छं चउत्विहं ॥
- [१५८५] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्चं साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५८६] तिन्नेव सहस्साइं , वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊणं , अंतोमुहुत्तं जह न्निया ॥
- [१५८७] असंख्खालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई वाऊणं , तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१५८८] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।

अज्ञायण-३६

- विजंडमि सए काए , वाऊजीवाण अंतरं ॥
- [१५८९] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्सो ॥
- [१५९०] उराला य तसा जे उ , चउहा ते पकित्तिया ।
बेइंदिया-तेइंदिया, चउरो पंचिंदिया चेव ॥
- [१५९१] बेइंदिया उ जे जीवा , दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, तेसिं भे ए सुणेह मे ॥
- [१५९२] किमिणो सोमंगला चेव , अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया , संखा संखणगा तहा ॥
- [१५९३] पल्लोयाणुल्लया चेव , तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव , चंदना य तहेव य ॥
- [१५९४] इइ बेइंदिया एए , नेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे , न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- [१५९५] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्चं साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१५९६] वासाइं बारसा चेव , उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइंदिय आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

- [१५९७] संखिजजकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
बेइंदिय कायठिई , तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१५९८] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइंदिय-जीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥
- [१५९९] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्ससो ॥
- [१६००] तेइंदिया उ जे जीवा , दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, तेसिं भेरे सुणेह मे ॥
- [१६०१] कुंथुपिवीलिउद्दंसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारा कट्टहारा य , मालूगा पत्तहारगा ॥
- [१६०२] कप्पासड्डिंमिजाया, तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य , बोधव्वा इंदगाइया ॥
- [१६०३] इंदगोवसमाइया, नेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे , न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- [१६०४] संतइं पप्पणाइया , अप्पज्जवसिया वि य ।
ठिङं पडुच्च साइया , सप्पज्जवसिया वि य ॥
- [१६०५] एगूणपन्नहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।

अज्ञायण-३६

- तेइंदिय आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६०६] संखिजजकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
तेइंदिय-कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥
- [१६०७] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइंदिय-जीवाणं, अंतरं तु वियाहियं ॥
- [१६०८] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्ससो ॥
- [१६०९] चउरिंदिया उ जे जीवा , दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तं अ पज्जत्ता, तेसिं भेरे सुणेह मे ॥
- [१६१०] अंधिया पोतिया चेव , मुच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य , ढिंकुणे कुंकणे तहा ॥
- [१६११] कुक्कुडे सिंगिरीडी य , नंदावत्ते य विच्छुए ।
डोले भिंगिरीडी य , विरिली अच्छिवेहए ॥
- [१६१२] अच्छिरे माहले अच्छि , रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
ओहिंजलिया जलकारी य , नियया तंब बगाइया ॥
- [१६१३] इय चउरिंदिया एए , नेगहा एवमायओ ।
लोगस्स एगदेसंमि ते सव्वे परिकित्तिया ॥

- [१६१४] संतङ्ग पप्प णाइया , , अपज्जवसिया वि य |
ठिं पडुच्च साइया , , सपज्जवसिया वि य ||
- [१६१५] छच्चेव य मासा उ , , उक्कोसेण वियाहिया |
चउरिंदिय आउठिं , , अंतोमुहुत्तं जहन्निया ||
- [१६१६] संखिज्जकालमुक्कोसं, चउरिंदिय कायठिं , , अंतोमुहुत्तं जह न्नियं |
तं कायं तु अमुंचओ ||
- [१६१७] अनंतकालमुक्कोसं, विजढमिं सए काए , , अंतोमुहुत्तं जहन्नयं |
अंतरं च वियाहियं ||
- [१६१८] एएसिं वण्णओ चेव , , गंधओ रस-फासओ |
संठाणादेसओ वावि , , विहाणाइं सहस्ससो ||
- [१६१९] पंचिंदिया उ जे जीवा , , चउव्विहा ते वियाहिया |
ने रइया तिरिकखा य , , मनुया देवा य आहिया ||
- [१६२०] नेरइया सत्तविहा , , पुढवीसु सत्तसु भवे |
रयणाभा सक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ||
- [१६२१] पंकाभा धुमाभा , , तमा तमतमा तहा |
इइ नेरइया एए , , सत्तहा परिकित्तिया ||
- [१६२२] लोगस्स एगदेसं मि, ते सव्वे उ वियाहिया |

अज्ञायण-३६

- इत्तो कालविभागं तु , , तेसिं वुच्छं चउव्विहं ||
- [१६२३] संतङ्ग पप्पणाइया , , अपज्जवसिया वि य |
ठिं पडुच्च साइया , , सपज्जवसिया य ||
- [१६२४] सागरोवममें तु , , उक्कोसेण वियाहिया |
पढमाए जह न्नेणं, दसवाससहस्रिया ||
- [१६२५] तिन्नेव सागराऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
दोच्चाए जह न्नेणं, एगं तु सागरोवमं ||
- [१६२६] सत्तेव सागराऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
तइयाए जह न्नेणं, तिन्नेव सागरोवमा ||
- [१६२७] दस सागरोवमाऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
चउत्थीए जह न्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ||
- [१६२८] सत्तरस सागराऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
पंचमाए जह न्नेणं, दस चेव सागरोवमा ||
- [१६२९] बावीस सागराऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
छट्टीए जह न्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ||
- [१६३०] तेत्तीसं सागराऊ , , उक्कोसेण वियाहिया |
सत्तमाए, जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ||

- [१६३१] जा चेव य आउठिई , , नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसि कायथिई , , जहन्नुक्कोसिया भवे ॥
- [१६३२] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहृत्तं जहन्नयं ।
विजंडमि सए का ए, नेरइयाणं तु अंतरं ॥
- [१६३३] एएसि वण्णओ चेव , , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , , विहाणाइं सहस्सो ॥
- [१६३४] पंचिंदियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया ।
सम्मुच्छिम-तिरिक्खाओ, गब्भवककंतिया तहा ॥
- [१६३५] दुविहा वि ते भवे तिविहा , , जलयरा थलयरा तहा ।
ख हयरा य बोधव्वा , , तेसि भेए सुणेह मे ॥
- [१६३६] मच्छा य कच्छभा य , , गाहा य मगरा तहा ।
सुंसुमारा य बोधव्वा , , पंचहा जलयरा शहिया ॥
- [१६३७] लोएगदेसे ते सव्वे , , न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु , , तेसि वुच्छं चउविहं ॥
- [१६३८] संतङ्गं पप्पणाइया , , अपज्जवसिया वि य ।
ठिङं पडुच्च साइया , , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१६३९] एगा य पुव्वकोडी उ , , उक्कोसेण वियाहिया ।

अज्ञायण-३६

- आउठिई जलयराणं , , अंतोमुहृत्तं जहन्निया ॥
- [१६४०] पुव्वकोडिपुहृत्तं तु , , उक्कोसेण वियाहिया ।
कायथिई जलयराणं , , अंतोमुहृत्तं जहन्निया ॥
- [१६४१] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहृत्तं जहन्नयं ।
विजंडमि सए काए , , जलयराणं अंतरं ॥
- [१६४२] एएसि वण्णओ चेव , , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , , विहाणाइं सहस्सो ॥
- [१६४३] चउप्पया य परिसप्पा , , दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा , , ते मे कित्तयओ सुण ॥
- [१६४४] एगखुरा दुखुरा चेव , , गंडीपया सणप्पया ।
हयमाइ गोणमाइ , , गयमाइ सीहमाइणो ॥
- [१६४५] भुओरगपरिसप्पा य , , परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमा ई य , , एक्केक्का नेगहा भवे ॥
- [१६४६] लोएगदेसे ते सव्वे , , न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु , , तेसि वुच्छं चउविहं ॥
- [१६४७] संतङ्गं पप्पणाइया , , अपज्जवसिया वि य ।
ठिङं पडुच्च साइया , , सपज्जवसिया वि य ॥

- [१६४८] पलिओवमाइं ति न्नि उ , उक्कोसेण वियाहिया ।
आउड्हिँ थलयराणं , अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६४९] पलिओवमाइं ति न्नि उ , उक्कोसेण वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहृत्तेण अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६५०] कायठिँ थलयराणं , अंतरं तेसिमं भवे ।
अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- [१६५१] विजढंमि सए काए , थलयराणं तु अंतरं ।
चम्मे य लोमपक्खी य , तइया समुग्गपक्खिया ॥ ॥
- [१६५२] विययपक्खी य बोधव्वा , पक्खिणो य चउट्विहा ।
लोएगदेसे ते सव्वे , न सव्वत्थ वियाहिया ।
- [१६५३] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१६५४] पलिओवमस्स भागो , असंखेजजइमो भवे ।
आउठिँ खहयराणं , अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६५५] असंखभागो पलियस्स , उक्कोसेण उ साहिया ।
पुव्वकोडी पुहृत्तेण , अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६५६] कायठिँ खहयराणं , अंतरं तेसिमं भवे ।

अज्ञायण-३६

- अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- [१६५७] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्सओ ॥
- [१६५८] मनुया दुविह भेया उ , ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया , गब्भवक्कंतिया तहा ॥
- [१६५९] गब्भवक्कंतिया जे उ , तिविहा ते वियाहिया ।
कम्मअकम्मभूमा य , अंतरद्वीवया तहा ॥
- [१६६०] पन्नरस-तीसइविहा, भेया दुअड्वीस ई ।
संखा उ कमसो तेसिं , इइ एसा वियाहिया ॥
- [१६६१] संमुच्छिमाण एसेव , भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसं मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥
- [१६६२] संतइं पप्पणाइया , अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥
- [१६६३] पलिओवमाइं ति न्नि उ , उक्कोसेण वियाहिया ।
आउड्हिँ म नुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- [१६६४] पलिओवमाइं ति न्नि उ , उक्कोसेण वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहृत्ते णं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

- [१६६५] कायठिई मणुयाणं , अंतरं तेसिमं भवे ।
अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहृतं जहन्नयं ॥
- [१६६६] एएसिं वण्णओ चेव , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , विहाणाइं सहस्रसो ॥
- [१६६७] देवा चउव्विहा वुत्ता , ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज वाणमंतर , जोइस वेमाणिया तहा ॥
- [१६६८] दसहा उ भव नवासी, अद्वहा व नचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया , दुविहा वेमाणिया तहा ॥
- [१६६९] असुरा नाग-सुवण्णा, विज्जू अग्नी य वियाहिया ।
दीवोदहि-दिसा वाया , थणिया भव नवासिणो ॥
- [१६७०] पिसाय-भूया जक्खा य , रक्खसा कि न्नरा किंपुरिसा ।
महोरगा य गंधव्वा , अद्विहा वाणमंतरा ॥
- [१६७१] चंदा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
दि या विचारिणो चेव , पंचहा जोइसालया ॥
- [१६७२] वेमाणिया उ जे देवा , दुविहा ते पकित्तिया ।
कप्पोवगा य बोधव्वा कप्पाईया तहेव य ॥
- [१६७३] कप्पोवगा य बारसहा , सोहम्मीसाणगा तहा ।

अज्ञायण-३६

- सणंकुमार माहिंदा, बंभलोगा य लंतगा ॥
- [१६७४] महासुक्का सहस्सारा , आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव , इङ्ग कप्पोवगा सुरा ॥
- [१६७५] कप्पाईया उ जे देवा , दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जानुत्तरा चेव , गेविज्जा नवविहा तहिं ॥
- [१६७६] हेड्विमाहेड्विमा चेव , हेड्विमामज्जिमा तहा ।
हेड्विमाउवरिमा चेव , मज्जिमाहेड्विमा तहा ॥
- [१६७७] मज्जिमा मज्जिमा चेव , मज्जिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमा हेड्विमा चेव , उवरिमामज्जिमा तहा ॥
- [१६७८] उवरिमाउवरिमा चेव , इय गेविज्जगा सुरा ।
विजय वेजयंता य , जयंता अपराजिया ॥
- [१६७९] सव्वट्टसिद्धगा चेव , पंचहाऽनुत्तरा सुरा ।
इङ्ग वेमाणिया एए , नेगहा एवमायओ ॥
- [१६८०] लोगस्स एगदेसं मि, ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु , तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
- [१६८१] संतङ्गं पप्प झणाइया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिङ्गं प दुच्च साइया , सपज्जवसिया वि य ॥

- [१६८२] साहियं सागरं इकं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जह न्नेणं, दसवाससहस्र्स्या ॥
- [१६८३] पलिओवममेगं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
वंतराणं जह न्नेणं, दस वाससहस्र्स्या ॥
- [१६८४] पलिओवममेगमं तु , वासलक्खण साहियं ।
पलिओवमद्भागो, जोइसेसु जहन्निया ॥
- [१६८५] दो चेव सागराइं , उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहम्मंमि जह न्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥
- [१६८६] सागरा साहिया दु न्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणंमि जह न्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥
- [१६८७] सागराणि य सत्तेव , उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणंकुमारे जह न्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥
- [१६८८] साहिया सागरा सत्त , उक्कोसेण ठिई भवे ।
माहिंदंमि जह न्नेणं, साहिया दु न्नि सागरा ॥
- [१६८९] दस चेव सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
बंभलोए जह न्नेणं, सत्त उ सागरोवमा ॥
- [१६९०] चउद्दस सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।

अज्ञायण-३६

- लंतगंमि जह न्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥
- [१६९१] सत्तरस सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं, चउद्दस सागरोवमा ॥
- [१६९२] अद्वारस सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारंमि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥
- [१६९३] सागरा अउणवीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
आणयंमि जह न्नेणं, अद्वारस सागरोवमा ॥
- [१६९४] वीसं तु सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयंमि जह न्नेणं, सागरा अउणवीसई ॥
- [१६९५] सागरा इक्कवीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणंमि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥
- [१६९६] बावीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयंमि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई ॥
- [१६९७] तेवीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमंमि जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥
- [१६९८] चउवीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
बिइयंमि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥

- [१६९९] पणवीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयंमि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥
- [१७००] छव्वीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थंमि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥
- [१७०१] सागरा सत्तवीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमंमि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥
- [१७०२] सागरा अद्वीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
छद्मंमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥
- [१७०३] सागरा अउणतीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमंमि जहन्नेणं, सागरा अद्वीसई ॥
- [१७०४] तीसं तु सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
अद्मंमि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥
- [१७०५] सागरा इक्कतीसं तु , उक्कोसेण ठिई भवे ।
न वमंमि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥
- [१७०६] तेत्तीसं सागराइं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुं पि विजयाईसु , जहन्नेणेक्कतीसई ॥
- [१७०७] अजहन्नमनुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।

अजङ्गयण-३६

- महाविमाणे सव्वटे , ठिई एसा वियाहिया ॥
- [१७०८] जा चेव उ आउठिई , , देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई , , जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥
- [१७०९] अनंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुतं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए , , देवाणं हुजं अंतरं ॥
- [१७१०] एएसिं वण्णओ चेव , , गंधओ रस-फासओ ।
संठाणादेसओ वावि , , विहाणाइं सहस्ससो ॥
- [१७११] संसारत्था य सिद्धा य , , इइ जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेव रूवी य , , अजीवा दुविहा वि य ॥
- [१७१२] इय जीवमजीवे य , , सोच्चा सद्विक्तुण य ।
सव्वनयाणं अनु मए, रमेज्ज संजमे मु नी ॥
- [१७१३] तओ बहूणि वासाणि , , सामण्णमनुपालिया ।
इमेणं कम्मजोगेण , , अप्पाणं संलिहे मु नी ॥
- [१७१४] बारसेव उ वासाइं , , संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छरं मजिङ्गमिया , , छम्मासा य जहन्निया ॥
- [१७१५] पठमे वासचउकं मि, विगइं नि ज्जूहणं करे ।
बिइए वासचउकं मि, विचितं तु तवं चरे ॥

- [१७१६] एगंतरमायामं, कटु संवच्छरे दुवे ।
तओ संचरद्धं तु , नाइविगिंडं तवं चरे ॥
- [१७१७] तओ संवच्छरद्धं तु , विगिंडं तु तवं चरे ।
परिमियं चेव आयामं , तंमि संवच्छरे करे ॥
- [१७१८] कोडीसहियमायामं, कटु संवच्छरे मु नी ।
मासद्धमासिएणं तु , आहारेण तवं चरे ॥
- [१७१९] कंदप्पमाभिओगं, किविसियं मोहमासुरतं च ।
एयाओ दुर्गईओ , मरणंमि विराहिया हौंति ॥
- [१७२०] मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा हु हिंस गा ।
इय जे मरंति जीवा , तेसि पुण दुल्लहा बोही ॥
- [१७२१] सम्मदंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरंति जीवा , तेसि सुल्लहा भवे बोही ॥
- [१७२२] मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरंति जीवा , तेसि पुण दुल्लहा बोही ॥
- [१७२३] जिनवयणे अ नुरत्ता, जिनवयणं जे करेति भावेण ।
अमला असंकिलिड्वा , ते हौंति-परित्त-संसारी ॥
- [१७२४] बालमरणाणि बहुसो , अकाममरणाणि चेव य बहु याणि ।

अज्ञायण-३६

- मरिहंति ते वराया , जिनवयणं जे न जाणंति ॥
- [१७२५] बहुआगम-विण्णाणा, समाहित्प्पायगा य गुणगाही ।
एणं कारणेण , अरिहा आलोयणं सोउं ॥
- [१७२६] कंदप्पकुकुयाइं तहा सीलसहाव हासविगहाहिं ।
विम्हावेंतो य परं , कंदप्पं भाव नं कुणइ ॥
- [१७२७] मंता जोगं काउं , भूक्म्मं च जे पउंजंति ।
सायरस इडिहेउं, अभिओगं भाव नं कुणइ ॥
- [१७२८] नाणस्स केवलीण , धम्मायरियस्स संघसाहुण ।
माई अवण्णवाई , किब्बिसियं भाव नं कुणइ ॥
- [१७२९] अनुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी ।
एहिं कारणेहिं , आसुरियं भाव नं कुणइ ॥
- [१७३०] सत्थगहणं विसभक्खणं च , जलणं च जलपवेसो य ।
अनायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि बंधंति ॥
- [१७३१] इइ पाउकरे बुद्धे , नायए परि निव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरजङ्गाए , भवसिद्धिय संमए ॥ त्ति बेमि

० छत्तीसइमं अज्ञायणं सम्मतं ०

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधिताः सम्पादिताश्च “उत्तरज्ञायणं मूलसुत्तं” सम्मतं

४३

उत्तरज्ञायणं-चउत्थं मूलसुत्तं सम्मतं